मासिक भोजपुरी ई-पत्रिका 2015 मार्च , अंक 2

आखर

एगो डेग भोजपुरी साहित्य खाति

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

3 दिसम्बर 1884 - 28 फ़रवरी 1963

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस

फगुआ विशेषांक

प्रकाशन / संपादन मंडल :
संजय सिंह , सिवान
देवेंद्र नाथ तिवारी , वर्धा
शशि रंजन मिश्र , नई दिल्ली
नबीन कुमार , दुबई

तकनीकी -एडिटिंग, कम्पोजिंग
अश्विनी रूद्र , न्यू यॉर्क
अनिमेष कुमार वर्मा , अबू धाबी
छाया चित्र सहयोग
स्वयम्बरा बक्सी पी. राज सिंह

आखर पता
ग्राम पोस्ट- पंजवार (पोखरी)
सिवान , बिहार 841509
क़ानूनी सलाहकार
ललितेश्वर नाथ तिवारी , पटना

आखर

वर्ष: 2015 अंक 2 मार्च। **ई - पत्रिका**
सब पद अवैतनिक बा .

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

डा॰ शैलजा श्रीवास्तव

आजी - सरनामी भोजपुरी गीत

राज मोहन

चित्रपट के होली

चंदन सिंह

बतकूचन

सौरभ पाण्डेय

फगुआ-एगो पारंपरिक उत्सव

उदय नारायण सिंह

रुक्मिणी सीता आ मेहरारून के दुख

शचि मिश्रा

सम्मान समारोह आ भुखाइल मन

तंग इनायतपुरी

मेहरारून खातिर गांव

मनोरमा सिंह

परामर्श मंडल
प्रभाष मिश्र , नासिक
अतुल कुमार राय , बनारस
धनंजय तिवारी , मुंबई
चंदन सिंह , पटना
राजेश सिंह , ओमान
सुधीर पाण्डेय , दुबई
पंडित राजीव , फ़रीदाबाद
अजित तिवारी , दिल्ली
बृज किशोर तिवारी , सोनभद्र

प्रकाशित रचना लेखक के आपन ह आ ई जरुरी नइखे की संपादक के विचार लेखक के विचार से मिले ।

संपर्क : आपन मौलिक रचना , लेख ,कविता , फोटो , विचार आखर के ईमेल-आईडी aakharbhojpuri@gmail.com पे भेज सकेनीं। सुविधा खातिर रचना हिंदी यूनिकोड में ही भेजीं।

मुख्य पृष्ठ छाया/आवरण : अनिमेष कुमार वर्मा , अश्विनी रूद्र

www.aakhar.com | facebook/Aakhar | Twitter: @aakharbhojpuri

aakharbhojpuri@gmail.com

आखर के रंग

आपन बात	:	आखर जमात	4
राजेन्द्र बाबू के पाती	:	निराला (प्रेषक)	5
डा० राजेन्द्र प्रसाद	:	डा० शैलजा श्रीवास्तव	7
जस भीतर तस बाहरो	:	संजय सिंह	8
औरत, देंहि के भूगोल से परे	:	डा. सोनी पांडे	10
महिला दिवस	:	डा० रीता सिन्हा	11
स्वर्णिम भारत के उज्ज्वल पहचान	:	ज्योत्सना प्रसाद	12
मेहरारुन खातिर गांव	:	मनोरमा	13
रुक्मिणी , सीता आ मेहरारुन के दुख	:	शचि मिश्रा	15
दोहा फागुन के	:	सौरभ पांडे	17
हम राउर होली हईं	:	निराला	18
पिछला फागुन खेल गईलन	:	निरुपमा सिन्हा	19
फगुआ- एगो पारंपरिक उत्सव	:	उदय नारायण सिंह	20
फगुआ के बहाने मन आ शरीर के साधना (बतकूचन)	:	शशी रंजन मिसिर	22
होरी गीत (धुन-पारंपरिक)	:	जौहर शाफियाबादी	24
फगुआ : भोजपुरिया लोक संस्कृति के महापर्व	:	देवेंद्र नाथ तिवारी	25
चित्रपट के होली	:	चंदन सिंह	27
नकभेसर कागा ले भागा	:	अतुल कुमार राय	30
फगुआ सभे मनावेला	:	मालती त्रिपाठी	31
फागून आ गइल का ? (भाग 1 आ भाग 2)	:	प्रमोद कुमार तिवारी	32
जिम्मेवारी (लघुकथा)	:	पियूष द्विवेदी भारतीय	34
सम्मान समारोह आ भुखाइल मन	:	तंग इनायतपुरी	35
भोजपुरी भाखा आ साहित्य के वर्तमान स्थिति	:	गुलरेज शहजाद	37
हथेली में समय (भाग २)	:	डा० अनिल प्रसाद	39
बतकुचन	:	सौरभ पांडे	42
दू गो भोजपुरी लघुकथा	:	गणेश जी बागी	44
कनिया माई	:	अमित झा	45
माई बीया दे गाछ उगाईब	:	सरोज सिंह	49
फिल्म , भाषा आ कुछ बात	:	नितिन चन्द्रा	51
रेंगनी	:	श्वेताभ रंजन	54
कैथी लिपि	:	पी. राज सिंह	55
कबीर, भोजपुरी एवं चंपारण	:	संतोष पटेल	58
रंग रंग के इयाद	:	तरुण कैलाश	63
मोछी के लड़ाई	:	डा. उमेशजी ओझा	65
आहि रे बालम चिरई : (भाग - 1)	:	असित कुमार मिश्र	68
चंपारण प्रकृति के एगो सुन्दर उपहार	:	प्रभंजन कुमार मिश्र	71
दिल, जब बच्चा था जी (भाग-2)	:	बृज किशोर तिवारी	74
कह , कवन पुरूख संग यारी	:	निलय उपाध्याय	74
का कहीं अब त कहलो ना जाए	:	डा ० एस. के. सिंह	75
आ गईल बसंत	:	नुरैन अंसारी	76
कह , कवन पुरूख संग यारी	:	निलय उपाध्याय	77
इयार हो	:	अशोक शेरपुरी	78
आजी (सरनामी भोजपुरी मे लिखाईल गीत)	:	राज मोहन	79
भिखारी	:	मुन्ना पांडे (प्रेषक)	80
जिनगी	:	अजीत कुमार तिवारी	81
राउर बात	:	आखर के ओर से	82
निहोरा	:	आखर के ओर से	83

www.bhojpurisahityangan.com

आपन बात

आखर के पहिला अंक रउआ सभे के पसंद आईल, हमनी के आभारी बानी जा । जवना आत्मीयता से भोजपुरिया समाज एकर स्वागत कइलस, उ विवेचना के बस के नइखे । हमनी के उत्साह आसमान पर बा । आशीर्वाद खातिर उठल हाथ हमेशा आखर के माथा पर बनल रहे, एकरा खातिर सचेत बानी जा । अपेक्षा बहुत बा । कोशिश रही कि खरा उतरीं जा ।

फरवरी-मार्च के महीना हमनी खातिर बड़ा महत्व राखेला । बसंती बयार केकरा पर असर ना करे ? सरसों के फूल पियराते बुढ़ - जवान, मरद – मेहरारू, लड़िका – सेयान सभे एकही रंग में रँगा जाला । प्रकृति आनंद के उत्सव में पुलकित होके नाचे लागेले । काहें ना नाचे ? कान्हा के आवे के आस में गोपियन के लोर से करिया हो चुकल जमुना के पानी एही महीना में हरियर होखे लागेला । अपना प्रियतम के इंतजार में भटकत गोपियन के आत्मा जागृत होके कन्हैया साथे रास रचावे खातिर व्यग्र हो जाली सन । कान्हा आवेलें । रास रचावेलें । रंग लगावेलें । गुलाल उड़ावेलें । जब विदा होखे के बेरा आवेला त गोपी लो हँस के विदा देला आ अगिला साल के निमंत्रण भी-

खींचि पिताम्बर कम्मर तैं सु विदा दई मीड़ि कपोलनि रोरी,
नैन नचाय कही मुस्काय, लला फिरि आइयो खेलन होरी ।

हँस के विदा दिहल आसान ना होला, बाकिर फागुन में लोर बहे त कइसे ? प्रकृति के खिलाफ जाई । ई महीना उल्लास आ उमंग के हऽ । जइसे जइसे फागुन मास सरके लागेला, गोपी लो विरह के वेदना में सिसके लागेला । जमुना के पानी फेरु करिया हो जाला निसदिन बहत लोर से । जइसहीं सरसों के फूल पियराये लागेला, फेर से उहे उल्लास उहे उमंग । उहे जवानी उहे हुड़दंग ।

8 मार्च के संसार भर में महिला दिवस मनावल जाला । नर-नारी में भेदभाव मत होखे, नारी के सम्मान मिलो, घरे आ बहरी के उत्पीड़न से सुरक्षा मिलो, अवसर के समानता सुनिश्चित कइल जाव, इहे सब ध्यान में राख के। हमनी के समाज मेहरारुन के लेके बड़ा दुविधा में रहल बा । अलग अलग समय में मेहरारुन के दिसाईं समाज के सोच में भी परिवर्तन भइल बा । एगो दौर रहे जब कहात रहे-

यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमंते तत्र देवताः !

एगो उहो दौर रहे, जब कहाईल-

अबला जीवन हाय तुम्हारी यहीं कहानी,
आँचल में है दूध आँखों में पानी !

एगो इहो दौर बा, जब कहात बा –

जनतीं जे जारल जइबू आग में दहेज के,
पाप नाहीं करतीं ए बेटी ससुरा में भेज के ।

एमें कवनो दू राय नइखे कि हमनी के समाज नारी शक्ति के

हमनी के समाज मेहरारुन के लेके बड़ा दुविधा में रहल बा । अलग अलग समय में मेहरारुन के दिसाई समाज के सोच में भी परिवर्तन भइल बा ।

पुजेला । बाकिर एगो पहलू इहो बा कि सावित्री, सीता, आ अनुसुईया के आदर्श सामने राख के सत्यवान, राम आ अत्रि बनल भुला जाला । मेहरारु परिवार के रथ के एगो महत्वपूर्ण पहिया हयी सन । रथ के चले खातिर दुनू पहियन के बीच तालमेल जरुरी बा । भोजपुरिया समाज भी ई बात धीरे धीरे समझ रहल बा ।

देशरत्न डॉ. राजेंद्र प्रसाद के नाम सुनते हमनी के दिमाग में जवन छवि बनेला ओमें लउकेला सादगी, विनम्रता आ विद्वता के साक्षात संगम । भारत माता के पुकार पर आपन सर्वस्व देश के नाम पर लुटा देबे वाला एह बेटा के देश सम्मान दिहलस । शीर्ष पद पर बइठवलस । इतिहास साक्षी बा कि सादगी के मूरत राजेंद्र बाबू के राष्ट्रपति बनला से भारतीय गणतंत्र दुनिया के सोझा एगो नया कीर्तिमान खड़ा क दिहलस। विश्व के सबसे बड़हन लोकतंत्र के सबसे

बड़ व्यक्ति के लगे ना कवनो मद, ना कवनो मोह, ना कवनो अहंकार । दुनिया भर के राजनीतिक चिंतक लोग खातिर ई कवनो रहस्य से कम ना रहे । अभी ले प्रतिपादित सारा राजनीतिक सिद्धांत एकही बात कहत रहली सन- सत्ता आदमी के ओकरा मूल प्रवृति (काम, क्रोध, मद, मोह, लोभ) के ओर धकेलेला । ई मिथक टूटल आ नया इतिहास रचल गइल । 28 फरवरी 1963 के ई महामानव हमनी के बीच से स्वर्ग सिधार गइल । आज जब राजनीतिक शुचिता तार-तार हो रहल बा , संवैधानिक पद पर बइठल लोग कटघरा में बा, आदर्श रुप में

"विश्व के सबसे बड़हन लोकतंत्र के सबसे बड़ व्यक्ति के लगे ना कवनो मद, ना कवनो मोह, ना कवनो अहंकार। दुनिया भर के राजनीतिक चिंतक लोग खातिर ई कवनो रहस्य से कम ना रहे।"

राजेंद्र बाबू के प्रासंगिकता आउर बढ़ गइल बा ।

आखर के दुसरका अंक रउआ सभे के सोझा बा । सुझाव आ प्रतिक्रिया के उम्मीद लगवले

- आखर

राजेन्द्र बाबू के पाती

ए ह चिट्ठी के राजेंदर बाबू कलकत्ता मे रहत आपन पत्नी राजवंशी देवी जी के नावे लिखले रहनी । एह चिट्ठी के कई गो मायने बा । पहिल बात ई कि राजेंदर बाबू जब घर में चिटठी लिखत रहलन तो भोजपुरी में ही लिखत रहलन । आपन पत्नी के लिखत रहलन तो कोना में "अंगना के चिट्ठी" लिख देत रहलन । अपना बड़ भाई से लेहाज करत रहलन । अउर ओह से बड़ बात ई बा कि ई चिट्ठी बता रहल बिया कि राजेंदर बाबू के सोच का रहे। जब उ देश सेवा मे उतरे के सोचलन तो आपन पत्नी के भी सलाह लेले रहले । उनकर राय जानल चहले । ई उनकर उदारता आउर बड़ सोच के देखा रहल बा...

आसिरबाद

आज कल हमनी का अच्छी तरह से बानीं । उहां के खैर सलाह चाहीं, जे खुसी रहे । आगे एह तरह के हाल ना मिलल, एह से तबिअत अंदेसा में बाटे । आगे पहिले-पहिल कुछ अपना मन के हाल खुल कर के लिखे के चाहत बानी । चाहीं की तु मन दे के पढि के एह पर खूब विचार करिह अउर हमरा पास जवाब लिखिह । सब केहु जानेला कि हम बहुत पढनी, बहुत नाम भइल, एह से हम बहुत रोपेया कमाईब, से केहु के इहे उम्मेद रहेला कि हमार पढल-लिखल, सब रोपेया कमावे वास्ते बाटे । तोहार का मन हवे से लिखिह । तू हमरा के सिरिफ रोपेया कमावे वास्ते चाहेलू कि कउनो काम वास्ते ? लडकपन से हमार मन रोपेया कमाये से फिर गइल बाटे अउर जब हमार पढे में नाम भइल त कबहीं इ उमेद ना कइलीं कि इ सब रोपेया कमावे वास्ते होत बाटे। एही से हम अब अइसन बात तोहरा से पूछत बानी कि जे हम रोपेया ना कमाईं त तूं गरीबी से हमरा साथ गुजर कर लेबू कि ना ? हमार तोहार संबंध जनम भर के खातिर बाटे। जे हम रोपेया कमाईं तबो तू हमरे साथ रहबू ? ना कमाई तब्बो हमरे साथे रहबू । बाकि हमरा इ पूछे के हवे कि जो ना हम रोपेया कमाईं त तोहरा कवनो तरह के तकलीफ होई कि नाही । हमार तबियत रोपेया कमाये से फिर गइल बाटे । हम रोपेया कमाये के नइखी चाहत । तोहरा से एह बात के पूछत बानीं कि इ बात तोहरा कईसन लागी । जो हम ना कमाइब त हमरा साथ गरीब लेखा रहेके होई ।

पाती

गरीबी खाना, गरीबी पहिनना, गरीब मन कर के रहे के होई । हम अपना मन में सोचले बानीं कि हमरा कउनो तकलीफ ना होई बाकि तोहरा मन के हाल जान लेबे के चाहीं । हमरा पूरा बिश्वास बाटे कि हमरा स्त्री सीता जी लेखा जइसे हम रहब ओइसहीं रहिहें । दूख में, सुख में हमरा साथे रहला के आपन धरम आपन सुख आपन खुसी जनिह । एह दुनिया में रोपेया के लालच से लोग मरल जात बाटै, जे गरीब बाटे सेहू मरत बाटे, जे धनी बाटै सेहू मरत बाटै ।फिर काहे के तकलीफ उठावे । जेकरा सबुर बाटे, सेही सुख से दिन काटत बाटे । सुख दुख केहू के रोपेया कमइले आ ना कमइले ना होला । करम में जे लिखल होला सेही सब होला। ।अब हम लिखे के चाहत बानी कि हम जे रोपेया ना कमाईब त का करब । पहिले त हम वकालत करेके खेयाल छोड देब, इम्तेहान ना देब, वकालत ना करब । हम देस के काम करे में कुल समय लगाइब । देस वास्ते रहना, देस वास्ते सोचना, देस वास्ते काम कइल, इहे हमार काम रहि । अपना वास्ते ना सोचना, ना काम करना, पूरा साधू अइसन रहे के । तोहरा से चाहे महतारी से चाहे अउर केहू से हम फरक ना रहब । घरहीं रहब बाकिर रोपेया ना कमाईब । संन्यासी ना होखब। बाकि घरे रहि के जे तरह से हो सकी, देस के सेवा करब । हम थोडे दिन में घरे आइब त सब बात कहब । इ चिठी अउर केहू से मत देखइह। बाकि बिचार के जवाब जहां तक जल्दी हो सके, लिखिह । हम जवाब वास्ते बहुत फिकिर में रहब । अधिक एह समय ना लिखब।

राजेंद्र

आगे इ चीठी दस बारह दिन से लिखले रहली हवें। बाकि भेजत ना रहली हवें। आज भेज देत बानी। हम जलदिये घरे आइब। हो सके तो जवाब लिखिह। नाही त अइले पर बात होई। चिठी केहू से देखइह मत।

राजेंद्र

राजेंद्र प्रसाद

18 मिरजापुर स्ट्रीट

कलकता

(ई पाती हमनी किंहा , निराला जी भेजले बानीं)

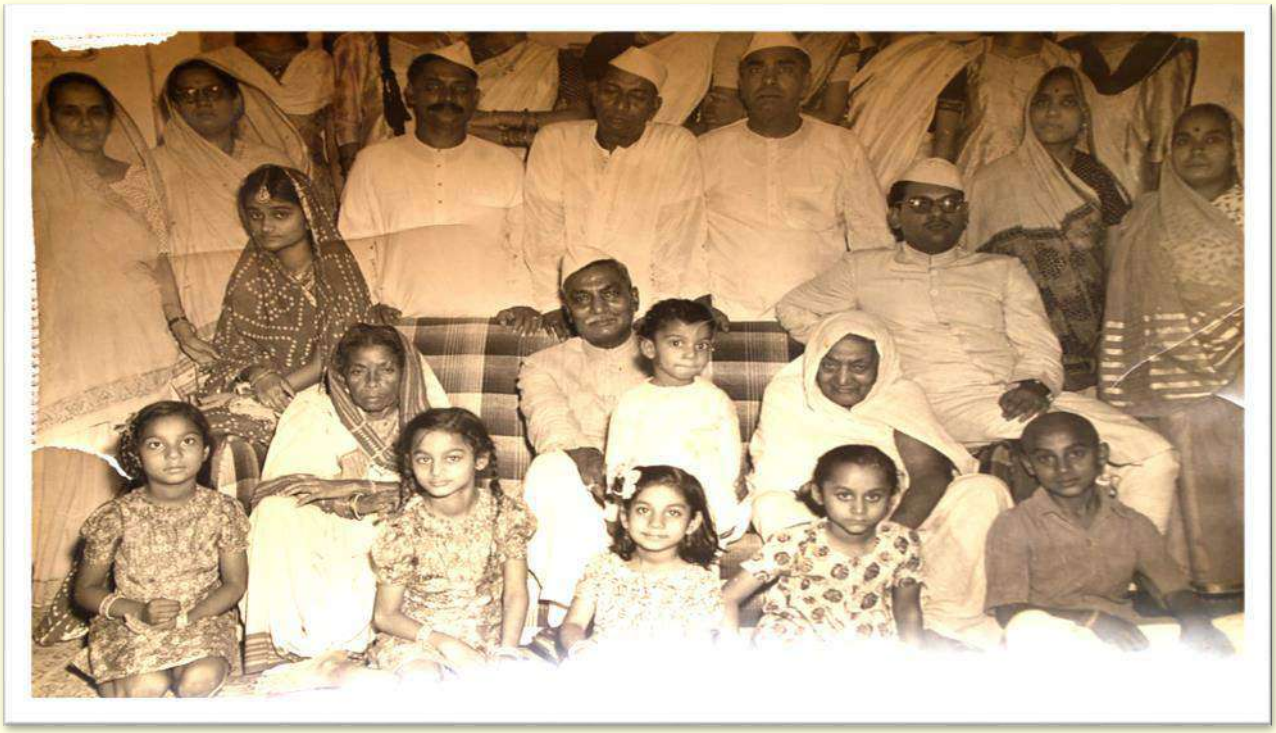

www.bhojpurisahityangan.com

डा० राजेन्द्र प्रसाद

खादी के अमल धवल गंगा,
जेकरा तन पर सकुचात रहे।
जमुना जल श्यामक मुखड़ा से,
सावन के घन सरमात रहे।
गंगा-जमुना के जल में मिश्रित,
सौम्य भाव के त्रिवेणी।
जवना विभूति पर दुनिया के,
जन-जन के मन ललचात रहे।
जीरादेई धन्य गाँव अमर,
नयका सिवान जनपद अन्दर।
जेकर सपूत चमकत भारत के,
गगनांगण में नवज्योति प्रखर।
भारत के पहिला राष्ट्रपति,
हे गांधीवादी सेनानी।
त्याग-तपस्या के प्रतिमूर्ति,
हे जन-जन के अन्तःवाणीं।
काल कोटि कुटिल चाल के,
पी गइनी बनके शंकर।
कोटि प्रणाम कर लीं स्वीकार,
हे नवयुग के बुद्ध-तीर्थंकर।

डा० शैलजा श्रीवास्तव

(19 अक्टूबर 1927- 31 दिसम्बर 1989)

जन्म पिलुई, दाउदपुर, सारण (बिहार) में एक प्रबुद्ध एवं प्रतिष्ठित परिवार में भईल रहे । शैलजा जी के प्रारंभिक और माध्यमिक शिक्षा क्रमशः पिलुई और सिवान में भईल । अरबी-फारसी के विद्वान पिता स्वर्गीय श्याम किशोर श्रीवास्तव (एम ए, एल. एल. बी.) उहांके उच्च शिक्षा खातिर काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, बनारस में नामांकन करवनी । शैलजा जी संस्कृत में स्नातक और साहित्याचार्य के परीक्षा उतीर्ण कर स्वर्ण पदक प्राप्त कईनी । बाद में बिहार विश्वबिद्यालय, मुजफ्फरपुर से संस्कृत में एम. ए. कईनी । शिक्षा विभाग, बिहार सरकार में प्राचार्या, महिला प्रा० शि० शिक्षा महाविद्यालय, सिवान के साथ साथ विद्यालय निरीक्षका, सारण-सह-सीवान एवं गोपालगंज के पद पर कार्यरत 1985 में सेवा निवृत भईनी। उहांके दू गो महत्वपूर्ण रचना भोजपुरी में प्रकाशित भईल बा: “चिंतन -कुसुम” (1981) आ “कादम्बरी “ (२००३) जवना पर कई गो पुरस्कार भी मिल चुकल बा। आ भोजपुरी –हिंदी – उर्दू कविता संकलन ‘श्रद्धा-सुमन’ जल्दी ही प्रकाशित होखे वाला बा। उहांके अपना जीवन काल में अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलनन में बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभवनी। शैलजा जी के भाषा शैली में शब्द चयन पाठक के सहज ही आकर्षित करेला। विदुषी और कुशल प्रशासक, शैलजा जी बहुमुखी प्रतिभासंपन्न होखे के साथ-साथ एक सहज एवं सरल व्यक्तित्व के धनी आउर स्नेह आ सौहार्द्र के प्रतिमूर्ति रहनी।

संजय सिंह

सिवान , बिहार के रहे वाला संजय सिंह जी ,भोजपुरी भाषा संस्कृति आ साहित्य खाति निरंतर लागल अपना पंजवार गांव से ले के अभिव्यक्ति के हर माध्यम से भोजपुरी खाति पुरजोर आवाज लगवले बानी । संजय जी एह घरी सिवान मे ही बानी ।

राजेंद्र बाबू जवना भूमिका में रहनी ओह भूमिका के आदर्श प्रस्तुत कइनी। एगो विद्यार्थी खातिर एह ले बड़का उपलब्धि का हो सकेला कि ओकर परीक्षक परीक्षा के कॉपी पर लिखे खातिर विवश हो जाव कि "परीक्षार्थी परीक्षक ले बढ़िया बा।"

जस भीतर तस बाहरो !

भारतीय संस्कृति में ईश्वर के अवतार लेबे के परम्परा रहल बा। अईसन मान्यता बा कि जब जब धरती पर अस्थिरता फइलेला तब तब ईश्वर कवनो महापुरुष के रुप में पृथ्वी पर अवतरित होखेलन। 3 दिसम्बर 1884 के सीवान जिला के जिरादेई गाँव में कवनो साधारण बालक के जन्म ना भईल रहे बलुक माँ भारती के गुलामी के सिकंजा से मुक्त करावे खातिर, समाज में सादगी आ संजीदगी के प्राण फूँके खातिर एगो दैवी शक्ति के अवतार भईल रहे।

जब जब धरती पर कवनो संकट, अकस्मात ही आवेला !
तब नीलगगन के चमकत तारा, महामनुज बन आवेला !!

देश गुलाम रहे। 1857 के क्रांति असफल हो गईल रहे। अंग्रेजन के शोषण से समाज सदमा में रहे । बाकिर दमन के बुनियाद पर एगो ज्वारभाटा भी सुलगत रहे। क्रांतिकारी नौजवानन के आक्रोश साफ साफ देखल जा सकत रहे। आजाद होखे के तड़प त रहे लेकिन सीमित संसाधन हमेशा राह के रोड़ा बन गईल । क्रांति के मशाल लेके चलेवाला हाथन के जला दिहल गईल । क्रांतिकारी लोगन के ब्रिटीश सरकार आतंकवादी बना दिहलस। निर्ममता के नया इतिहास लिखाईल, लेकिन चिंगारी शोला के रुप ध लेले रहे। एही परिवेश में राजेंद्र बाबू तरुणाई के ओर कदम बढ़वले रहनी। उँहा के दिव्य दृष्टि साफ साफ देख सकत रहे कि अंग्रेजन के हथियार आ आतंक के बल पर हरावल नईखे जा सकत। ओकनी के लगे अत्याधुनिक हथियार भी रहे आ प्रयोग करे के वैधानिक सत्ता भी। बस एगो उपाय रहे – शांतिपूर्ण विरोध। राजेंद्र बाबू जीवन भर एही राह पर चलनी।

हम लक्ष्य-मार्ग पर चल पड़नी, दुःख दर्द के आंधी पानी में,
देखनी चुभल एगो कील रहे , माई के चुनरिया धानी में।
माई के आह पर चुप्पी सधले, टुकटुक देखत लोग रहे ,
अभियो नैनन से ना खून बहल, त लागो आग जवानी में ॥

कमें उमिर में अपना प्रतिभा के डंका बजा देबे वाला राजेंद्र बाबू 1905 के स्वदेशी आंदोलन में स्वतंत्रता संघर्ष के मंच पर उतरनी। विदेशी वस्त्रन के होली जलावल गईल। भारत में राष्ट्रीयता के उदय के पटकथा लिखा गईल रहे। एने राजेंद्र बाबू के हृदय में भी हिंदुस्तान के आजादी के सपना रच बस गईल रहे। गोपाल कृष्ण गोखले से प्रभावित होके सब कुछ छोड़ के देश सेवा में खुद के झोंक देबे के विचार आईल। बड़ भाई महेंद्र प्रसाद जी के लगे चिट्ठी लिखनी। जब दुनू भाई के मुलाकात भईल त भावना के बहत नीर तले ई विचार कुछ समय खातिर दबल जरूर, बाकिर जान शेष रहे। अवसर मिलते उ विचार फेरु जागृत भईल आ अपना प्रभाव से समूचा भारतवर्ष के प्रभावित कईलस।

1916 में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी से राजेंद्र बाबू के मुलाकात कवनो सामान्य घटना ना रहे। आरुणी के धौम्य से आ नरेंद्र के रामकृष्ण परमहंस से मुलाकात के बाद जवन परिवर्तन आरुणी आ नरेंद्र के जीवन में भईल कुछ अइसने परिवर्तन के शुरुआत राजेंद्र बाबू के जीवन में भी दिखे लागल। जइसे धौम्य से मिल के आरुणी संसार भर के शिष्यन के आदर्श हो गईलन, परमहंस से मिलके नरेंद्र विवेकानंद हो गईलन, वइसहीं राजेंद्र बाबू गांधी जी से मुलाकात के बाद देशरत्न हो गईलन। राजेंद्र बाबू पर राष्ट्रपिता के विश्वास के आलम ई रहे कि उँहा के खुलेआम कहीं – " अगर देश में केहू अइसन बा जे हमरा कहला से जहर के प्याला भी पी जाई त उ अकेले राजेंद्र बाड़ना।" इतिहास साक्षी बा कि राजेंद्र बाबू जीवन भर गांधी जी के देखावल राह पर चलनी।

सत्य ,अहिंसा, अपरिग्रह आ अस्तेय रहे हथियार।
त्याग, समर्पण के मूल्यन से देश भईल उजियार॥

राजेंद्र बाबू जवना भूमिका में रहनी ओह भूमिका के आदर्श प्रस्तुत कइनी। एगो विद्यार्थी खातिर एह ले बड़का उपलब्धि का हो सकेला कि ओकर परीक्षक परीक्षा के कॉपी पर लिखे खातिर विवश हो जाव कि "परीक्षार्थी परीक्षक ले बढ़िया बा।" न्याय के मंदिर में करिया कोट पहिन के वकालत करेवाला व्यक्ति खातिर एह ले उँचा आदर्श का हो सकेला कि " वकालत के पेशा पइसा कमाये खातिर ना हऽ बलुक पीड़ित मानवता के सेवा खातिर हऽ।" एगो अध्यापक खातिर एह ले बड़का उपमा का हो सकेला कि "अध्यापक राष्ट्रीयता के वाहक होला।" गणतंत्र भारत के पहिलका राष्ट्रपति के रुप में राष्ट्राध्यक्ष के पद के जवन गरिमा आ उँचाई प्रदान कईनी उ आज भी प्रेरणा के स्रोत बा।

आज के भोजपुरिया समाज अपना मातृभाषा के लेके बड़ा दुविधा में बा। भोजपुरी से जे जेतना दूर भईल जाता उ ओतने सभ्य कहाता। कुलीन वर्ग भोजपुरीया संस्कृति के अवशेष मात्र से भी परहेज करता। ई सब देख के ओह महामानव के ओर ध्यान गईल स्वाभाविक बा। **विद्यार्थी जीवन से लेके राष्ट्रपति भवन तक राजेंद्र बाबू मातृभाषा के आँचर ना छोड़नी। दिन प्रतिदिन साथे रहेवाला गैर भोजपुरी भाषा भाषी भी भोजपुरी सिख लिहलन, अइसन रहे उँहा के व्यक्तित्व।** एक बेर के बात हऽ। राष्ट्रपति बनला के बाद राष्ट्रपति भवन में एगो आयोजन भईल। गाँव से भी कुछ लोग आईल रहे। आयोजन के बाद सभे दरी पर बइठल। भोजन परोसाईल। सारा व्यंजन परोसा गइला के बादो केहू कवर उठावत ना रहे। अधिकारी लो हार थाक के राजेंद्र बाबू के बोलवलस। उँहा के आवते कहनी- " नमो नारायण होखे !" सभे खाईल शुरु क दिहलस। सारा अधिकारी अवाक रहे लो। एक जाना पुछलन "ई कवनो कमांड ह का ?" राजेंद्र बाबू कहनी "ई हमनी के माटी के रिवाज हऽ।" माई भाषा आ मातृभूमि से लागल नेह जीवन भर लागले रह गईल।

भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष के इतिहास में तीन गो घटना के विशेष महत्व बा। असहयोग आंदोलन , सविनय अवज्ञा आंदोलन आ भारत छोड़ो आंदोलन। एह तीनों आंदोलन में राजेंद्र बाबू बढ़ चढ़ के भाग लिहनी। विदेशी वस्तुअन के बहिष्कार , स्वदेशी के बढ़ावा , विदेशी संस्था सन के बहिष्कार, विदेशी कानूनन के अवज्ञा आदि कार्यक्रमन के नया धार दिहनी राजेंद्र बाबू। आंदोलन के बीच में जवन भी समय मिलो उ रचनात्मक कार्यन में बीत जाव। 1934 में बिहार में आईल विध्वंसक भूकम्प के समय इहाँ के सेवा भाव के दोसर उदाहरण खोजल दुर्लभ बा।

डेगे डेगे टुटल फुटल जे बिहारवा
से चलि अईले ना।
देवदूत बनि रजेंदर बाबू
से चलि अईले ना।

देश के राष्ट्रपति बनला के बाद चीन के आक्रमण उँहा खातिर सबसे बड़हन सदमा रहे। विश्वास रहे कि चीन भी ओहि दंश के झेल के उबरल बा जवना से भारत। दुनू देश स्वाभाविक मित्र बाड़न सऽ। अप्रत्याशित हमला के समय राजेंद्र बाबू जवना धीरज आ त्याग के परिचय दिहनी ओकर दोसर मिसाल नईखे। राष्ट्रपति भवन से निकल के गाँव गाँव घुमे लगनी। देश के सैनिकन खातिर हथियार के कमी ना होखे एकरा खातिर धन के जरुरत रहे। देश के राष्ट्रपति आम जनता के सामने आपन फाँड़ पसरलस आ आम जनता ओकरा के हीरा जवाहररात से भर दिहलस। एही घरी दमा के बेमारी जोर पकड़ लेले रहे। बिमारी बढ़त गईल। अंततः 28 फरवरी 1963 के राजेंद्र बाबू एह धरा धाम से विदा लिहनी।

आज 'देशरत्न' हमनी के बीचे नइखीं। बाकिर अपना पाछे आदर्श के अईसन रेखा छोड़ गइल बानी जेकरा नजदीक जाके भी आदमी ईश्वरत्व के प्राप्त कर सकेला। शत शत नमन एह महान आत्मा के। माई के दिहनी हँस के रउआ अपना जीवन के अंतिम बूंद,

औरत,
देंहि के भूगोल से परे

डा. सोनी पांडे

आजमगढ़ युपी के रहे वाली डा. सोनी पांडे जी , अध्यापक हईं । गाथांतर के संपादक, हिन्दी भोजपुरी साहित्य मे एगो जानल मानल नाव , मातृभाषा भोजपुरी मे कई गो गीत लिख चुकल बानी । सम्प्रति इँहा के आजमगढ़ मे बानी ।

औरत देंहि के भूगोल से परे जबले व्यक्ति के संरचना मे ना ढालल जाई तबले हासिए प परल लोगन के समानता के बात बेमानी बा ।

हमरी नजर मे मध्यमवर्ग , अउरी निम्न वर्ग के मेहरारुन के जिनगी आजुओ खुंटा मे बान्हल गाई जइसन ही बा । जप , तप , होम , ब्रत , परम्परा अउरी संस्कार के बरिआर रसरी मे जकड़ल , ' मेहरारुन खाति बनल मर्यादा' के खूंटा मे बान्हि के मानसिक तौर प एह कदर गुलाम बनावल गइल बा कि लाख बौद्धिक विकास के बात कइल जाउ, आर्थिक निर्भरता के बात कइल जाउ , औरत आजूवो ओहि काठ के कठोलनी के सांचा मे बईठ आधुनिकता के दावा करत एगो सजावटी समान ही हमके लागेले जवन कि सुपर माल संस्कृति के दावा हs ।

एगो सवाल हरमेसा मुँह बिरावे ला कि जेतना निर्जला व्रत मेहरारुन खातीर बनल बा ओ मे एक्को गो मरदाना खाति कांहे ना ? अवहेलना कइला प मरद मरि जइहँ औरत कांहे ना मुवेली लो एह कहानियन मे ?

अब घरी आ गइल बा कि औरतन के पितृसत्ता के एह साजिश के बुझि के मुख्य धारा से जुड़े खातीर खुद के बिना मतलब के वर्जना सब से मुक्त राखे के परी । धर्म मनुष्यता के विकास खातीर होखे के चांही , मानसिक गुलामी खातीर ना । आज बाजारवाद एह व्यवस्था के पाल- पोस रहल बा आपन झांपी भरे खातीर , अइसे मे मेहरारुन जाति के मुख्यधारा से जुड़ के स्वतंत्रता के बात बेमानी बा । अभी चेतना मे ले आवे खातीर चिंतन प्रक्रिया के विकास बहुत जरुरी बा ।

एगो सवाल हरमेसा मुँह बिरावे ला कि जेतना निर्जला व्रत मेहरारुन खातीर बनल बा ओ मे एक्को गो मरदाना खाति कांहे ना ? अवहेलना कइला प मरद मरि जइहँ औरत कांहे ना मुवेली लो एह कहानियन मे ?

"महिला दिवस "

पुरुष-प्रकृति,नर-नारी,शिव-शक्ति नाम से सम्बोधित इहे सृष्टि के मूल आधार ह। सृष्टि के संचालन अनवरत चलत रहे,संतुलन बनल रहे ,सामाजिक व्यवस्था सुदृढ़ रहे एकरा खाती स्त्री-पुरुष के सहयोग आ समानता जरूरी बा।

प्राचीन भारत में स्त्री-पुरुष के बराबरी के स्थान रहे। स्त्री बिना कवनों यज्ञ पूरा ना होखे। युद्ध-भूमि में पत्नी पति के साथे जाए। कैकेयी के कथा सभे जानता।अगनीयो देवता के खुश करे खाती 'स्वाहा' कहल जाला। संस्कृत साहित्य में वासवदत्ता,शकुंतला,रत्नावली,दमयन्ती आदि नारियन के सौन्दर्य के जादू आ भाव-भंगिमा के परिचय मिलेला। संसार के समूचा साधना,पवित्रता आ दिव्यता भारत में भरल पड़ल बा।

मध्यकालीन इतिहास में स्त्रियन के'जौहर-व्रत' लेबे वाली घटना से केकर रोवाँ खड़ा ना हो जाला। साच बात त ई ह कि स्त्रियन के मय समस्या एहि युग में आईल। तरह-तरह के आक्रमण कारी भारत में घुसल त ढेरों दुर्गुण लेले आईल।

आधुनिक भा बैज्ञानिक युग में स्त्रियन के अझुराइल समस्या सोझ कइल जा रहल बा।ऐमें कुछ सफलता मिलल बा। सभे लइकी पढ़े जा सs । अपना देश में धनाभाव, दहेज, अशिक्षा, सामाजिक असुरक्षा आदि मुख्य कारण नारियन के लेके बा। वैज्ञानिक युग में कन्या भ्रूण हत्या आउर सरल हो गइल बा।

आधुनिक युग में भोजपुरी के प्रवर्तक राहुल सांकृत्यायन अनेक भाषा के ज्ञाता रहनी तथापि ठेठ भोजपुरी के भी लेखक रहनी। उहाँ के आठ गो भोजपुरी नाटक लिखनी जवना में "मेहरारू के दुरदसा" प्रमुख रहे। इ नाटक १९४२ ई में लिखनी। इ नाटक चार अंक आ ,40 पृष्ट में लिखले बानी। एहमे स्त्री के दुर्दशा के वर्णन बा। दुनु के समान अधिकार के चर्चा बा। स्त्री के स्वतन्त्रता, सम्मान खाती पिता के जायदाद में स्त्री के हिस्सा के चर्चा बा।

राहुल जी के नाटक के जवाब में आजमगढ़ जिला के निवासी पं गोरखनाथ चौबे सन 1942-43 में "उल्टा-जमाना"नाटक लिखनी। पुस्तक में मुहावरा, कहावत खूब लिखनी।

महिला-दिवस पर सबसे पहीले कन्या भ्रूण हत्या बंद होखे। खाली सरकार के भरोसे कवनो काम सफल ना होखे जबतक हर नागरिक साथ ना देव। त आज हमनी के इ संकल्प ली जा कि जे जहाँ बा एकर निंदा करो, लड़कियन के महत्त्व समझाओ, लड़कियन के पढ़े खाती प्रेरित करो, दान-दहेज के खिलाफत होखो, ओकरा के सभे सम्मान देव, केहू कुदृष्टि से मत ताको, ओकरा शरीर-स्वास्थ्य पर ध्यान दीहल जाव। एतना करे खाती हरेक औरत,मर्द सक्षम बा। एमे दाम नइखे लागे के। खाली ठान लेबे के बा अपना बेटी खाती,बहिन खाती,अपना सहयोगिनी खाती। इ कके आपन पुरनका स्त्री-मर्यादा ही ना पा लीहल जाई,बलुक दोसरा खाती भी रास्ता खुल जाई ।

त जे जहाँ बा इ अभियान जारी रखो।

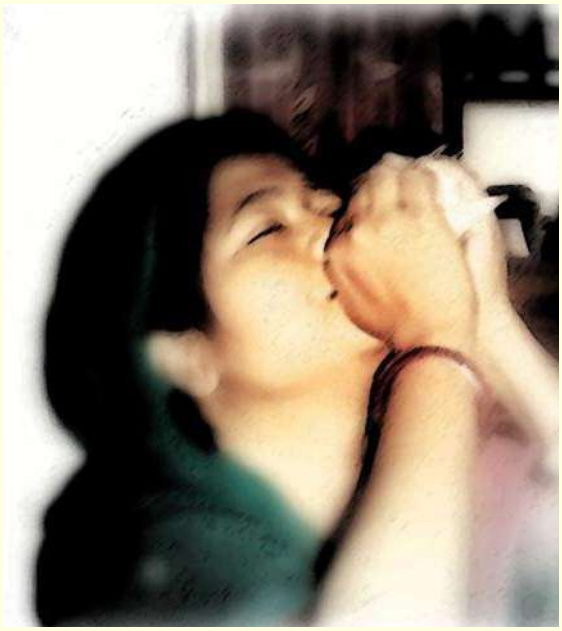

डा. रीता सिन्हा

गोपालगंज, बिहार के रहे वाली डॉ॰ रीता सिन्हा जी MA , Ph.D. हईं । शोध विषय- "भोजपुरी साहित्य में गीति काव्य", रहल बा । सेवानिवृत शिक्षिका वी एम इंटर कालेज के आ हिन्दी भोजपुरी साहित्य मे बरिआर काम । इँहा के लिखल उपन्यास - **" धरनी में धसौं कि अकासहि चिरौं "** काफी चर्चित रहल बा । **"नमक रोटी"** सहित कई गो कहानी पत्र पत्रिकन में प्रकाशित हो चुकल बा । **"अटल स्वराज"** नामक पत्रिका में स्तंभकार भी बानी ।

स्वर्णिम भारत के उज्ज्वल पहचान ?

ज्योत्सना प्रसाद

सिवान , बिहार के रहे वाली ज्योत्सना जी , हिंदी भाषा आउर साहित्य में बी. ए. (प्रतिष्ठा), एम्. ए. कइले बानी , अउर पटना विश्वविद्यालय से प्रोफेसर डॉ नंदकिशोर नवल के निर्देशन में महाप्राण निराला के गद्य के शैलीगत अध्ययन पर डॉक्टरेट कईले बानी। हिंदी में उपन्यास "अर्गला" प्रकाशित बा दू गो उपन्यास "अंतत:" आउर "मुक्तकुंतला" , कविता संग्रह आउर कहानी संग्रह प्रकाशन के प्रतीक्षा में बा। अरबी भाषा के मशहूर उपन्यास "अल-रहीना" के हिंदी में "बंधक" शीर्षक से अनुवाद आउर प्रकाशन। जॉर्डन, चीन आउर अमेरिका में आयोजित सम्मेलनन में कविता पाठ। एह घरी मुंबई में रहि रहल बानी।

पलकन का कोरवन पर लटकल बा लोर

बिलख-बिलख जियरा मचा रहल बा शोर

कबले मिली घर-बाहर बिटिया के अधिकार?

जिनगी भर काहे रहिहें होके ऊ लाचार?

कुकुर के छौना ले गोदी में बैठाईले, प्रेम बरसाई ले

अपना जनमल के दूर-दूर कह कुकुर नाहिन भगाईले

कहे के त लक्ष्मी कहीं बाकिर बेटी के करेनी निरादर

मुखाग्नि आ स्वर्ग-लालसा में बेटा के होला आदर

भरभरा के गिरी एक दिन ई परम्परा, आ टूटी गरूर

स्वर्ग-लालसा में भ्रमित-मानव के भ्रम टूटी जरूर

सदियन पुरान एह परम्परा के अंत अब नइखे दूर

बेटी-बेटा दूनू होला प्रतिभाशाली, यशस्वी, वीर-शूर

बेटी के दरद खातिर ना, तऽ इनसानियत के नाते फटबे करी छाती

चैन के वंशी कइसे बजा लेब, बेटी के दु:ख-दरद दे दिन-राति

आखिर कबले बनी माई के कोख अपना दुलरुई के श्मशान

का इहे होई स्वर्णिम भारत के उज्ज्वल पहचान ?

मेहरारुन खातिर गांव

मनोरमा

सिवान , बिहार के रहे वाली मनोरमा जी , स्वतंत्र पत्रकार के रुप मे अपना लेखन शैली से बहुते प्रभावित कईले बानी । कई गो पत्र पत्रिका आ अखबार खाति इँहा के लगातार लिख रहल बानी । एह समय इँहा के बंगलोर मे बानी ।

गावं के कई गो छबी मन में बा, जब तक ले बचपना रहे गावं भरसक एगो अइसन जगह रहे जहाँ सब कुछ सबसे सुंदर, खरा अउर बनावटपन से दूर रहे । गरमी छुट्टी में हमनी के गावें गइला पर अपना घरे अउर अगल बगल पट्टीदार लोग के इहाँ ढेर बाच्चा लोग भेटां जात रहे। महीना -डेढ़ महीना कैसे अंगूरी पर निकल जात रहुवे, पते ना चलत रहे, बाकि इ सब के बीच में कब्बो कब्बो ध्यान जरूर जात रहे फलाना बो भउजी बाहरे काहे नइखी निकलत । जंगला अउर मुकि में से झांकत रहेली बहरा दुआरी आ दलान पर खाली रतिया नाहीं त भोरे ही लउकेली बाकि तब्बो हड़बड़ी में रहेली, आपन कोठरी अउर अंगना-छत बस हेतने दूर में भिनसार से साँझ कर ले ली । भईया कमाए बहरा गईल बाड़े उनही के बाट जोहत रहेली का हो ? नाहीं त चिट्ठी-पतरी के... ह नू ? बाद में समझ भईला पर इ जननी कि मेहरारू लोग खातिर गंउवन के ढेर बढ़िया-बढ़िया बात के पीछे भारी उंच देवाल बा आ ओहमे अउर उंच कइके छोट छोट जाँगला बनावल गईल बा, 'फलाना चिलाना बो ' खातिर बहरी मरद लोग के दुनियाँ ओतने गो के मोका में से खुलेला ।

सांच कहल जाओ त पितृसत्ता के जड़ सबसे मजबूत अबहुँ गावें में बा अउर इहो ग़ौर करेवाला बात बा कि गंउवन से मरद लो आपन मेहरारू समेत बाहर ना निकलल रहित लोग तो हमनी के जवार -पथार के बहुत लईकी आ मेहरारू सभे के जिनगी के कहानी आ दिसा कुछो अउर होखित । सहर, महानगर के केतनो आलोचना कईल जाव, हमनी के माई चाची लोग बतावे ली लो पचास - साठ के दसक में बहुत मेहरारू लोग के पहिला बेर खुल के सांस गावं से बाहरे निकलला पर लेवे के मिलल रहुवे, चाहे एक थरिया में खाए के सुख होखे आ चाहे गोर-हाथ बाथला आ हारी-बेमारी पर मरद लोग से सेवा, नाही त औरत मरत मर जाई दिन -दुपहरिया मरद अपना मेहररु के पास आवे में हिचकिचात रहे, सास ननद के ताना अलगे रहत रहुवे, आ ओहि में मरद के बहरा कमाये चल गईला प अउर पहाड़ हो जात रहे । गिरहस्ती के कबो ना ओराये वाला काम काज के **थकान आ उबन के बीच औरत लो के उदासी दोपहरिया में सामूहिक गीत में फुट पडत रहे, घरे अकेल रह गइली मेहरारू के दुखिया -तकलीफ से नु भोजपुरी में 'बिदेसिया ' और 'बिरहा ' जइसन लोक संगीत अउर साहित्य जामल बा जेपर सब भोजपुरिया लो के गरब बा** लेकिन इहो जरूरी बा कि ओकरा पाछे के दुखिया आ तकलीफों अगिला पीढ़ी के पास जरूरे चहुँपे के चाहि ।

सांच कहल जाओ त पितृसत्ता के जड़ सबसे मजबूत अबहुँ गावें में बा अउर इहो ग़ौर करेवाला बात बा कि गंउवन से मरद लो आपन मेहरारू समेत बाहर ना निकलल रहित लोग तो हमनी के जवार - पथार के बहुत लईकी आ मेहरारू सभे के जिनगी के कहानी आ दिसा कुछो अउर होखित ।

ओइसे एने कई गो चीज़ बदल गईल बा बाकि अभियों बहुत कुछ पहिलही जइसन बा, गावें गइला प खाली बुढ पुरनिया भा मेहरारू लइकन सब मिली लो, जवान मरद सब कमाए खातिर बाहरा चल गईल बा लोग , बेमौसम गइला प गावं सायं सायं करेला, होली छठिया जइसन रौनक सालो -भर ना नु रहेला । ओहूँ में जेकरा तनियों सामर्थ हो जाला त आपन परिवार संगे लिवा ले जाला, साँचहुँ जे मजबूर बा ओकरे परिवार गावं में रह गइल बा, एतना सरकार आईल गईल लेकिन साँच

ई बा कि अबहुँ शिक्षा, स्वास्थ्य अउर सड़क ई तीनू सुबिधा जे तरह के होवे के चाहीं, नइखे ! प्राइमरी अउर मिडिल पढ़ ली लो त इंटर चाहे कॉलेज दूर होखे के कारन लईका सभे ता रोज़ आयी -जायी के पढ़ लेवे ला लो बाकि ढेर लइकिनी लो घरे रह जाला लो, दुर भईला के वजह से ना त सुरक्षा के डरे ! खैर इ एगो अलगे बात आ मुद्दा बा जेकरा खातिर बहुत कुछ लिखे बोले आ करें के जरूरत सब सरकार आ पूरा समाज के बा।

हम बात करत रहीं घरे अकेल रह गईल मेहरारू लोगन के, ई 2015 ह गंउवन में अब्बो नौकरी नइखे, पईसा नइखे, खेती दिन प दिन मुश्किल अउर खर्चिल होत जात बा सबसे बड़ बात खेती करे खाति लोगे गावं में ना रह गइल बाड़े एही से कि मरद लोग अभियों कमाए खातिर बाहरा गईल बा लो, अभियो महीने महीने बैन्क में पईसा आवेला आ मनीआडर दुआरे चहुँपेला, लेकिन खाली एगो मोबाईल फ़ोन से मेहरारू लो के जीवन में हेतना फरक आईल बा कि ओकर अलग से समाजशास्त्रीय अध्ययन होए के चाहीं। टीवी से उ अंतर नाही आईल ह काहे कि एगो त एक -दू घांटा छोरके बिजली अभियो सपना बा और जेतना देर टीवी देखे के मिलेला ऊ अउर सास-पतोह के ओहि चकरी में घुमावत रहेला तर्क से दूर कुतर्क के और नजीक आ पितृसत्ता के और मजबूते करेवाला होखेला ! बाकी मोबाइल से उ लोग के संवाद के आपन 'स्पेस ' बनल बा, अपना कोठारी में आपन दुःख -सुख जे मन से सबले नजीक बा ओकरा से बतिया के ! संवाद अब ओतना मुश्किल नइखे रह गइल ,पाता ना शहर के लोग के ई बात पर कइसन प्रतिक्रिया होई लेकिन अगर कहल जाव कि फ़ोन गावं घर के मेहरारू के अलग तरह से बरियार कइले बा त कौनो झूठ बात ना होइ ! पहिले मरद मेहरारू में खाली बात ना भईला से भले सामाजिक अउर पारिवारिक संरचना प कौनो असर ना होत रहे लेकिन पति -पत्नी के आपसी संबंध हरमेशा आपसी संवाद खातिर कौनो कोना जोहत रहे। ओकरा खातिर कसमसात रहे इहाँ तकले कि चिट्ठियों में दू लोग के निज़ता बड़ी मुसकिल से मिल पावत रहे। हम त देखले बानी नाया -नाया सादी के बाद सऊदी गईल लईका के चीठी मेहरारू के लगे आईल त सासु कोठरी के दुआरे से बीना एक एक अछर पढ़वले आ जनले उठत ना रहली। कौनों दिक्कत भईला प भाई -पितिया के तुरंते खबर हो जाला, साँझ तकले बेटी- बहिन के हाल -चाल लेवे भाई-पितिया चहुँप जाला लो, ई छोट बात ना ह, ऐह से एक किसिम के दबाब अपने आप पड़ रहल बा पतोहू के संगे उंच -नीच नाहि करे खातिर, नइकी कनिया लो बगैर मोबाइल के नइखी उतरत आ बाबूजी जी सबसे पहले बेटी के देवे खातिर मोबाइल खरीदतार हम त कई गो अइसन नइकी दुलहिन सबसे मिलनी जिनकर मोबाइल रिचार्ज हफ्ते हफ्ते भईया करवावत रहुवे। बाकि सब ठीक बा ससुराल प भरोसा बा लेकिन आपने बेटी -बहिन के साथ संवाद के सिरा और नियंत्रण ऊ लोग के भरोसा बनले तक आपने हाथ में राखल ज्यादा सही लागत बा।

मोबाईल के अलावा एगो अउर बात इहो देखनी ह कि बिहार सरकार के साइकिल स्कीम से पिछला कुछ साल में मिडिल स्कूल से आगे पढ़े वाली लइकी लोग के एगो नाया आसमान मिलल बा। बगली में मोबाईल और गोड़ खातिर साइकिल खाली इहे दू गो चीज़ से गावं के लइकियन में गज़ब के आत्मविश्वास आईल बा। जइसे दुनिया हाथ में होखे आ गोड़ में पाँख लाग गइल होखे। तब जबकि अबहि स्मार्ट फ़ोन उ लो के हाथे मे नइखे। सोचीं जब चाइना के सस्ता स्मार्ट फ़ोन सबके हाथ में होई आ इन्टरनेट आ गूगल के मार्फ़त सुचना आ ज्ञान के विशाल दरवाजा उनका सब के खातिर खुली तब केतना फर्क आ बदलाव आयी ? एह बदलाव से पुरान लोग डेराता, रअवा सभे के भी इ खबर प ध्यान गइल होखे शायद कि गोपालगंज के एगो पंचायत लइकियन सब के मोबाइल राखला के खिलाफ फरमान जारी कइले रहुवे बाद में सिवानो जिला के एगो गावं के पंचायत अइसही फरमान जारी करुवे। हमरा फेसबुक प भी एगो-दूगो गावं के लइकिनी लोग जुडल बा लो, देखstानी उ लो धीरे धीरे पढ़ के समझ बनवला के संगे संगे अंग्रेजी सीखे समझे के भी कोशिस करत बाड़ी लो, कब्बो कब्बो अंग्रेजी में कमेंट भी लिखेला लो ,हालाकि उ लिखला में कई गो गलती होखेला लेकिन जे लोग के किस्मत के कारन बढ़िया बढ़िया पब्लिक स्कूल में अंग्रेजी पढ़े के सुविधा मिलल बा उ लो इ ना समझ पायी कि अतनो तक आवे में इ लइकियन सब के केतना दूर आ केतना देर तक चले के पडल बा। इहो लो के बराबरी में सब मिलल रहित तब बाकि लो के असली कॉम्पिटिशन समझ में आइत। पता नाहीं ई लो महिला सशक्तिकरण बुझेली लो कि ना लेकिन कम हिम्मत ना चाहीं सब सुनत-झेलत आ फेर ओहि में आपना खातिर छोट छोट चीज़ से छोट छोट गुंजाईश निकाले खातिर, कुछ त जरूर बदलल बा बड़हन बदले खातिर बस हाली हाली सुचना आ जानकारी के विशाल दुनिया में उ लो के आपन हिस्सेदारी बनावे दs।

रुक्मिणी, सीता आ मेहरारुन के दुख

शचि मिश्रा

गोरखपुर , युपी के रहे वाली शचि मिश्रा जी पुना मे रहेनी। इँहा के भोजपुरी लोकगीतन के संग्रह/ संकलन प काम कई रहल बानी। हिन्दी आ भोजपुरी साहित्य खाति इँहा के लगातार लिख रहल बानी। भोजपुरी लोकगीतन प इँहा के लिखल किताब भी आवे वाला बा। हिन्दी मे दु गो उपन्यास प्रकाशित हो चुकल बा , एगो प्रकाशन मे बा।

चाहे ई भाई -बहिन , मायी-बाप-बेटी के प्रेम संबंध होय चाहे सासु-ननदि , देवरानि- जेठानि के अपेक्षाकृत कसाह अउर कम रुचिकर संबंध होय। चाहे सवति के दुख अउर मरद के दुसर बियाह करे के धमकी या दुसरे मेहरारू में लिप्त होये के मामला , बेटा- बेटी के जनम के फर्क , बिटिया के दहेज के समस्या।

लोकगीत कौनो समाज के रीति रिवाज आ संस्कार -संस्कृति के दरपन होला। हमरे पुरबिया समाज में भी गीतन के माध्यम से हमरे समाज के सोच, संस्कृति अउर परम्परा पूरा तरह से दिखाई देला।

हमरा समाज में हर संस्कार , ब्रत , तेवहार , खेती बारी , इंहा तक की जाँता चक्की पीसत के समय भी मेहरारू लोग अपने मन के बात गीत के बहाने अपने दिल के बहरी निकाले ली । अउर ई गीतन के माध्यम से अपने समाज के परंपरा, संस्कृति अउर अपने परिवार के लोगन के प्रति संबंधन के उजागर करेली। चाहे ई भाई -बहिन , मायी-बाप-बेटी के प्रेम संबंध होय चाहे सासु- ननदि , देवरानि-जेठानि के अपेक्षाकृत कसाह अउर कम रुचिकर संबंध होय। चाहे सवति के दुख अउर मरद के दुसर बियाह करे के धमकी या दुसरे मेहरारू में लिप्त होये के मामला , बेटा- बेटी के जनम के फर्क , बिटिया के दहेज के समस्या। ई सबके भोजपुरीया समाज के मेहरारू लोग अपने गीत में बड़े गहराई से महसूस कइले बाड़ी अउर ई लोग के घर के अँगना के गीतन में कुलि महक मौजूद बा।

राधा-रुक्मिणी अउर सीता के कहानी केहू भारतीय खातिर अनजान नाही बा। अउर भारतीय साहित्य में बाल्मीकि, व्यास से ले के तुलसीदास ले रुक्मिनी अउर सीता के एगो आदर्श मेहरारू के रूप में देखवले बा लोग अउर ओही परम्परा के निबाहल मेहरारू लोग आपन धरम समझली।

मेहरारुन के आपन जिनगी जीयल बहुत कठिन होला साथे साथ ऊ आपन दुख सुख सबके सामने अपने के ऊपर ढारि के नाही कह सकति रहलिनि एह नाते आपन दुख सुख मन के भीतर से निकारे खातिर ओनके सीता अउर रुक्मिनी जइसन मेहरारू चरित्र के सहारा लेवे के परल।

राजा जनक के घरे सीता के जनम भइल बाकिर हमनी के गीत में सीता, राजा के इंहा ना बल्कि एक मामूली गिरहस्थ के घरे जनमल बाड़ी अउर उनके जनमते उनका खातिर बर खोजे, दान दहेज देवे के समस्या मुँह बाइ के खड़ा होइ जात बा :

राजा जनक घरे जनमी करिनवा , धगरिनि अइलिनि बोलाइ।
हमरो नार तबै छीनेव धगरिनि , जब बाबा बर खोजे जाँय॥
एतनी बचन जब सुनेलैं जनक जी , बइठैलै मुड़िया नवाइ।
सुपवा सुतल बेटी तुहूँ बर माँगेलिउ , केहि बिधि होइहैं पार॥
एतनी बचन जब सुनेली करिनवा , मने मन भइलिनि दलगीर।
बारह बरिस बाबा बर खोजत लगिहैं , तब जब होबों सयान॥

एह गीत में कन्या के सम्पन्न घर में वियाह के इच्छा के साथ साथ धन के आभाव

www.bhojpurisahityangan.com

मेहरारुन के आपन जिनगी जीयल बहुत कठिन होला साथे साथ ऊ आपन दुख सुख सबके सामने अपने के ऊपर ढारि के नाही कह सकति रहलिनि एह नाते आपन दुख सुख मन के भीतर से निकारे खातिर ओनके सीता अउर रुक्मिनी जइसन मेहरारू चरित्र के सहारा लेवे के परल।

के पीड़ा भी पिता के माध्यम से सामने आइल बा। सीता के ससुरारि में कबो राज परिवार के माफिक लाड़ दुलार मिलेला कबो सासु रिसियाइ के भइया भतिजवा के गरियावे लागेली अउर सीता भी उनका से झगरही पतोहि अस जबाबो दे देली-

लीपलि पोतलि ओबरिया त जगर मगर करै हो।
हे हो ताहि पइठि सूतै श्रीराम त कोरवाँ सीतलि रानी॥
भोर भइल भिनुसहरा सीतल रानी मुख धोवैं हो।
हे हो परिगै कौसिल्या रानी दीठि त सीतलि गरियावैं॥
मरे तोर भइया भतिजवा औरो तुहार बाप मरैं हो।
सीता बड़े रे कलप के राम अकेले काहें छोड़लिउ॥
काहें सासु भइया गरियावा भतिजवा मोर खा लिउ हो।
सासु रेखिया उठत मसि भीजत राम जइहैं मधुबन॥
जइहैं त जइहैं बलइया से ने औरो भले से न हो।
मोर देवतन बंदि छोड़इहैं लंका गढ़ तुरिहैं लौटि फिर अइहैं॥

सीता के जिउ ननदि के संताप से नाही बची पाइल। लोकगीत में अपने मन के भाव प्रकट करे के खातिर लोक मानस कथा में भी मनमाना बदलाव कइले से कौनो परहेज नाही कइले बा लोग। इहाँ सीता के बनवास के कारण ननद सांता बनल बाड़ी। सांता सीता से कहलि की रावन देखे में कइसन लागल तब सीता ओकर चित्र बनाइ के सांता के देखवली। उ चित्र सांता लेइ जाइ के राम लछिमन के देखाइ के भउजी के बन भेजे के जिद करे लगली। राम के कहले के बावजूद कहाँर बोलाइ के जंगले भेजवाइ देहलि।

राम आरे लछिमन भइया आरे एकली बहिनिया हइहों की।
ए जी राम जी बइठैलै जेवनरवा बहिनिया लइया लावेवी हो॥
ए भइया भउजी के दे ना बनबसवा जे रावन उरेहेली हो।
जिन सीता भुखा के भोजन देली आरे लांगा के बहतरवा हो॥
से हो सीता गर्हुवा रे असापति कइसे बन बासबि हो ।
मोरे पिछवरवाँ कहरवा भइया बेगे चलि आवहु हो॥
भइया सीता जोगे डँड़िया फनाव सीता के बन पहुँचावाहु हो ॥

पहिले के जमाने में कौनों भी छोट-मोट गलती पर मेहरारू के नइहरे ओरहन पेठावल , उनका नइहर भेजे के धमकी बड़ा मामूली बात रहल। इंहा सीता के कसूर नाही त ननदी के जरिए कारन गढ़ि लिहल गइल बा।

घर में से निकासल मेहरारू जेकरे नइहरे भी सरन नाही बा तेकर चिन्ता सीता के माध्यम से हमनी सभे के सामने आवेला –

राम सीता निसरलैं गरुहे गरभ से
सीता ठाढ़ि जमुनवा के तीर त नैनन नीर ढुरै॥
केन मोरे आगे पाछे बइठिहैं ,दरदिया हरि लीहैं।
केन रे छिनिहैं नार त केन होइहैं धगरिनि॥
केन मोर अगिया जगइहैं , पनिया भरि लइहैं।
केन मोर जगिहैं सउरिया त केन गइहैं सोहर॥
बन में से निसरेलिनि बन तपसी देबी सीताहिं समुझावैं।
सीता हमहि रहब तुहरे साथे काहे नैन नीर ढुरै॥

एहि लेखा मरद के छोड़ल मेहरारू जइसे नइहरे जाय के दिन काटेले ओइसे दुखिया मेहरारू लोग राम के घर छोड़ि के चलि गइले के नया कथा गढ़ि के सीता के भी नइहरे सासुर दिन काटत देखा देहले बा लोग।

जेहि दिन राम निसरि गए कठिन दुख देइ गए।
चंदन केवड़िया जजिरिया चढ़ाइ गए॥
अरे अरे लछिमन देवर बिपतिया के साथी।
देवर धोतिया में बाँनहु पिसान रमइया खोजि लावहु॥
गोकुला खोजलैं बृंदाबन सगरी अयोध्या हे हो।
एक न खोजली गुप्तार रमइया जहाँ गुपुत हुए॥
मचियहि बइठल सासु बहुअरि अरज करै।
सासू बिनु हो पुरुस के तिरियवा कहाँ हो उठि बइठै॥
बिनु हो पुरुस के तिरियवा नइहर उठि बइठेलिनि।
बिना हो गोढ़ियवा के नइया जमुना बहि लागै॥
गढ़हु होइहै माई से बाप सग औरो बहिनि।
गढ़ु होइहैं गाँवा के लोग सीता कब जइहैं॥
जहाँ जहाँ सीता बइठैं तहाँ भुइयाँ भारी होइ है।
नइहर के लोग घिनइहै सीता कब जइहैं॥
एक बेर राम मोर अवतै लवटि फिरि जातै।
दइव के नइया गरजती मैं सब के बराबर॥

कौनो कौनो मरद भी एहर ओहर मेहरारुन के बीचे लइया लगावे में बड़ा माहिर होलै , ओनके चरित्र देखावे खातिर कृष्ण हाजिर बाटैं –

मथुरा से उठैलैं कन्हइया गोकुलो में ठाढ़ भए।
राधा तुहें रुकुमिनि गरियावैं ओरहन लेइ आईला ।।1
लेइ आवो तेल फुलेल पाट रंगील।
करिबों मैं सोरहो सिंगार ओरहन हम जाबैं ।। 2
भितरे से निकरैं रानी रुकुमिनि बिछावैं सतरंजी।
बहिनी एत बड़े भाग हमार दूनों जने आयेव ।। 3

मेहरारू मरद के बीचे में के झगरा से राधा- कृष्न के झगरा तनिको फरकनईखे । कृष्ण मुरली चोरवले के खातिर नइहरे के डिहवा देखावे के धमकी देलैं , सरहजि से लहरा लगावैलै -

घर में से निकरेली राधा रनिया अँगनवा में ठाढ़ि भइली हो।
अरे हँसि के पूछेली जसोदा काहे रे बहुआ बेदिल हो ।।1
लाज सरम के बतिया कहल नाही जाला नूँ हो।
सासू पलँग रखल मोर तिलरी नाही रे आज मीलेला हो ।।2
नहाइ धोइ अइलैं किसुना , अँगनवाँ में ठाढ़ भइले हो।
आरे हँसि के पूछेली जसोदा काहे रे कान्हा बेदिल हो ।।3

पुरान समय में मरदन के मनबढ़ी तनी ढेर रहल ,मेहरारू के केहू कुछ समझत नाही रहल । त कृष्ण भगवान होखस त का उहो मरद त हवें चलि देहलै रुक्मिनी के छोड़ि के कुबरी के साथे अउर कहि गइलैं कि कौनो जरूरत होइ त चिट्ठी लिखि दिहो -

कान्हा चलैलै मधुबन के त कुबरी गोहने लागि।
रानी रुक्मिनी ठाढ़ झरोखवा उलटि नाही चितवैं ।1
जउ मोर मूढ़ धमकिहैं अरे देह अलसइहैं हो।
कान्हा अंतर दिल के दरदिया कहब हम कइसे ।।2
जउ तोर मूढ़ धमकिहैं देह अलसइहैं रानी।
अंतर दिल के दरदिया चिठिया लिखि भेजहु हो ।।3
केथुआ के करबैं कागज केथुआ मसिहानी हो।
कान्हा के के मैं बोलाओं हरिकरवा त चिठिया चहुपावै हो ।।4

जइसे मरद पहिलकी के छोड़ि के, ओकरे मोह से मुक्त होइ के बिना पलटि के तकले चलि जाला वइसहीं कृष्ण भी झरोखा पर ठाढ़ि रुक्मिनी के बिना तकले कुबरी के साथे घर से निकरि गइलैं । उहो क्बो वापिस न आवे के खातिर । रुक्मिनी ई जानत बाड़ी कि जो कृष्ण अइबो करिहैं तौ फिर लौटि जइहैं । इ दुख रुक्मिणी के होय त मरद के छोड़ल बिहउती मेहरारुन के भी।

दोहा फागुन के

सौरभ पाण्डेय

चढ़ल फगुनहट देहि पर, ठनलस जोरम-जोर
तान अनंगी झूमि के, मचा रहल बा सोर

ओदि रहल बा राति-दिन, ठोपे-ठोपे नेह
फगुआ-फगुआ मन भइल, चइताइल बा देह

कोइन अस तन में लचक, लप-लप करत बहाव
रंग छुआइल साँझि खा, भइल ओद मन-भाव

नवका टूसा डाढ़ि के, भइल आज अँखफोर
हे खिड़की से होह गली, तनल आँखि के डोर

भाव फफाइल देहि में, फगुआ छींटे रंग
कइसे मन संयम धरो, देखि रूप के ढंग

फगुनाई तन-मन चढ़ल, अइसन धधकल आग
देहि-देहि तउआ गइल, टेरि रहल बा फाग

हम तऽ भाई देस के, जेकर मतलब गाँव
गली-मुहल्ले जोगिरा, फगुआ, कुश्ती-दाँव

हम राउर होली हईं !

रउआ सब के परनाम...

हम राउर होली हईं. होली, होरी, फगुआ... सब हमरे नाम ह। हमार खुमारी के दिन जस-जस निगचात जात बा, ओईसे-ओईसे हमरा उपर हमला बढ़त जात बा। पटना ले लेके रांची तक ले बड़का-बड़का पोस्टर टंगाये लागल बा कि सूखल होली खेलीं, पानी बचायीं. बड़का-बड़का बैनर-पोस्टर-होर्डिंग आउर अखबार में एक-एक पन्ना के विज्ञापन पर अईसन चीज लिखल हमार जीयरा के डेरवावत बा अउर हमके खुद पर शर्मिंदगी भी महसूस होखत बा।

ई कुल के देख के अईसन लागत बा जईसे आज पानी के संकट आईल बा त हम होली ही एकर सबसे बड़ जिम्मेवार बानी। जईसे सालो भर पानी के बचावल जाला आ एक दिन हमरा नाव पर तनी मनी रंग में पानी लाग जाला तो जईसे हमहीं पानी के संकट के जिम्मेवार मान लेबल जाईना। जे लोग दस -दस गो गाड़ी रखले बा, ओकरा में एगो-दुई गो के इस्तेमाल करेला, बाकिर गाड़ी के रोज ओकर धुलइया होला, ओकरा में सालो भर पानी लागेला तो ओकरा के ले के तो कब्बो कुछ केहू के बोलत नइखी सुनले हम !

पानी के का-का खेला होला, सब लोग जानत बा बाकिर ओकरा खातिर साल भर में कब्बो एको बार अपील नईखी देखले बाकिर जब हमार दिन आवेला तो एक-पर-एक कुल लोग के अपील जारी होखे लागेगा कि सूखल होली खेले के काम बा, पानी बचावे के काम बा। जानत बानी काहे, ई पानी के बात ना ह खाली। हम खटकउआ परब हई संभ्रांत लोगन खातिर। हमरा के अश्लील परब मानल जाला। दारूबाजन के परब के लेबल लगावे के कोशिश कईल गईल बा हमरा पर। हमरा के अश्लील परब बनावे में तो खैर आपने भोजपुरी के गीतकार-गायक लोगन के बड़ भूमिका बा, जे लोग होली के अवते साड़ी-साया खोलेवाला दुनिया में रम जाला, बाकिर सवाल दोसरो बा हमार।

होली के अश्लीलता पर तो बड़का लोग बड़ मुंह-नाक सिकोड़ेला बाकिर आउर दोसर मौका पर जवन अश्लीलता आउर बिकृति फैलेला, ओकरा पर मुंह-नाक बनावत देखले बानी कब्बो ? कब्बो ना देखले-सुनले होखब। हमरा के नशेड़ियन के परब कहल जाला। बताईं कि का सालो भर मय शराबखाना में केहू ना जाला। सालो भर में दारू के बिक्री ना होला कब्बो ? खाली होलिये में दारू के दोकान पर बिक्री होला ?

असल में हम एगो बात बताईं. हमरा पर एतना हमला होखे के वजह बा। हम बहुत दोसरा किसिम के परब हईं। हमरा से बाजार के कवनो खास सरोकार अब ले नइखे कायम हो सकल। मस्ती में गाना गाईं, दस रोपेया के रंग अबीर

निराला

पेशा से पत्रकार , तहलका आ प्रभात खबर खाति लगातार लिखे वाला निराला जी , औरंगाबाद बिहार के रहे वाला हईं। इँहा के पुरबिया तान बैनर के नीचे भोजपुरी के पारम्परिक गीतन के सहेजे, सरिहारे आ ओह के नया कलेवर मे प्रस्तुत करे में लागल बानी। एह घरी पटना में निवास बा।

भोजपुरी लोकगीत सुने खातिर एह लिंक पे क्लिक करीं

http://www.lokraag.com/

लिहीं आउर पुवा-पकवान खाई के मस्ती मनायीं । बस एतने त ताम झाम बा हमार । कवनो खास देवता के पूजा कईला के काम ना परेला हमरा अईला पर । आपन-आपन कुलदेवता के चाहे गांव में जेकर मंदिर बा, पूजा कर लिहीं, हो जाई । हम कवनो खास देवता पर अलम नइखी ले ले । हमरा में बाजार बहुत संभावना जोहलस बाकिर कहीं कोई ओर-छोर ओकनी के मिलते नईखे। आ दोसरका बात बा कि हमरा से अब भी गांव-गिरांव के लोगन के बेसी जुड़ाव बा. हमार खुमारी ओही लोग पर ढेर चढ़ेला, ओही लोग में बेसी मस्ती के संचार होला हमार नाव से, एह से भी संभ्रात वर्ग परब-त्योहार में हमके छांट के रख देले बा । हमरा नाव प आपन मुंह बिजुकावेला संभ्रात वर्ग ! हमरा खातिर जवन समाज पानी बचावे के अपील करेला, ओह समाज के पानी हम बचा के रखले बानी । जाके देख लिहीं, आजुओ पता चल जाई दशहरा, दिवाली में अमीर-गरीब के फर्क । अब तो अउर भी कई गो नया त्योहार के जोर बा । अक्षयनवमी, करवाचउथ से लेके धनतेरस तक ले । सब परब अमीर के ह, सामर्थ्यवान के ह , जेकरा अंटी मे घोचाह दाम बा ओकरा खाति ह, आ ई बात साफ पता चल जाई । दिवाली में भी, होली में भी बाकिर हम माने होली ही एगो अईसन बानी जेकरा मे रउआ थाह नइखी लगा सकत कि के अमीर ह, के गरीब । सबके होली एके लेखा मनेला । एके रंग, एके गुलाल, एके अबीर, एके तरीका से होलीगीत ।

चमकदार कपड़ा पहिरी चाहे, कईसनो, सब होली में एक रंग हो जाए के बा। हम समानता लावेवाला परब हई। सालो भर जे अब्बर-पिछड़ा लोग बा, उ अगर सभ्रांत चाहे कुलीन लोग के कुछ नइखे बोल सकत बाकिर हमरा नाव पर सब माफ रहेला । सब टोला के लोग एक दूसरा के सराबोर कर देबेला । एतना छुट होला हमरा नाव प. ई कुल्हि अखरेला कुछ लोगन के । हम संकट में नइखीं बाकि हम ई कब्बो ना कहब कि हमरा पर संकट बा, हमरा पर हमला हो रहल बा । संकट में कहला में आउर हमला कहला मे फरक होला । एह फरक के समझल जरुरी बा । संकट में कहब तो रउआ भी बेचारगी के भाव देखाईब हमरा से. हम कवनो संकट में नइखीं । हमला होत बा बाजार के कुलीन तबका के. संभ्रांत लोगन के

राउर आपन

होली (फगुआ)

पिछला फागुन खेल गईलन

पिछला फागुन खेल गईलन, ऊ हमरा संग होली
बीत गईल दिन मास बरिस, बिसरल न सूरत भोली !!
श्याम सलोना कान्हा जइसन, छवि मन में इयाद पड़ावे
प्रेम छुअला के बाद बिरहिन के, जइसे बिरह जरावे !!
आवत जात मौसम के हाथे , भेजीं हम प्रेम के पात
पता कहाँ बा उनकर बैरन, हवा न कुछु बतावत !!
कजरी बन-बन बरसे फागुन उतरत बा अँखियन में
होके अधीर हम टेरीं ओके, लुकाईल कवन गलियन में
अबकी बरस जे अईलन साजन, खेले हमरा संग होरी
प्रीतम के हम जाए न देब, हम रोक लेब बरजोरी !!

निरुपमा सिन्हा

गोरखपुर , युपी के रहे वाली निरुपमा सिन्हा जी , एह घरी गाजियाबाद मे बानी , इँहा के हिन्दी मे कई गो पत्रिका खातिर रचना कई चुकल बानी , आ लगातार लिख रहल बानी ।

फगुआ
एगो पारंपरिक उत्सव

उदय नारायण सिंह

संगीत के शिक्षक , लोकगायक आ भोजपुरी संगीत में नवीन प्रयोग करे खातिर उदय नारायण सिंह जी जानल जानी । छपरा , बिहार के रहे वाला हईं। इँहा के भोजपुरी भाषा साहित्य आ संगीत में हरदम कुछ नया, कुछ अलग करे खातिर प्रयासरत रहेनी । अभी छपरा में बानी ।

ए ह पर कुछ लिखे के पहिले ई विचारल जरूरी बा कि फगुआ आखिर ह का?विरहिणी के आह के कथा,खेत-खरिहान में लहलहात रबी के हरिहरी देख के मन में फूटत उल्लास, हर भोजपुरिया के देह में एह घड़ी बहे वाला बसंती बयार से उठे वाला बाथा ? केतना कारण उभर के आवता, जवन फागुन के फगुआ बने के आधार हो सकेला बाकिर कहल मुश्किल बा । फागुन एगो महीना मात्र ही बा बाकिर अपना भीतर एतना सारा तत्व छुपवले बा कि ओकर व्याख्या कइला प एगो अलगे विषय बन जाई बाकिर इ तय बा कि एकरा के हमनीं के पुरखा-पुरनिया,जे आर्य रहे,जे प्रकृति से जुडल रहे, ओकरा गहिराई तक जाके महसूस कर के एगो पर्व,एगो उत्सव के रुप में परंपरा बना देहलख, एह मे कवनो शक ना हो सके ।

इ उत्सव आज के ना ह । सतजुग से ले के,त्रेता आ द्वापर से ले के कलजुग तक के एकर इतिहास बा। रति आ कामदेव के शंकर जी पर वार भा होलिका-हिरण्यकश्यप आ प्रहलाद के खिस्सा, रामचंद्र जी के अजोध्या के लवटानीं, कृष्ण जी के रास रचवावल , कवनो एगो बात होखो तब नूँ कहाव, अईसन ढेर कुछ बा ,जवन फागुन के फगुआ बनवलख।

आयुर्वेद कहेला- रात के ठंढी, दिन में गरम, फागुन करे एही से बेभरम। देह टूटी, बाथा होई, कफ से पूरा शरीर भरल रही। बिछौना पर जाएम सूते त ओह घड़ी ओढना ना चाहीं बाकिर भोरे उठेब त एगो चादर ले के बाहर निकले के पड़ी। माने फागुन दू गो ऋतु के संधिकाल ह- ठंढा आ गरमी के। दिन के घाम तीत आ रात के कुहा कँपसल।

एह ऋतु के प्रभाव त पूरा भारत में ही होला बाकिर भोजपुरिया बधार खातिर ई खास रुप से महत्व राखेला। गेहूं के खेती से पूरा बधार हरिहराईल

इ उत्सव आज के ना ह । सतजुग से ले के,त्रेता आ द्वापर से ले के कलजुग तक के एकर इतिहास बा। रति आ कामदेव के शंकर जी पर वार भा होलिका-हिरण्यकश्यप आ प्रहलाद के खिस्सा, रामचंद्र जी के अजोध्या के लवटानीं, कृष्ण जी के रास रचवावल , कवनो एगो बात होखो तब नूँ कहाव, अईसन ढेर कुछ बा ,जवन फागुन के फगुआ बनवलख।

रहेला। किसान के मेहनत, हरिहरी के रुप में ओकरा साफा लऊकत रहेला, सपना पूरला जस लागेला ओकरा ।आजो भोजपुरिया बधार खेतिए क के ही जिएला। प्रकृति भी नाया-नाया फूल-पत्ता,से सजा देवेले बधार के, मन हरखित रहेला। कहे के मतलब कि ई ऋतु सूचक ह कि अब तईयार हो जाई अपना मेहनत के फसल काटे खातिर। बहरसी में कमाए वाला लोग कटनीं खातिर बहरा से कमा के चले के तईयारी कर देवेला।

एह सब महीन-महीन तथ्यन के भोजपुरिया बधार अपना लोक साहित्य भा लोक गवनई में खुल के चरचा कईले बा। गाँव के डीह बाबा, गढ़ देवी से ले के, लोक देवता तक के प्रति आस्थावान होके ओह लोग के सुमिरे के प्रक्रिया शुरु हो जाला- "बाबा हरिहर नाथ, सोनपुर में रंग लुटस" भा "होरी खेले रघुबीरा अवध में होरी खेले रघुबीरा।"

गीत-गवनई के भोजपुरिया लोग के सङे खून के रिस्ता ह। फगुआ के बहाने जवन गवाला हमनीं के बधार में,ऊ दोसरा बधार में देखे के ना मिली-खाँटी मरदन के गवनई ह फगुआ। दोसरा बधार के लोग के त हाँफ उखड़ जाई, साँस टंगा जाई। गांव के चौपाल पर गवाये वाला एह शैली में दू-दू गो ढोलकहिया,गावे वाला एगो गवैया आ पिछहरी के रुप में डेढिआ गावे वाला बीस-पच्चीस के गिनती में। सभे के हाथ में झाल आ झांझ। ताल ठोकईला के बाद एगो गांव के गवनई दू गाँव आगे ले सुनाला। लाऊडस्पीकर उफर पड़स, उन कर सकाने ना लिआई। साँच कहीं त फगुआ के गवनई मरदन के गवनई ह आ ऊहो खाँटी भोजपुरिया मरद के,जेकरा छाती में टाँसी(तार सप्तक) गावे के औकात होखो।

एह गवनई में विरह, हास्य, श्रृंगार, करूणा के सङे-सङे शांत रस के भी साहित्य गवाला आ ऊहो आज से ना,दादा-परदादा के जमाना से।

श्रृंगार के मजा लीं-

"अँखियाँ भईले लाल, एको नीन सुते द बलमुआ"

तनीं हास्य देखीं-

"सतुआ खा ल भतार, दही-चिऊरा खईहें इअरऊ।"

शायद सिनेमा वाला लोग एही साहित्य से प्रभावित हो के गीत बनवलख लोग-"लौंग-इलायची का बीड़ा बनाया,खाये गोरी का यार,बलम तरसे रंग बरसे"।

कहे के मतलब कि फगुआ गवनई के बीच में कई गो प्रयोगवादी परंपरागत शैली भी गवाला,जवन चौताल, धमार,पहपट,लटका के रुप में सोझा आवेला। दीपचंदी ताल में गवाए वाला ई गवनई लय के तीनों रुप से गुजरेला आ जब द्रुत में लय आ जाला त संसार के मय आनंद एक ओर आ एह गवनई के आनंद एक ओर।

लईकन खातिर नाया कपड़ा के रुप में जानल जाला फगुआ,पकवान के त जवाबे ना। हर घर में पुआ-पुड़ी छनाला। इयार त इयार,दुसमन भी आज के दिन दोस्त बन जाला। रंग-अबीर अपना- अपना हिसाब से लगावल जाला। लईकन के गाल में, हमजोली के मूड़ी मे, भऊजाई भा मजकिया लोग के गाल में त बूढ-पुरनिया लोग के गोड़ पर। आसीरवाद मिलेला त उमिर साँचहुं बढला अईसन बुझाला।

बाकिर कहीं कुछ दरकल बा, कुछ बदलल बा, एगो बड़हन अंतर महसूस करता बधार । ना बहरसी के लोग अब लऊटता आ ना चौपाल पर ताल ठोकाता। ढोलकहिया, गवैया, झलवहिआ खोजलो पर नईखे भेंटात। अईसन नईखे कि फगुआ के गीत नईखे बाजsत,बाजताऽ, बाकिर पहिले के फगुआ सुन के मन हरखित होत रहे, जोसिआत रहे, गुदगुदी बरत रहे- आज सुन के शरम लागता, घृणा बरत बा अपना एह गीतन पर, थूके के मन करता अईसन गीतन पर। कारण सभे नईखे, कुछ तथाकथित गवईअन आ कविअन के ले के हमनीं के पुरखा-पुरनिअन के विरासत के दिआका चाटे लागल बा, भोजपुरी माई डहकत बाड़ी। लोग जब सुनबे ना करी, गईबे ना करी त ई मौखिक आ वंशानुगत सांस्कृतिक सामाजिक विरासत के अईसहीं लोप हो जाई। एह दिव्य आ अद्भुत परंपरा के बचावे में रऊओ साथ दीं। पुरवज लोग के थाती के सहेजी- एह साल के फगुआ में रऊरो पुरनका शैली के अपनाईं, दुआर पर फगुआ गवावे के जोगाड़ बईठाईं, अपनो गाईं आ लोगो से गवाईं।

फागुन फाग बुलाई दिहले,

अंग-अंग फुलाई दिहले हे।

मइया ओढ़ि के वासंती चुनरिया,

नगरिया हरसाई गइले हे।।

- मास्टर अजीज जी

www.bhojpurisahityangan.com

फगुआ के बहाने मन आ शरीर के साधना

शशि रंजन मिश्र

आरा, बिहार के रहे वाला शशि रंजन मिश्र जी , भोजपुरी मे हास्य व्यंग्य के संगे संगे गहिर साहित्य के सिरजना करे खाति जानल जानी , इँहा के हिन्दी आ भोजपुरी भाषा प पकड़ बेजोड़ आ धारदार बा। इँहा के लिखल कई गो लेख हिन्दी भोजपुरी के कई गो पत्र पत्रिकन में प्रकाशित हो चुकल बा। एह घरी इँहा के दिल्ली मे रहत बानी।

फागुन का आईल सभे बउरा गईल । लईका- सेयान , बुढ़-जवान, मरद-मेहरारू, दुपाय-चौपाया, कीड़ा- मकौड़ा, जड़ -चेतन सभे पे फागुन सवार हो गइल । आम में मंजर का लागल आम के पेड़ बउरा गईल , झूमे लागल । मैथिली के कवि विद्यापति कहले बानी –

आइल ऋतुपति राज वसंत
धावल अलि कुल माधवी पंत
खेत में दिखे पियर फुल सरसो
मन में उमंग दिखे, जैसे खुशी मिलल बरसों।

आनंद उमंग के एह परब के मनवला के पाछे ढेर कहानी बा आ हरेक कहानी के पाछे कुछ वैज्ञानिक बात छुपल रहेला । देखल जाय त एह बसंत-बसंतोत्सव, होली - फगुआ मदनोत्सव के पाछे पुरुखन के कुछ ना कुछ वैज्ञानिक सोच जरुर बा । ऊर्जा कईसनों होखो ओकर प्रवाह नियंत्रित कइल भी जरूरी होला । ऊर्जा के बेलगाम भईला पे शारीरिक, व्यवहारिक आ सामाजिक नुकसान बेसी होला । एही से पुरखा लोग आपन शारीरिक ऊर्जा के बचावे के बात कहत रहे लोग । ब्रह्मचर्य के बाँध लगा के काम ऊर्जा के रोकल जात रहे । जाड़ा के मौसम में शरीर मे गरमी आ ऊर्जा बरकरार राखे खातिर पहिले के लोग तरह तरह के खान-पान करे। बैदई के नुस्खा जाड़ा मे बरियार चले । लोग एह नुस्खा मे सोना-चाँदी सहित ना जाने केतना गरमी लेत रहे लोग । ऊर्जा के संभारे के एह उतजोग में ऊर्जा नुकसान भी खूब होए । वैज्ञानिक लोग के कहल सांच बात कि ऊर्जा के केहू बाँध ना सके आ एकर रूप परिवर्तन होत रहेला । नदी के बाँध देब त प्रवाह रुकी आ ओह प्रवाह के बिजली बनायीं त ऊर्जा के उपयोग भईल । ना त जहिया बाँध टूटी, जान माल के नोकसान

करी । इहे हाल शरीर के ऊर्जा के भी होला । ऊर्जा के संचय (एकट्ठा कईल) के साथ रेचन (निकालल) भी जरुरी होला ।

अब पुरनिया लोग बड़ा चालाक रहले । स्वास्थ आ शरीर सबसे बड़का धन ह । समाज के हरेक व्यवहार में धरम करम घुसा के समाज के एह तरह बान्ह देले कि जाने अनजाने में ही सही लोगन के स्वास्थ के रक्षा होत रहल ह । काम ऊर्जा के परवाह जब रुकी त कहीं ना कहीं घात करबे करी- मन में विकार लायी, शरीर के दूषित करी आ फेर समाज के । मन के विकार दूर करे खातिर समाज में तरह तरह के बरत- त्यौहार आ उत्सव बनावल गईल । एकर सुरुआत कब भईल एकरा के जाने खातिर कुछ पाछे जाय पड़ी-

बाल्मीकि रामायण में भी बसंतोत्सव के चर्चा आईल बा । भविष्य पुराण में भी एक तरह के उत्सव के लिखल गईल बा एह में कामदेव और रति के स्थापना आ पूजा कईल जात रहे । संस्कृत साहित्य में एह तरह के उत्सव के बारे में खूब लिखायिल बा । संस्कृत नाटक 'चारुदत्त' आ 'मृच्छकटिकम्' में काम देव के जुलुस निकाले के चर्चा बा । एगो आउरी किताब 'वर्ष-क्रिया कौमुदी' त एह जुलूस के जवन रंग रूप बतवले बा ओहमे ढोल -नगाड़ा के साथे गाना-बजाना आ फेर एक दूसरा पे कीचड़ फेंकल आ अश्लील हास परिहास के भी चर्चा बा । सांझ के नया कपड़ा पहिर लोगन के मेल जोल के भी चर्चा बा । कालिदास के ऋतुसंहार में त बसंत के जवन वर्णन बा अगर एहिजा लिखल जाय त एह लेख पे सेंसरबोर्ड बईठ जाई । बस इ समझ लीं की एह बसंतोत्सव भा मदनोत्सव में राग रंग आ अश्लीलता के खुला खेल रहल ह । हर्षचरित होखो , दशकुमार चरित्र भा कुट्टनीमतम् सब जगहा मदनोत्सव के चर्चा बा । अश्लील हास-परिहास के चर्चा बा । पं. हजारी प्रसाद द्विवेदी के किताब 'प्राचीन भारत के कलात्मक विनोद' में भी मदन पूजा बतवले बानी ।

अब सोचेवाला बात इ बा की समाज के एह तरह के उत्सव आ आयोजन के जरुरत काहे पड़ल ? कारण एके बा समाज के एह उत्सव आ आयोजन के माध्यम से काम ऊर्जा के मनोविकार आ मनोरोगी होखे से बचावे के । अश्लील हास परिहास के छूट देके मन के मानसिक विकार निकाले के । कहल जाय त इ पुरखा लोग के एह उतजोग में ढेर अईसन चीज अलोत रहे जेकरा के साधारण लोग के समझ से बाहर रहे । अब मदनोत्सव बा त राग रंग भी रहबे करी । एह मदनोत्सव के गायन के भी अलगे अंदाज रहे । जे आज भी कहीं कहीं होली भा चईत गावेवाला अनुसरण करेलें । एकरा बारे में पाली आ बौद्ध दर्शन के विद्वान डा० रवीन्द्र कुमार पाठक आपन किताब 'मगध की रह्स्यावृत साधना संस्कृति' लमहर चर्चा कईले बानी ।

बौद्ध धर्म में देवता के मंदिर के चैत्य कहल जाला आ चैत्य में देवता रहेलें । चैत्य में साधना होत रहे उहो बौद्ध तंत्र विधी से । जेकरा में रंग,ध्वनी आ प्रकाश के माध्यम से साधना कईल जाला । ओहमे भी ध्वनि भा आवाज के अधिका उपयोगिता बा । त होरी,फाग,बारहमासाभा चईत के गावे के शैली प्रधान होला, ख़ास तरह के आवाज निकालल भी जरुरी बा । गायन करेवाला लोग गोलाकार घेरा में बयिठेला । एकरा के मंडल कहल जाला । बीच में ढोलक भा नाल बजावेवाला लोग ही बयिठेला । आ एह घेरा के परिधि पे गायक लोग झाल, करताल के साथे बयिठेला । बीच में इतना दुरी रहेला के एक-दू लोग मेहरारू के भेस ध के नाच सके इ लोग जोगिन कहाला । परिधि पे बईठल केहू भी गायन के सञ्चालन करी । एहिजा सभे कोई सामान होला आ केहू एह समूह के प्रधानी ना करे । त एह मंडल के चैत्य रूप में लेके गायन कईल जाला ।

फाल्गुन बसंत के लड़कपन ह त चईत बुढ़ापा । इंसान के भाव में रति के प्रवाह बसंत में चरम पे रहेला । फाग के शैली में जहां माधुर्य के साथे अल्हड़पन होला (जोगीरा, धमाल इत्यादि) ओहिजे चईत के गायन में कडापन होला । गायक आलाप के साथे आरोह के ओर बढ़ेले । एहिजा अवरोह ना होखे... बस चढ़ाव रही दोगुन ,तिगुन, चौगुन तक पूरा समूह एके भावे एके रागे ऊपर बढ़त जाई ।

"हो! रामा एही ठइयां... आज चईत हम गायिब ए रामा ! एही ठइयां"

ओ समय मन के लगाम कसा जाई, राउर देह दशा के होश ना रही आ रउरा जब आरोह के ऊँचाई पर पहुंचनी की अचानके 'हा' के आवाज के साथे अचानक विराम दिया गईल । ध्वनि एतना लयबद्ध आ तालबद्ध होला की बीच में मन भटकबे ना करे । एही समय पे मन के चंचलता रुक जाला । हा आ हू आवाज के भी महत्व बा साधना के अंग ह, शरीर के मणिपुर

www.bhojpurisahityangan.com

चक्र भा नाभि के आंदोलित करेला । चंक्रमण ध्यान के रूप ह आ इ भगवान बुद्ध के खोज आ बौद्ध साधना के प्रारंभिक प्रशिक्षण के विषय ह । चईत गायन के मंडल में जोगिन चंक्रमणशील आ गायक बौद्ध उपासक ह । बीच में बईठल ढोलकिया धवनी के केंद्र भा ध्यान के केंद्र होला । ध्यान के बदलत आवृति से मन ओही आवाज में डूब जाला । आउर अन्दर के वासना, आक्रोश, गुस्सा अपने आप संस्कृत , लयबद्ध आउर तालबद्ध होके ढोलक, मंजीरा के थाप में संगीत के अंग बन जालें ।

शील-अश्लील, तुकांत-अतुकांत पद के साथे मन के विकार निकाले एह प्रयोग के पुरखा बड़ी जतन से सम्भर लें । बाकी आज के होली आ चईत गायन में साधना पक्ष आ व्यवहार पक्ष गायब हो गईल बा । अश्लीलता के प्रवाह ही ज्यादा बा । अब ना उ मंडल रहल ना गायन । फाग –चईत के प्रारंभिक आ जरुरी वाद्य के जगह पे अंग्रेजी बाजा आ जोगिन के जगह पे अश्लील नृत्य करत मेहरारुन के प्रवेश से फाग आ चईता गायन के महत्त्व कम हो गईल । लोग सिनेमा संगीत पे अबीर उड़वला के, अश्लील गीतन पे मरद मेहरारू के नाचल आ नशाखोरी के ही आज होली के नाम दे देले बा । होली फगुआ आ चईत त अब नईखे... होली बेराग आ रंगहीन हो चुकल बा । शहरीपन के भीड़ मे प्रेमभाव भी व्यवहारिक आ व्यापारिक बन गइल बा । शहर मे अब ई साधना संभव नईखे, एह से एकर व्यवहारिक पक्ष रंग गुलाल आ पिचकारी तक ही ठीक बा । समाज बदल गइल आ समाजिकता भी । एह से जेतना सधे ओतने साधल ठीक बा । ढेर कहा गइल अब ले... रउरा सभे के फगुआ के बहुत बहुत बधाई ।

होरी-गीत(धुन-पारंपरिक)

बही गइले फगुनी बयार, ठहकी बिरिजवा में होरी।
कान्हा संगे होई धुँआधार, ठहकी रिजवा में होरी।

चुनरी सम्हारी सखी करेली तइयारी,
आज वृन्दावनवा में रंग जमी भारी।
छुटी जइहे कान्हा के बोखार,
ठहकी बिरिजवा में होरी।

कांच-कांच कलियन पऽ कान्हा जे लोभइहे,
चकमा में पड़ी श्याम भारी धोखा खइहे।
राधा जी से करिहें गोहार,
ठहकी बिरिजवा में होरी।

मारी पिचकारी श्याम लुगा साड़ी फरिहें,
अचके में जाने कहाँ-कहाँ रंग डरिहें।
रंगे-रंगे होला उपकार,
ठहकी बिरिजवा में होरी।

अमवा-महुअवा के टपके मोजरिया,
लठमार होरी खेले बृज के गुजरिया।
जौहर मने खिले कचनार, ठहकी बिरिजवा में होरी।

जौहर शाफियाबादी

जौहर शाफियाबादी जी शाफियाबाद शरीफ गोपालगंज , बिहार के रहे वाला हई । अपने भोजपुरी खाति सबसे पहिले १९७० में गोपालगंज अनुमंडलाधिकारी के सोझा अनशन कइले रहीं । भोजपुरी साहित्य के आँचर में हर विधा में सृजनरूपी खोइछाँ भरे में रउआ नेह-छोह से जुटल बानी । भोजपुरी में पहिला गजल महाकाव्य 'रंगमहल', ऐतिहासिक उपन्यास 'पुरबी के धाह', ललित निबंध संग्रह ,कबिरा खड़ा बाजार में, 'वेद और कुरान' सहित दर्जन भर बहुचर्चित कृति प्रकाशित भइल बा । वर्तमान में इहाँ के 'भोजपुरी व्याकरण' लिखे में पूर्ण मनोयोग से जुटल बानी ।

फगुआ : भोजपुरिया लोक संस्कृति के महापर्व

देवेंद्र नाथ तिवारी

देवरिया , युपी के रहे वाला देवेंद्र नाथ तिवारी जी , द संडे इंडियन भोजपुरी पत्रिका के कॉपी एडिटर रहि चुकल बानी। इँहा के स्वतंत्र पत्रकार भी बानी आ एह घरी वर्धा महाराष्ट्र मे आगे के पढाई कई रहल बानी । कई गो शोध परक लेख अलग अलग पत्रिकन मे प्रकाशित हो चुकल बा । आखर पेज से शुरु से जुड़ल बानी आ भाषा साहित्य प कई गो लेख आखर प भी लागि चुकल बा ।

फगुआ, होली, होरी के नाम सुनते सबसे पहिले ब्रज के लठ्ठमार होली के दृश्य आँखी के सोझा कौंध जाला । बाकि भोजपुरिया बधार के 'फगुआ' के बाते निराला बा। इ ब्रज के होली से अलग आपन स्वतंत्र अस्तित्व रखत बा। ब्रज के होली में अल्हड़पन बा तऽ भोजपुरिया फगुआ में सामुहिकता के भाव। बसंत पंचमी से एह जवार में' फगुआ' के तान गूँजे लागेला । खेती-किसानी, मेहनत-मजूरी कऽ के साँझी के केहु के दुआर-बथान में, झाल-मजिरा आ ढोलक के थाप पऽ फगुआ के गवनई शुरू हो जाला। एह सामुहिक गान में लोग आपसी राग-द्वेश आ दुश्मनी के बिसार देले फगुआ के मस्ती में सराबोर, आनंदित अह्लादित ।

साँच कहीं तऽ फगुआ- रंग के रंगीनियत से सजल, उमंग आ उत्साह से गुलजार एगो अइसन महापर्व हऽ जहाँ सामुहिकता के भाव बा, सामाजिक सौहार्द के भाव बा, अध्यात्म के भाव बा अतने ना सूफी आ प्रेममार्गी भक्ति परंपरा के भी भाव इहाँ समाहित बा । मसलन- **'आज रंग है री...'** ख्वाजा गरीब नवाज के दरगाह पऽ एही कलाम के गा के रंग महोत्सव के शुरूआत होखेला । ओही जा अयोध्या जी के मंदिरन में गूँजे लागेला कि **होली खेले रघुवीरा अवध में** । काशी में 'आज मसाने में होली...' के गायन से भगवान भोलेशंकर के भी फगुआ के रंग में रंगाये खाति नेवत दिहल जाला । साँच कहल जाए तऽ होली भारतीय संस्कृति के विश्व में ध्वजवाहक हऽ । इ खालि एगो पर्व नाही हऽ इ तऽ हमनी के उत्साह, उल्लास आ सद्भाव से सजावें, सजोंवे वाला एगो प्रतीक हऽ ।

बहरहाल, जब बात भाव से जुड़ल होखे तऽ एह भाव के व्याख्या करे खाति हजार शब्द भी कबो-कबो कम पड़ जाला, फगुआ भाव से भरल एगो अइसने पर्व हऽ जवन गाँव से धइले शहर-नगर ले अबहिन भी हर ओर अल्हड़पन- मस्ती, आनंद, सद्भावना के रंग में सराबोर बा ।

पौराणिक पक्ष से हट के अगर हमनी के फगुआ के लोक पक्ष के भी देखीं तऽ- फगुआ ऋतुचक्र के संधि पऽ पड़ेला- एगो कहावत मन पड़त बा, **'गइल माघ, दिन उन्नतीस बाकि**।' हाड़ कँपावें वाली ठंढी से राहत दिलावे खाति बसंत ऋतु आवेले । बसंत के महीना सृजन के महीना हऽ, रोमानियत के महीना हऽ । इंसान के कहो चहुँओर प्रकृति भी रोमानियत के भाव में झूमें लागेले। आम के मँजर, टेसू के फूल- सरसो के फूल आ फगुनी ब्यार- नवस्फुर्ति के संचारक होले। जीव-जंतु, बुढ़-पुरनिया, लइका-बच्चा आ नौजवान सभे फगुआ के रंग में रँगाये खाति मचले लागेला। कहीं फगुआ तऽ कहीं जोगिरा के स्वरलहरी गूँज उठेले- **'भर फागुन बुढ़वा**

www.bhojpurisahityangan.com

देवर लागे...'

फगुआ आ जोगिरा के आजो कुछ संकुचित सोँच के लोग अश्लीलता आ फुहड़पन के नाम पऽ नक्कारे के कोशिश करेला। बाकि इ लोग एह सच्चाई से अंजान बा कि भोजपुरी एगो विकसित संस्कृति के नाम हऽ । एह समाज में सामाजिक-मनौवैज्ञानिक पक्ष के भी भरपूर महत्त्व दिहल जाला। अइसना फगुआ आ जोगिरा के मनोवैज्ञानिक पक्ष के भी समझे के होई। दरअसल, भोजपुरिया संस्कार में लोकधर्मिता के भाव कूट-कूट के भरल बा इहाँ अवसाद खाति इचिको जगहा नइखे। कहल जाला कि **'मन के जीतले- जीत आ मन के हारल- हार।'** अगर मन प्रसन्न रही तऽ शरीर निरोग रही। मन के प्रसन्न रखे खाति हँसी-ठिठोली आ चुहलपन जरूरी हऽ। एही खाति फगुआ आ जोगिरा गावल जाला। कि बुढ़ऊ तनिका हँस- जीव फरहर रही। बाकि मस्ती के माहौल में मर्यादा के ख्याल भी राखल जाला। देवर-भौजाई, ननद-भौजाई जइसन रिश्ता फगुआ के रंग में रँगइला-भिंजले के बाद अउर भी मजबूत होखेला। एह रिश्तन के लेके सबसे अधिका फगुआ के गीत मिलेला।

एह फगुआ गीत के भी अगर विश्लेषण कइल जाए तऽ काफी महत्त्वपूर्ण जानकारी निकल के सोझा आयी। पारिवारिक-सामाजिक- आर्थिक संरचना के कहानी एह गीतन के महसूस कइल जा सकत बा। कवनो गीत में प्रियतम से विरह के दर्द भरल बा- **'फागुन में जब ना घर सैंया- बज्र पड़ो एह फागुन के' तऽ कहीं मँहगाई के दर्द बा।**

इतिहास गवाह बा कि सन 1857 में अंग्रेजी हुकुमत के खिलाफ़ बगावत के चिंगारी फूँके में भोजपुरिया सबसे आगे रहलन। बाबू कुँअर सिंह, मंगल पांडेय, फतेह शाही, तेग अली तेग जइसन भोजपुरिया वीर एह क्रांति में नेतृत्व के मशाल थमलें रहलन। आम जनता में क्रांति के चेतना भरे खाति ओह घरी कई लोकगीतन के रचना भइल। कुछ फगुआ गीतन में क्रांतिकारी चेतना के भाव भी देखे के मिलेला-

'बाबू कुँअर सिंह तोहरे राज बिनु अब न रंगइबो केसरिया
इत ते अइले घेरी फिरंगी, उत ते कुँअर दुई भाई,
गोला बारूद के चले पिचकारी, बिचवा में होत लड़ाई।
बाबू कुँअर सिंह तोहरे राज बिनु अब न रंगइबो केसरिया'

एह गीत के गा के भोजपुरिया बधार आजो बाबू कुँअर सिंह के वीरता के इयाद करेला फिर-

'बंगला पऽ उड़ेला अबीर हो लाला, बंगला पऽ उड़ेला अबीर
हो बाबू, उहाँ बाबू कुँअर सिंह तेगवा बहादुर
बंगला पऽ उड़ेला अबीर हो...'

आजु जब देश में सियासी वजह से सांप्रदायिक्ता के राग अलापा जा रहल बा अइसना में फगुआ आ ईद जइसन पर्व-त्योहार सामजिक एकता के अइसन मजबूत पिलर बा जवना पऽ समाज नाम के ढाँचा टिकल बा। फगुआ के त्यौहार खाली अल्हड़पन-मस्ती, हँसी-खुशी आ सामुदायिक सद्भाव आ मेल-मिलाप के पर्व ना हऽ बलुक एह त्योहार के मनावे पीछे कईगो वैज्ञानिक कारण भी बा। फगुआ खालि प्रकृति- पर्यावरण के खाति ना बलुक मानवीय सेहत खाति भी गुणकारी हऽ। पहिले के होली में प्राकृतिक रंग मसलन हल्दी- चंदन आ केसर आ फूल से तैयार रंगन से फगुआ खेलल जात रहे। इ रंग त्वचा के साथे-साथ काया के भी निरोग करत रहे। गुणकारी रहे।

खैर, ऊपर भइल चर्चा से स्पष्ट बा कि फगुआ के रंग में रंगाये खाति कवनो वजह के तलाश बेमानी बा। आयीं सभें! होली के रंग में सराबोर हो जाईं, राग-द्वेष, दुश्मनी-अदावत के भुला के अपना-पराया सभे से गला मिलीं, अबीर-गुलाल उड़ाईं। हँसी-खुशी आ मोहब्बत के रंग रउआ जिनगी में हर पल, हर क्षण गुलजार रहे। रउआ सभे के सपरिवार रंगोत्सव के उलाह शुभकामना आ लाख -लाख बधाई!

जाये के कइसे कहीं परदेसी,
रह भर फागुन, चइत में जइह।
चीठी लिखा के तुरन्त पठाइह,
तिलाक ह जो हमके भुलवइह।।

चार महीना घरे रहिह,
बरसात का पहिले चलि अइह।
धानी दुपट्टा ओढ़ा हमके तुहुँ
सावन में झुलुआ झुलवइह।।

- मनन्न द्विवेदी 'गजपुरी' जी

चित्रपट के होली

चंदन सिंह

छपरा , बिहार के रहे वाला चंदन सिंह जी , भोजपुरी गजल गायकी के वास्तविक जनक के रुप में जानल जानी । राष्ट्रीय स्तर प शास्त्रीय आ लोक संगीत गायन मे कई गो पुरस्कार जीत चुकल बानी। बचपन से ही साहित्यिक रुचि सम्पन्न । कई गो अखबारन में इँहा के लिखल कथा, कहानी आ गीत छप चुकल बा । हिन्दी में उपन्यास भी लिखले बानी । हर सप्ताह भोजपुरी संगीत के कड़ी में एगो

बीसवीं सदी में संगीत के प्रचार-प्रसार में सर्वाधिक योगदान सिनेमा आ सिनेमा-संगीत अर्थात **'चित्रपट-संगीत'**के बा । आम से ख़ास हर वर्ग के लोग के सिनेमा आकर्षित करेला । सिनेमा के अंतर्गत कवनो कहानी, दृश्य, अभिनय, संगीत के माध्यम से जिवंत होला जवना से ऊ दर्शकन पर विशेष प्रभाव छोड़े में सक्षम होला । कहानी में वर्णित विशिष्ट-स्थिति के विस्तार देवे, सजीव करे के उद्देश्य से दृश्य में गीत के समावेश कईल जाला जवन या त किरदार द्वारा गवावल जाला या आवश्यकतानुसार दृश्य के पार्श्व में बजावल जाला । कभी-कभार कहानी में कवनो पर्व-त्योहार के चर्चा होला त ओ त्यौहार से सम्बंधित गीत भी फिल्मावल जाला, जईसे - होली, दिवाली, वैशाखी,करवाचौथ,रक्षाबंधन,शिवरात्रि, दही-हांडी,गणेशोत्सव आदि । आज चर्चा चित्रपट से सम्बंधित होली गीतन के ।

फिल्म-जगत में शायद ही केहु गायक/गायिका होई जे होली-गीत ना गवले होई । नूरजहाँ,शमशाद बेगम,मो रफ़ी,किशोर कुमार,लता मंगेशकर, मन्ना डे, महेंद्र कपूर आदि से लेके सुदेश भोंसले, उदित नारायण,अलका याग्निक,सुखविंदर सिंह, सुनिधि चौहान, शाल्मली खोलगड़े आदि तक । आईं चित्रपट के कुछ प्रसिद्ध होली गीतन पर चर्चा कईल जाओ । सवाक् सिनेमा के प्रारंभिक काल में बनल फिल्म **'आन'** (1951) के होली गीत कबो सुनीं । शकील बदायूँनी के लिखल , नौशाद साहब द्वारा संगीतबद्ध कईल, लता मंगेशकर आ शमशाद बेगम द्वारा कोरस रूप में गावल गीत -

"खेलो रंग हमारे संग, आज दिन रंग रंगीला आया "

गीत के एक-एक शब्द आ ओकर उतार-चढ़ाव के लता जी आ शमशाद बेगम एतना सधल-सहज स्वर में गवले बा लोग कि सुनके आश्चर्य होई, मन में ई बात जरूर उठी कि एह गीत खातिर ऊ लोग केतना बेर साथे रेयाज कईले होई ! एगो गौर करे लायक बात कि, लता जी के पतला आवाज वाला अलग पहचान 'ताजमहल' आ 'बरसात' से बन गईल रहे एकरा बावजूद उनका आवाज पर **नूरजहाँ** के असर रहे ।

फ़िल्मी होली गीतन पर लोक-गीतन के स्पष्ट प्रभाव लउकेला । एह सन्दर्भ में **शमशाद बेगम** के गावल सन 1957 में रिलीज फिल्म **'मदर इन्डिया'** के गीत मन पारीं -

"होली आई रे कन्हाई रंग छलके
सुना दे जरा बांसुरी । "

अगर समकालीन गायिका लोग से तुलना कईल जाओ त होली सम्बन्धी , मस्ती, नटखटपन, सुर अदायगी के लटका-झटका जवन शमशाद बेगम के आवाज में लउकत रहे ऊ बहुत कम लोग में लउकी । शमशाद बेगम के गायकी वाला अंदाज़ बहुत हद तक **आशा भोंसले** जी के आवाज में भी लउकेला, खास कs के जब गीत के मिजाज चंचल होखे। कवि भरत व्यास के लिखल, सी.रामचन्द्र के संगीतबद्ध कईल आ आशा भोंसले जी के गावल फिल्म **'नवरंग'** (1959) के होली-गीत इयाद करीं, सुनी त ई बात प्रमाणित हो जाई ।

www.bhojpurisahityangan.com

" अरे जा रे हट नटखट , न खोल मोरा घूंघट, पलट के दूँगी आज तोहे गाली रे
मुझे समझो ना तुम भोली-भाली रे। "

एह गीत के फिल्मांकन भी बड़ा नाटकीय रहे जवन अंत तक बंधले रहेला । गीत के चपल-चंचल बनावे में 'ठेका' के विशेष योगदान होला। 'नवरंग' के कुछ ही दिन बाद (1960) में आईल नौशाद के संगीतबद्ध कईल फिल्म **'कोहिनूर'** के गाना सुनी जवन मो.रफ़ी आ लता मंगेशकर जी के आवाज में बा-

'तन रंग लो जी आज मन रंग लो '

शब्द के साथ-साथ कदम कदम पर बदलत ठेका ई गीत के ख़ूबसूरती के केतना बढ़ा देले बा। कुछ अईसने मिजाज के एगो गीत **'हीर-रांझा'** फिल्म में रहे , नूरजहाँ, शमशाद बेगम आ जगजीत कौर के आवाज में -

"नाचे अंग वे , छलके रंग वे "

अईसे त होली शब्द सुनते दिमाग में मस्ती-हुड़दंग आदि आवे लागेला बाकिर प्रेम के विविध रंग होली में देखे-सुने के होखे त **'रवि'** द्वारा संगीत बद्ध, आशा भोंसले के गावल **'फूल और पत्थर'** फिल्म के गीत सुनी-

'लाई है हज़ारों रंग होली"

प्रेमी जोड़ा के छेड़-छाड़ होली के गीत में सुने के बा त **'कटी पतंग'** (1970) के गीत, जवन आर.डी.बर्मन के संगीतबद्ध कईल, किशोर कुमार आ लता जी के द्वारा गावल बा -

"आज ना छोड़ेंगे हम हमजोली, खेलेंगे हम होली "

सिनेमा के अंतर्गत कबो-कबो अइसनो देखल जाला जे कवनो विशेष गीत से कहानी का कवनो सम्बन्ध ना रहेला बाकिर ऊ आगामी दृश्य के मजबूती देवे में काफी सहायक होला, उदाहरण के तौर पर **'पराया धन'** (1971) फिल्म में आर.डी.बर्मन के संगीत में **मन्ना डे**, आशा भोंसले आ कोरस स्वर में गावल होली गीत सुनी कबो -

"होली रे होली , रंगो की डोली, मुंह तो ना छुपा ओ रानी मान भी जा"

एह गीत के कहानी से कवनो सरोकार नईखे ना केहु मुख्य पात्र ही ई गीत में शामिल बा बाकिर अगिला गंभीर दृश्य, जवन बलराज साहनी आ अजित के ऊपर फिल्मावल बा, ओकरा खातिर ई गीत एगो प्लेटफार्म तैयार करत बा, ई बात ई फिल्म देखत समय नोटिस करे लायक बा।

गाँव -गिरान में गवाए वाला ठेंठ लोक-गीत होखे , शास्त्रीय-संगीत के ठुमरी शैली वाला होली होखे चाहे चित्रपट के होली, होली के चर्चा होखेला त श्रीकृष्ण के चर्चा अनिवार्य बा। कृष्ण के अलग-अलग रंग फ़िल्मी होली में देखीं -

मन्ना-डे आ उषा मंगेशकर आ कोरस स्वर में फिल्म **'दो दिल'** के गाना - **"बनवारी ना मारो, ना मारो पिचकारी, पइयां परूँ करूँ विनती हजार।"**

पं रविशंकर के संगीतबद्ध कईल फिल्म **'गोदान'** (1963) में मो.रफ़ी आ कोरस के गावल - **"बिरज में होरी खेलत नंदलाल, ग्वाल बाल संग रास रचावत , नटखट नन्द गोपाल।"**

गीता दत्त के गावल फिल्म **'लड़की '** के गाना - **"बाट चलत नयी चुनरी रंग डारी रे, ऐसो है बेदर्दी बनवारी "**

रफ़ी, मुकेश, आशा भोंसले आ साथी के गावल **'मस्ताना'**(1970) के गाना - **" नंदलाला होरी खेलें बिरज में धूम मची "**

आ होली के हुड़दंग से हटके **'फागुन' (1973)** फिल्म के होली-गीत मन पारीं जवन लता मंगेशकर के स्वर में रहे**- " पिया संग खेलो होरी , फागुन आयो रे "** | शास्त्रीय-संगीत के झाँक लेले एगो गजब के होली।

'शोले'(1975) के होली केहु कईसे भुला सकेला - **'होली के दिन दिल खिल जाते हैं**...' किशोर कुमार आ लता मंगेशकर के गावल , आर.डी.बर्मन के संगीत। ई गीत के साथे 'गब्बर सिंह' के डायलॉग भी मन पड़ जाला - होली कब है, कब है होली ! विषय से अलग पर एगो दिलचस्प बात, जवन शोले फिल्म से सम्बंधित एगो टीवी शो में बतावल गईल रहे कि, शोले के शूटिंग में दू साल लागल रहे आ होली वाला गाना के शूटिंग में पूरा एक महीना लागल रहे।

आधुनिकता के साथे लोक-शैली के प्रयोग करे वाला कुछ गिनती के संगीतकार लोग में से एगो नाम बा **राजेश रोशन** (संगीतकार **रोशन** के लड़का, राकेश रोशन के भाई आ ऋतिक रोशन के चाचा) के । **'कामचोर'** (1982) फिल्म में इनकर संगीतबद्ध कईल, लता मंगेशकर आ किशोर कुमार के गावल गीत पर कभी गौर करीं - **'मल दे गुलाल मोहे, आई होली आई रे ' ,** गीत के बीच में बांसुरी आ शहनाई पर उत्तराखंड के लोक धुन के एतना ख़ूबसूरती से बजावल बा जवन प्रशंसा लायक बा। कुछ अईसने प्रयोग राजेश रोशन के ही संगीतबद्ध

कईल **'आखिर क्यों'** (1985) के होली गीत - **'सात रंगो में खेल रही है दिलवालों की टोली रे',** में लउकी जवन अमित कुमार आ अनुराधा पौडवाल द्वारा गावल बा। मुखड़ा आ अंतरा के बीच स्पैनिश गिटार जईसन पाश्चात्य वाद्य पर लोकधुन अतना ख़ूबसूरती से बजावल बा जवन मुग्ध क देला।

अईसे त **'हृदयनाथ मंगेशकर'** जी (लता जी के छोट भाई) बहुत कम हिंदी सिनेमा में संगीत देले बाड़ें बाकिर **'मशाल'** (1984) के गीत किशोर कुमार आ लता जी के गावल होली-संदर्भित गीत उल्लेखनीय बा -

"होली आई होली आई देखो होली आई रे"

अब बात होली के सर्वाधिक प्रचलित गीत के, जवन केहु प्रोफेशनल गायक के गावल ना ह ...जी , रउआ ठीक बुझनी। हम महानायक **अमिताभ बच्चन** के गावल **'सिलसिला** '(1981) फिल्म के गीत के बात करत बानी - **"रंग बरसे भींगे चुनरवाली , रंग बरसे "**

पंडित शिवकुमार शर्मा आ पंडित हरी प्रसाद चौरसिया के संगीत रहे, जे **'शिव-हरी'** नाम से फिल्म में संगीत देत रहे लोग। हालाँकि एह गीत के काफी आलोचना भी झेले के पड़ल। कुछ लोग कहलक कि अमिताभ बच्चन के आवाज गायकी के अनुकूल नईखे । 'हरिवंश राय बच्चन' जी के भी आलोचना भईल दुअर्थी रचना खातिर। ओइसे ई गीत बच्चन जी के मूल रचना ना ह लोकगीत ह, जवना के शब्द में फेर-बदल क के ई गीत लिखाईल रहे । चाहे जे होखे बाकिर ई गीत के अतना प्रसिद्ध होखे के एगो इहो कारण बा कि एकर गायकी आ संगीत एकदम आम बा जवन सहज जुबान पर चढ़ जाला।

नब्बे के दशक में भी 'शिव-हरी' के संगीत से सजल एगो आउर गीत बहुत प्रसिद्ध भईल - **"अंग से अंग लगाना सजन मोहे ऐसे रंग लगाना "** फिल्म रहे **'डर'** (1993) आ अलका याग्निक, सुदेश भोंसले आ विनोद राठौड़ गवले रहे लोग। बाद के समय में एक बार फेर अमिताभ बच्चन के गावल होली गीत बहुत प्रसिद्ध भईल - **"होरी खेले रघुवीरा अवध में, होरी खेले रघुवीरा" |** फिल्म रहे **'बाग़बान'** (2003) , संगीत रहे आदेश श्रीवास्तव के आ गीत में सहयोगी स्वर रहे - सुखविंदर सिंह, अलका याग्निक आ उदित नारायण के। साल डेढ़ साल पहिले आधुनिक संगीत से लबरेज एगो होली गीत बहुत प्रसिद्ध भईल रहल ह- **"बलम पिचकारी"** विशाल-शेखर के संगीत से सजल फिल्म **'ये जवानी है दीवानी'** (2013) के गीत जवन विशाल ददलानी आ शाल्मली खोलगड़े के आवाज में रहे।

होली के आउर गीत पिछला कुछ वर्ष में आईल ह‌s , जइसे **'वक़्त'** (2005) के अनु मलिक आ सुनिधि चौहान के गावल - **" डू मी अ फेवर लेट्स प्ले होली"** , **'मंगल पांडे'** (2005) में उदित नारायण, आमिर खान, मधु श्री, चिन्मयी श्रीप्रदा आ श्रीनिवासन के गावल - **"देखो आई होली, रंग लाई होली "** आदि बाकिर श्रोता के पसंद के कसौटी पर खरा ना उतरल , अस्तु।

हिंदी चित्रपट ही ना क्षेत्रीय भाषा के सिनेमा में भी होली गीत बनल। भोजपुरी भी अछूता नइखे। भोजपुरी सिनेमा के तीन काल-खंड में बाँटल जा सकेला। शुरू के दू दौर में गिनती के परन्तु सार्थक सिनेमा बनल जवना में **'नदिया के पार'** (1982) के होली-गीत- **"जोगी जी धीरे-धीरे"**, जवन जसपाल सिंह, हेमलता आ चंद्राणी मुखर्जी के गावल रहे, उल्लेखनीय बा। भोजपुरी सिनेमा के तीसरा आ वर्तमान दौर के फिल्मन में भी होली गीत बनत बा, खूब बनत बा बाकिर ओह गीतन में सार्थक चर्चा लायक शायद कुछ नईखे , भोजपुरी के दुर्भाग्य।

www.bhojpurisahityangan.com

नकभेसर कागा ले भागा

अतुल कुमार राय

बलिया युपी के रहे वाला अतुल कुमार राय जी काशी में संगीत के साधना कर रहल बानी। भोजपुरी आ हिंदी में लिखे के एगो खास शैली ह अतुल जी के। भोजपुरी के पारम्परिक गीतन प इँहा के विवेचनात्मक ढंग से लिखाईल लेख आखर प पहिले भी पोस्ट भईल बा। भोजपुरी लोकगीत आ पारम्परिक गीतन प इँहा के लगातार लिख रहल बानी। एह घरी इँहा के बनारस मे निवास बा।

" नकभेसर कागा ले भागा

मोरा सइयाँ अभागा ना जागा "

आजु से दस साल पहीले..ठीक एही बेरा.. रउरा दस बजे राति खा अपना दुआर प निकलतीं....त ढोलक झाल आ मजीरा के संगे पनरह आदमीन के आवाज एक सूर में निकल के रउरा कान से टकराइत....उमंग आ उत्साह से भरल कई किसिम के फगुआ आ जोगीरा सुनाइत...

इ सुनते रउरा देहीं में फगुनहट के असर होखे लागीत....हो सकेला रउरो गावे भा नाचे के मन करे लागीत....

काहें की लोकगीत के सम्बन्ध हमनी के भीतरी शरीर यानी आत्मा से बाटे...

रोवाँ रोवाँ कहे लागीत की ना अब फगुआ आ गइल...

इ अइसन मौसम ह की चारो ओर उत्साह ही उत्साह एगो अलग ऊर्जा आ स्पंदन के आभास करावेला. प्रकृति से लेके जानवर आ आदमी ले एकर असर रहेला...सभे गायक हो जाला। अधपक गेंहू मटर ,पिअराइअल सरसों के फूल से सजल खेत..ओने अमवा के मोजर प बइठ के कुहुकत कोयल...

आ एने महुआ के रसदार डाँढ़ी...

कल्हूआड़ा में बनत नया नया गुड़ के संगे मन मीठ हो जाला..

फगुआ के तैयारी.रोज सांझी का हिसाब ..के का पहिनी.सबके .नया किनाई की पुराने से काम चली..की खाली लइकन के किना जाव....

ओह दिन का बनी..के के के के रंग लागि..

मने आलम ई रहेला की दस दिन पहिले से आदमी मने मने फगुआ खेले लागेला...ओह में भीगे लागेला..

जे अपना घर से बाहर रही के कमाता ओके घरे लवटे के चिंता...इहाँ एक साल से राह ताकत घर के मेहरारू...

की छठ में ना अइलें त हो सकेला फगुआ में आ जास....

ओह इंतजार के दर्द आ छटपटाहट के बीच कई गो लोकगीत आ फाग भी हमनी के परम्परा में गावल जाला.....

एने घर के लहुरा देवर अपना भउजाई से माजा लेबे लागेला...

की "भइया नइखन त हम बानी न डाले खाती"

भउजाई भी मने मने लजा के एक बिता मुड़ी निचे क लेली.....

ई सब रंग ह जीवन के..जेकरा बारे में जेतने कहाव उ कम बा।

साँच पूछीं त यदि त्यौहार ना रहे त आदमी के जीवन अजीब नीरस हो जाइत...

लेकिन अब बहुत फास्ट समय में हो गइल बानी जा हमनी के..

इंटरनेट के स्पीड बहुत कुछ फास्ट क देले बिया..अब मये एक क्लीक प हाजिर बा....ढेर लोग इंटरनेट प रंग लगाके होली मनाली..

अब फगुनहट के एहसास खाती गाना बजाना के जरूरत नइखे..

आ गनो बजाना अइसन बा की रउरा लाज शरम रही त फगुआ से नफरत हो जाई..

एह में दू राय नयखे की कुछ लुच्चा गायक रूपी कउवा.भोजपुरी के गरिमा रूपी नकभेसर के लेके भाग रहल बाड़े स...अभी से भी जागल ना गइल त आगे चल के चइता कजरी होली इ सब संक्रमित हो जाई....जब बाजार में खाली नकली घीव मिली...त लोग ओही से काम चलावे लागी..एडजस्ट कइल आदमी के स्वभाव में बा...भोजपुरी गीत संगीत के संगे इहे समस्या बा की लोग असली के अभाव में नकली संगे एडजस्ट क लेले बा।

आवे वाला समय में इ बड़ चुनवती बा की गाँव में गाँव बाचल रहे...

खेत में खेत बाचल रहे...

आदमी में आदमी बाचल रहे

आ त्यौहार में त्यौहार

होली में होली

आ गाना में गाना बाचल रहे।

फगुआ सभे मनावेला

मालती त्रिपाठी

संगीत से स्नातक , दु गो विषय मे एम. ए. मालती त्रिपाठी जी बनारस, युपी के रहे वाली हईं । इँहा के संगीत , योग आ साहित्य के क्षेत्र मे बहुत काम कईले बानी । भोजपुरी पत्र पत्रिकन में लगातार लिखत रहेनी । आकाशवाणी में प्रस्तुति दे चुकल बानी । फिलहाल बनारस में बानी |

"संमति मईया जरि गईली
पूआ पका के ध गईली
अलाइ-बलाइ ले गईली
उज्जर दिनवा दे गईली"

पुआ सोहारी अउरी पौड़किया
जिभिया के तरसावेला
हमनी जवन खा लेहनी
आजु ना बचवा पावेला
नया फसलिया हरिहर फेड खूँट
सबके मनवा भावेला
झुरझुर बहे फगुनहट बेयरिया
नवकन के तरसावेला
कहवाँ हउवन मोर पहुनवा
करेजवा में पीर उठावेला

आत्म अउरी परमात्म मिलन के
अइसन लहरिया आवेला
पिचकार्री में रंग भरल
कान्हा के इयाद दिआवेला
भाँग के गोला बम-बम भोला
चारु ओर घोराइल बा
भगति प्रेम अरू असुर मिजाज के
मिलल-जुलल ई मेला हऽ
निमन-बाउर सब बिसरा के
बहिया बढ़ा के गरे लगा के
फगुआ सभे मनावेला
होलिका दहन के उठत लहरिया
जीनगी के पावन बनावेला।

प्रमोद कुमार तिवारी

भभुआ बिहार के रहे वाला प्रमोद कुमार जी , केंद्रीय विश्वविद्यालय गांधीनगर , गुजरात मे असिस्टेंट प्रोफेसर बानी । इँहा के भोजपुरी आ हिन्दी साहित्य खातिर लगातार काम कर रहल बानी । पत्र पत्रिकन में प्रमोद जी के रचना आकर्षण के केंद्र होली स । भोजपुरी भाषा आ साहित्य के इँहा के अपना लेखनी से बरिआर चोख धार देले बानी । एह घरी गांधीनगर गुजरात मे बानी ।

फागुन आ गइल का !!!

(एक)

ई भोरहरिए से मन काहे बउआत बा,
कोइलरिया त बुझाता पगला गइल बिया
बोल बोल के कपार दुखवा दिहलस
जइसे ओकरो सवांग कहीं चल गइल होखे
सुरूज बाबा के तनी देखीं
देह तोड़त, थथम-थथम के आ रहल बाड़े,
ई सबेर, सांझ नीयन काहे लागत बा,
एक तोड़ अउर सूत लिहीं का !

अदिमी के का कहीं
अलसा के पसर गइल बिया 'दुपहरिया' अंगना में
अल्हड़ घरघुमनी धूल
सगरी गाँव के चक्कर लगा रहल बा
आँख-कान में घुस के
जइसे खेलत होखे 'धुलंडी'
जमीन प गोड़ धरे के नांवे नइखे लेत

हे शोख पुरवइया के का कहीं
धोती खींच-खींच कर रहल बिया ठिठोली,
बड़ बुजुर्ग के कवनो लिहाज नइखे एकरा
लजाधुर धरती के देहीं प
भर हीक उबटन लगवला के बाद
पूछ रहल बिया सरसों
एक बेर अउर लगा दीं का !

'सांझ' आम के बगइचा में गते से उतरल हिय
गाँव में घुसत घरी
डगमगात रहल हऽ ओकर गोड़,
मुँह से आवत रहे कच्चा बउर के गंध
कोयल के 'कबीरा' पऽ
'कहरवा' के ठेका लगा रहल बा 'कठफोड़वा',
ताल के जलतरंग पर
नाच रहल बिया चाँदनी,
बूढ़ऊ बरगद के सुना रहल बा महुआ
नशीला आवाज में कवनो आदिम प्रेम कहानी

हवा के थाप प झूम रहल बिया मातल 'रात'
ओकरा तनिको सुध नइखे अपना सरकल अंचरा के
पत्ता के आड़ ले
टिटकारी मार रहल बा मुआ 'टिटिहा'
हमरो देह एतना काहे
टूट रहल बा आज
फगुआ आ गइल का हो?

फागुन आ गइल का? (दो)

मुई ऊ 'पहिलकी छुअन'
जाने काहें आज मन पागल कइले बिया
पंडीज्जी के कहला प
जब कांपती अंगुरी से पकड़ले रहले हमार हाथ
जब पूरा देह सिमट गइल रहे
हाथ के अंगुरी में
पंडीज्जी के मंत्र के जगही गूंजत रहे धड़कन
अरे छोड़ीं सभे, घर में हेतना काम बा
बाबूजी के नस्ता देबे के बा....

मन बार-बार चाहत बा
मोजराइल आम के गझीन गंध में
भीगत रहीं भर रात
रोम-रोम में बसा लीं
सरसों के पीयरई
ना-ना, रोम-रोम के कपाट बंद कर लीं
कइसहूं सटे न पावे कोयल के कराल कूक
अबहीं त अम्माजी खातिर पानी गरम करे के बा...

तोहरा बारे में त भूलाइयो के ना सोचब
कि पूरा सात महिना हो जाई तहरा देखले
एह एकादशी के।
गेंदा के गंध हइसे त ना चढ़त रहे कपार पर
जाने का हो गइल बा बयार के
लागत बा
उड़ा के ले जाई कहीं
घामो के तबियत ठीक नइखे बुझात
कबो सतावत बा कबो मनावत बा.
हाय राम, बरतन कटकटा गइल रखले रखले...

घूम फिर के सब काहें बतियावत बा तोहार बात
केकर सवांग ना जाले बाहर
हम कहां कुछ मंगले बानी तोहरा सिवा
पड़ल रहे दऽ खेत के रेहन
ना चाहीं हमरा के चांपाकल
ढो लेहिब सिवान के ईनार से पानी.
चिरइयो चुरगुन से गइल बीतल बानीं हम
भाग के लेखा थोड़े नू बदल देही परदेशी सेठ
ई का हो रहल बा मोह करमजली के
फागुन
आ गइल का?

गारी

कमेसरा के दादी, कांपत आवाज में
गरियावत रही ब्रह्मा विष्णु महेश के,
उनका झुर्रियन में अंटकल रहे
ढेर सारा लाज के लाली।
नटवर नारायन त हरमेसे से चालू ठहरले
आ ब्रह्मा के बुढ़ौती के खयाल त भाई करहीं के पड़ेला
ढेर होई त उनका सन जइसन दाढ़ी में करिखा पोता जाई।
बाकिर हर बार पकड़ा जाले बेचारे बमभोला
अड़भंगी, नसेड़ी, शंभु के खूब होला मलामत
कि कीरा बिच्छी वाला बौड़म के हाथे पड़ गइली सुकुमारी
गउरा।

खेत-खरीहान तक पसरल जात
गारी के सुर,
का जाने का रहे गारी में
कि सास के मार भुला गइल फुलमतिया
नयका पाहुन के गरियावे के बोलावा पा के।
आ रसिक राजा दशरथ से मोछमुंडा देवर तक
सरपट दउड़े लागल गारी के सुर

गनेस बो त, एतना डूब के जोड़त रही
रिश्तेदारन के नया संबंध
कि बेमानी हो गइल रहे
अंचरा धर के रोवत लइका के आवाज

www.bhojpurisahityangan.com

इंडिया गेट जइसन पेट वाला भसुरजी
गवनिहारिन के दीहले दू गो कड़कड़ सौटकिया नोट

चउठारी आइल बुढ़उ के गारी बिना
एकदम फीका लागल खाना
खूब सरपले गाँव वालन के संस्कार के।

बी.एच.यू. के बिरला छात्रावास के पुरान छात्र
थरिया पीट-पीट नाचत,
फागुन के एगो रात में
यौन संबंध प कइलस रिसर्च
सबेरे गर्दन प चूना थोप के निकलल
डी.लिट. के डिग्री जइसन।

मंत्रीजी चेलन से पूछत रहने -
आहो, कुछ भाव गिर गइल बा का एह साल
अस्सी के होली में ससुरा ना लेहले स हमार नाम

बहुत दिनन से मुंह फुलवले अलमगीर भाई के
कबीरा के बहाने एतना गरियवले गिरिधर पंडित
कि 'ससुरा सठिया गइल बा' कहत
उनका गले लगवहीं के पड़ल।
मन भर पाहुन के गरिया लेला के बादो
बहुत कुछ बांचल रह गइल रहे
जवना के अँचरा के खूंट में बान्ह के
घरे ले गइल रधिया
अउर जवना के कई दिन तक चभुलावत रहले
पोपला मुंह वाला अजिया ससुर।

बाकिर मुई! का जाने कइसन गारी रहे ओह बचवा के
कि हो गइल दंगा
अउर धह-धह जरे लागल पूरा के पूरा शहर
जवना के बुझावत रहे लोग
एक दूसरा के ख़ून से।

जिम्मेवारी (लघुकथा)

महिमा रोज की तरे आजुओ बिहाने पांच बजे अधनीन से उठ गईली। उठि के घर के झारल-बहारल क के चाय बनवली अऊर फेर अजय के जगा के चाय दिहली। अजय चाय पीके फेरु सुत गईलन। एने महिमा सोनू के जगा के स्कूले जाये खातिर तईयार करे लगली। सोनू स्कूल चल गईल। अब महिमा अजय के कपड़ा इस्त्री कईली, नाश्ता बनवली आ फेर अजय के जगवली। अजय उठले अऊर महिमा के एने-ओने दू-चार गो सीख-समझ देत-देत तईयार भईलें। अऊर करत-धरत नौ बजे आफिस चल गईलें। उनका गईला के बाद महिमा नहा-धो के तनि पूजा-पाठ कईली, फेर लंच बनवली आ लंच लेके सोनू के स्कूले गईली। दुपहरिया के बारह बजत रहे। लंच दे के घरे अईली आ ,आके खाना खईली, फेर रसोई के साफ़-सफाई में लगली। करत-धरत दू बज गईल। बहुत थकान लागत रहे त ऊ तनि आराम करके सोचली कि तबे सोनू स्कुल से आ गईले। ऊ सोनू में लाग गईली। एह सबमे बज गईल चार। एकरी बाद ऊ तनि लेटली कि तबले अजय आ गईलें। आवते महिमा के जगवलें। कहलें,

"महिमा! उठ।उठ।हमार ऊ नवका कुर्तवा कहाँ बा।जल्दी द।"

"कुर्ता त अलमारी में होई।बाकी इस्त्री ना होई।अबे क दे तानी।"

"का मतलब ? इस्त्री नईखे !" अजय गरजलें, "का करेलू तू दिन भर घरे ? सुतले आ एने-ओने के बतकूचन से मोका मिली तब न करबू इस्त्री । मरद काम प गईल ना कि तहार फिजूल के बतकूचन शुरू।घर-गिरहस्थी के त कौनो फिकिर बा ना ! पता ना, कब समझबू तू आपन जिम्मेवारी!" कहिके अजय चल गईलें।

पीयूष द्विवेदी भारतीय

www.bhojpurisahityangan.com

सम्मान समारोह आ भुखाइल मन

तंग इनायतपुरी

तंग इनायतपपुरी (सुनील कुमार तंग) जी आजू के समय में देश बिदेश में एगो जानल मानल कवि के रूप में स्थापित बानी। इंहा के सीवान के रहे वाला हईं आ पैतृक भूमि पिलुई (दाउदपुर) ह। पेशा से हस्तरेखा आ अंगुलांक विशेषज्ञ हईं तंग जी। हास्य-व्यंग के रूप में, मजाहिया शायर के रूप में आ मंच संचालक के रूप में इंहा के भोजपुरी, हिन्दी आ उर्दू के सैकड़ों कवि सम्मलेनन में देश-बिदेश में आपन एगो अलग पहचान बना चुकल बानी। देश के शीर्षस्थ पत्र-पत्रिका में तंग जी के रचना प्रकाशित होते रहेला। दु बरिस पहिले, भोजपुरी में उंहा के काव्य-संग्रह "केहु मन पड़ल" प्रकाशित हो चुकल बा। भोजपुरी खातिर आखर के संघर्ष में इहाँ के बहुत योगदान रहल बा शुरुए से।

रात हमरा फेर सम्मान मिलल बा। के देहल आ काहे खातिर मिलल ह, ई पूछे वाला रउआ के हईं? खैर जानहीं के चाहतानी त जान लीं कि भोजपुरी में कुछ लिखला पढ़ला खातिर एगो व्यक्तिगत संस्था हमरा के भोजपुरी में बड़हन उपाधि दे के फेर सम्मानित कइले बा। अब रउरा पुछेब कि काहे खातिर? त जब हम खूदे नइखीं जानत कि काहे खातिर, त रउरा के का बताईं ? ओइसे भोजपुरी में एह तरह के सम्मान लेबे-देबे खातिर कवनो वजह के जरूरत नइखे। जबे मरजी तबे ई शुभ काम सम्पन्न। आ सम्पन्न काहे ना? जब आपन चद्दर, आपन माला, आपन आवे-जाये के किराया आ कवनो आयोजन में आपन चंदा देवे के ताकत हमरा पाले बा, त एगो का ? एक बोलावे चौदह धावे। जहां तक उपाधि के सवाल बा, त 'भोजपुरी श्री', भोजपुरी महारथी, भोजपुरी रतन, भोजपुरी गौरव जइसन उपाधि केहु के बाप के ना नू ह ? हमरा जवन मन करी तवन, कवनो पाकिट संस्था से ले लेब। जब मिलला के खबर हम अखबार मे निकलवायब त रउरा पढे के बेरा आँख ना नू मून्द लेब ? आ दू घड़ी खातिर मान लियाव कि रउरा आँख मूंदीये लेब त दुनिया के पढ़े से ना नू रोक देब? रउरे बेटा इ समाचार अखबार में पढ़ीं आ रउरा से जा के कही कि तंग साहेब के अक्कीलपूर दियरा में पण्डित हजारी परसाद द्विवेदी भोजपुरी संस्थान का तरफ से 'भोजपुरी सम्मान' मिलल ह, त रउरा का करेब ? अपना लइका के मारेब ? रउरा ना उपाधि रोक सकतानी ना आयोजन स्थल कहाँ रही, इहो रोक सकतानी। रउरा त रउरा, जवन अखबार छापता ओकरो पूछे के पावर नइखे, त रउरा के हईं जी ? पईसा फेंक तमाशा देख।

काल्ह चलहीं के बेरा बेटा आ मेहरारू दुनू जाना गरम हो गइल लोग। मेहरारू डांटे लगुई – अतना दिन से गांवा-गाईं से भोजपुरी के सम्मान-पत्र बिटोर के ले आवतानी बाकिर आज ले त कुछ ना बुझाइल। कंही से सम्मान मिलला से अड़ोस-पड़ोस आ संवसे समाज में प्रतिष्ठा बढेला , रउरा के तऽ आज ले एगो कुकुरो ना पूछलस। बड़का बेटा त तनी अउर गरम रहुअन। कहे लगुअन- बाबूजी, सम्मान पत्र त ले आवतानी बाकिर चदरिया का क दीलें ? कम से कम सम्मान के साथे चदरियो ले अंइतीं त जाड़ा में दू-चार आदमी के काम चलित आ अइला-गइला के खरचो के कुछ साधन होइत। बाकिर बड़कू के का पता कि आज ले सब सम्मान एके गो चद्दर पे हो गइल। अब फोटो में चद्दर थोड़े चिन्हाला जे हर बेरा बदलल जरूरी बा। माई जीअतीआ, मेहरारू आ लइका दुनू जना के डंटुए आ बड़कू लइका से लगुए कहे- तोर माई का जाने कवना खानदान से आइल बिया बाकिर कम से कम तें त एह खानदान के हइस। अतना दिन से हम बरदाश्त कर तानी आ तोहनी के आजुए घबरा गइले सन। इहे ना हमरो बाबूजी एक बक्सा सम्मान पत्र एकट्ठा कइले रहनी जवना के उंहा के मुअला के बाद भुजा बेचेवाला के हाथे बिकाइल।

अइसे भी सम्मान का पढ़ला लिखला से कवनो रिश्ता आज के दौर में नइखे रह गइल। तुलसी दास, कबीर दास, मीरा बाई, रसखान आ चाहे नयका दौर में प्रेमचन्द वगैरह के नाम के सम्मान भले दोसरा लोग के मिल जाव बाकिर एह लोग के जियत

जिनगी कवन उपाधि भा सम्मान मिलल रहे ? मिलबो कइल त मुअला के बाद। ई त हमरे जइसन जीवट के आदमी बा जे एतना सम्मान पा गइल। सुन के मेहरारू बोल पड़ली – एगो बड़हन व्यंगकार लिखले बाड़े कि समाज में सम्मान दू तरह के लोग के मिलेला। एगो ऊ, जेकरा के देला से सम्मान खूदे सम्मानित हो जाला। आ एगो ऊ, जेकरा के देला से ढेर दिन ले निमना जगे जाये से डेराला। उहे व्यंगकार आगे लिखले बाड़ें कि जब केहु शहर में नाकारा चाहे दीवाना नजर आवे लागे त ओकरा के सम्मानित कर देवे के चाहीं, ताकि भटकल आत्मा के ठेकाना मिल जाव।

आज हम जइसे लवट के घरे अइनी हं तले मेहरारू आके लगे बइठ गइली ह। कहे लगली ह- उंहवो राउर सम्मान भइल ह का जी? हम मुस्कइनी हं त ऊ फेर बोल पड़ली- एजी, ई कवन लोग ह? आज ले त रउरा घरे इज्जते ना मिलल। बहरी लागता जे रउरा बारे में ढेर जानते नइखे लोग। हम झपट पड़नी हं- आज ले बहरी ओकरे इज्जत मिलल बा जेकरा घरे कवनो इज्जत ना रहे। देख ल आदि कवि काली दास के, लोक नायक तुलसी बाबा के आ कबीर दास के। हमरो उहे हाल बा। मेहरारू ज़ोर से हंसे लगली ह- चलीं, उदाहरणे के बहाने रउरा कालीदास, तुलसी बाबा आ कबीरदास के लाइन में त खाड़ा भइनी। उनकर हंसी हमरा ओसहीं लागल ह जइसे चीनी के लेप में कुनैन। हम तिलमिला गइनी हं आ ऊ हो-हो क के हंसे लगली ह। अतने में दरवाजा पर लागल घंटी बाजल ह, त हम मेहरारू के अंदर जाए के इशारा करत लपक के दरवाजा खोलनी हं। एगो उज्जर कुर्ता पायजामा पहिरले भद्र आदमी हमरा घर में दाखिल भइल ह। हम जइसे परिचय पुछनी हं उ शालीनता से बोल पड़ल ह – हम अइसे त अखबार में काम करीले। अखबार में हम विज्ञापन विभाग के प्रभारी बानी। आउर साहित्यिक आयोजनो कइल हमार खास धंधा ह। एतना कहते उ सोफा पर बइठ गइल ह। हम कुछ कहती ओकरा पहिलहीं उ लागल कहे- अगिला महिना पच्चीस तारीख के एगो विराट साहित्यिक आयोजन बा जवना के बारे में हम अपने से कुछ विस्तार से चर्चा करे के चाहतानी। हम अन्दर से चाय ले आवे के पुकार लगा के उनका से कहनी हं- हँ, कहल जाव। उ लगले कहे- एह आयोजन के एतना परचार अखबार के माध्यम से होई कि हजारों के तादाद में लोग दर्शक बन के आई। अखबार आ इलेक्ट्रोनिक मीडिया के भरपूर व्यवस्था रही। एतना सुनते हमार मन उपर-नीचा होखे लागल ह। पुछनी हं जे केकरा- केकरा के बोलवले बानी ? उ कहले लगले हँ- अभी हम अतिथि के नेवता नईखीं देले। बिचार ई बा कि जे पचास हजार रूपिया दी उ उदघाटन करी, जे चालीस हजार दी उ मुख्य अतिथि बनी, जे तीस हजार दी उ अध्यक्षता करी, जे बीस हजार दी उ विशिष्ठ अतिथि बनी आ पाँच-पाँच हजार रूपिया कवि लोग से लेके ओह लोग के अंग वस्त्रम देके सम्मानित कइल जाई। विशेष अतिथि आ सम्मान पावे वाला लोग के संख्या कइ गो हो सकेला। उदघाटन खातिर राउर नाम कुछ विद्वान साहित्यिक मित्र लोग सुझवले बा। सुनके हमरा मुँह में पानी आ गइल ह, बाकिर पईसा के सवाल बा। हम कुछ देर सोच के कहनी हं- देखीं, कई महीना से पिनसिन नइखे मिलल। पईसा के बड़ा कड़की बा। घरे कहेब त तूफान खड़ा हो जाई। एह से हमरा के सम्मानित होखे वाला कवि में राखल जाव। उ फेर नहला पे दहला मारले हं। देखीं, अइसन मौका बेर-बेर ना आवे। एके बेर में साहित्य में अमर हो जायेब। अस्थिर मन से सोच लीं। हम फेर कालह आयेब। एतना कह के उठ के चल गइले ह।

जबसे उ गइल बाड़ें, कई जगह फोन मिला चुकनी। अभी कहीं से कवनों हथफेर के गुंजाइस लागत नइखे। हम आपन मन खींच के पाँच हजार वाला सम्मानित कवि पर ले आवतानी बाकिर बेर-बेर उ मुख्य अतिथि पर चल जाता। देखीं काल्ह का होला ?

भोजपुरी भाखा आ साहित्य के वर्तमान स्थिति

गुलरेज शहजाद

मोतिहारी , बिहार के रहे वाला गुलरेज शहजाद जी , भोजपुरी हिन्दी आ उर्दू साहित्य के एगो बड़हन नाव , तीनो भाषा मे लगातार लिख रहल बानी । मंच से प्रस्तुति के संगे संगे मैथिली अंग्रेजी से अनुवादित रचना मे भी इँहा के बरिआर साहित्य के सिरजना कईले बानी । एह घरी इँहा के मोतिहारी मे ही बानी ।

भोजपुरी भाखा आ साहित्य के एह घरी के चाल आ लय संतोषजनक ना कहल जा सकेला। कविता आ गीत के स्थिति जियादा चिन्ताजनक बा। पियवा, बलमुआ, धनिया, गोरिया, कजरा, चुनरी से आगहुँ कुछो बा की ना ? भले कहानी कम लिखल जा रहल बा बाकिर कहानी जतने संख्या में बा ओह में सरोकार भी बा, माटी के गंध भी बा आ जमीनी सच्चाई भी बा। कविता जादे संख्या में लिखाता बाकिर जादेतर रचना में नयापन ना लउके। अब सवाल ई खाड़ा होता कि आखिर कब ले पानी पर पुरान लाठी पटकाई ?

दोसर भाखा आ साहित्य से भोजपुरी के तुलना कइला पर बहुत निरासा होला। बहुत दूर गइला के गरज नइखे। रउवा मैथिली पर नजर दउरा के देखीं त आपन सृजन के बजबजात जमीन के हकीकत लंगटे लउकी। मैथिली में जतना पत्रिका निकल रहल बिया, जतना पुस्तक-पोथी छप रहल बा आ मैथिली भासी लोग आपन बोली-बानी खातिर जतना लागल-जुटल बा लोग ओह मुकाबला में भोजपुरी आ भोजपुरिया लोग कहवां बाड़ें ? सबसे दमगर समय बा, जेकरा साथे चाहे-अनचाहे सब के जुडल रहे के बा । मांग हमेसा समय के होला आ समय के मांगन के पूरा कइल जरूरी होला ना तऽ रेस में अपन कउनो गिनती ना होखी।

भोजपुरी सिनेमा आ एलबम से भोजपुरी के मुंह पर जउन करिखा लागल बा ओकरा के पोंछे खातिर ना जाने कतना लमहर कोस नापे के पड़ी, कहल मोसकिल बा। सत्ता-सासन में बईठल कतना बड़ नाम वाला भोजपुरीया कपूत सब भोजपुरी से वेश्यावृति करवावे के भारी अपराध कई रहल बाड़ें । ओ लोग के कबो माफ़ ना कईल जा सकेला। सिनेमा एगो दमगर माध्यम बा। एकर परभाव लोग समाज पर जादे पड़ेला। सिनेमा के गीत में अश्लीलता जरूर बा बाकिर ओह में नवका ट्रेंड के अपनावे के छमता बा। नवका सब्द आ उपमा गढ़े के क़ाबलियत ई गारी सुने वाला गीतकारन में बा। ठीक ओईसे जइसे एक आदमी के हाथ में थमल बन्दूक के विचारधारा के कारतूस होखे आ दूसर में अपराध आ पाप के। बाकिर पाप के कारतूस इस्तेमाल करे वाला रचनाकार सबके निसाना पर कउनो संदेह नईखे। हं,निसाना गलत जगहा जरूर बा। कहे के मतलब ई बा कि एह तरह के रचनाकारन से भी सीखे के गरज बा।

बिरह आ प्रेम रचना के मूल जरूर बा बाकिर जिनगी के दूसर रंग के उठावल भी जरूरी बा। बिसय के कउनो कमी नईखे अंखगर बने के पड़ी। प्रेम आ बिरह के पारंपरिक बखान के दोसरा भरे भी कुछो बा ओकरा के, देखी।

हमार मकसद कउनो कविताई पर भासन देवे का चाहे आपन काबिलियत बघारे के नईखे। हम साहित्य के एगो गंभीर बिद्यार्थी हईं। हम ओह रूप में आपन बात रख रहल बानीं।हम जब उर्दू,हिंदी,फारसी,अंग्रेजी आ मैथिली के रचना से गुजरीले तऽ भोजपुरी खातिर मन में एगो टीस उठेला। भोजपुरी में अतुकांत कविता कामयाबी के झंडा ना गाड़ सकल। काहे कि भोजपुरिया समाज सुर लय के भासा बुझेला। सुरुआती दिन से भोजपुरिया लोग गीत गवनई का जवरे आपन परब-पबनी,संस्कार आ नेह-छोह बान्हल रहल बा। एह से अतुकांत कविता भोजपुरी में ऊ जघे ना बना पाईल। गीत भोजपुरी मांटी

सत्ता-सासन में बईठल कतना बड़ नाम वाला भोजपुरीया कपूत सब भोजपुरी से वेश्यावृति करवावे के भारी अपराध कई रहल बाड़ें

में बा। समय के संगे कविता आ गजल पर जोर आजमावल सुरु भईल। कविता जंहवा से चलल ओह से बहुत आगे ना बढ़ सकल, बाकिर गजल के रफ़्तार तेज बाटे - चाहे उ कउनो भाखा में होखे। गजल के सोहरत ओकर विसय के साथे ओकर गति आ लय में बा। दोसर भाखा खानी भोजपुरियो में गजल रफ़्तार पकड़लस आ मजबूत भईल जाता। भोजपूरिओ में भेंड़ियाधसान गजल के रचनाकार बा लोग, बाकिर भोजपुरी गजल में हिंदी आ उर्दू सबदन के भरमार बा। भोजपुरी के खांटी सबदन के जुटान आ बईठाव से भोजपुरी गजल के रंग निखरी आ मजबूत होखी।

कुल्ह मिला के भोजपुरी गीत, ग़ज़ल, कविता के जदि बचावे के अउर आपन भाखा के धनिक बनावे के बा त भोजपुरिया कवि आ कविलांठ लोग के मेहरारू के झोंटा आ अंचरा से बाहर निकले के पड़ी। जवन कविता आपन समाज, माटी अउर ओकर दुख-सुख से कट जाला, ओकर मरल तय बाटे। अभी ई बात कहे में कवनो लाज नईखे कि भोजपुरी कविता मई रहल बा। एकरा के जियावे के जतन करे के परी।

हथेली में समय (भाग : 2)

डा० अनिल प्रसाद

मूलतःहथुआ, बिहार के रहेवाला हयीं। अंग्रेजी साहित्य में शोध। साहित्य अकादमी खातिर यशपाल के 'झूठा सच' के कुछ अंशन के अंग्रेजी में अनुवाद। भारत, मिडिल ईस्ट, अमेरिका, चाइना, कनाडा अउरी ऑस्ट्रिया में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनन में पेपर प्रेजेंटेशन अउरी कविता पाठ। अंग्रेजी, हिंदी अउरी भोजपुरी में लेखन। यमन, लीबिया, पटना अउरी मुंबई के विश्वविद्यालयन में अध्यापन। सऊदी अरेबिया में अंग्रेजी भाषा आ साहित्य के प्रोफेसर बानी।

कहानी अब ले- कनिष्क बिदेश मे भूमध्य सागर के तट पर आपन साथी संगे बईठल आपन बीतल बचपन आ समय के इयाद करत बाड़न | कनिष्क बाबू द्वारिका प्रसाद के दूसरका बेटा हवें | जब ई चार्मिंग लाल पैदा भइलें त इनकर रंग करिया रहे आ गला मे घेघा रहे | एक ओर द्वारिका प्रसाद के भाई बाबू कालिका चरण ओह घेघ खातिर ओझाई करवाए के सोचत बाड़न दोसरा ओर लोहिया विचारधारा वाला बाबू द्वारिका प्रसाद लईका के डाक्टर से देखावल चाहत बाड़ें... एहिजा से आगे पढ़ीं.

महाराजा के अमला लोग के घर के आ टोला महल्ला के मेहरारू लोग के समूह-गान में अचानक बाधा पड़ गइल जब बाबू कालिका चरण के डेरा के सामने एगो मोटर-गाड़ी रुकल आ ओहिमे से पंडित मंगल दत्त आ उनका साथे महारानी विक्टोरिया अस्पताल के डॉ० धन्वन्तरी फड़के उतरले। बाबू कालिका चरण पंडित मंगल दत्त के निहोरा कइले रहले डाक्टर साहेब के घरे बुलाके ले आवेके चूँकि डाक्टर साहेब रात के समय 'कॉल' में ना जास चाहे केतनो जरुरी होखे कारन कि उनका नाम के संगे एगो लोग के मन में अन्धविस्वास रहे कि अगर उ जे कवनो मरीज के रात के देखे चल जइहें त उ मरीज बचिहें ना। बाबू कालिका चरण अपना समय से बहुत आगे रहले उ अन्धविसवासी ना रहले। चार्मिंग लाल के करिया चेहरा अन्हार कोठरी में सबेरे के उगत सुरूज अइसन चमकत रहे आ उनका हल्का बुखार भी हो गइल रहे। लम्बा आ भारी-भरकम कद-काठी के मालिक डाक्टर साहेब चार्मिंग लाल के ध्यान से देखले आ अपना ख़ास कड़ा लहजा में अंग्रेजी में बाबू कालिका चरण जे रात के बेरा भी एकदम उजर धप-धप धोती कुरता आ चमकत करिया पनही पहिरले उनका बगल में खड़ा रहले, से बोलले, "अकाउंटेंट बाबू घबडाए के कवनो बात नईखे, बस थोडा आयोडीन के कमी हो गईल बा। सुबह में हम वार्ड बॉय से दवा भेजवा देब। बच्चा एकदम स्वस्थ बा। देखत नईखीं कईसे मुस्की छोड़ता आ हमरा आला के पकड़े के कोशिश कर रहल बा।"

ओकरा बाद डॉक्टर साहेब लड़िका के महतारी के तरफ देख के अंग्रेजिये में 'गॉड ब्लेस हिम' कहले आ कुर्सी पर से उठ के खड़ा हो गईले। बाबू कालिका चरण लाल उनका के विदा करके खातिर उनका साथ बतियावत बाहर के दरवाजा के तरफ धीरे-धीरे आगे बढ़ले। भारी-भरकम देह वाला पेट के उपर तक बेल्ट बंधले डॉ धन्वन्तरी फड़के बाबू द्वारिका प्रसाद के हमेशा लुईस कैरल के पात्र हम्प्टी डम्प्टी अइसन लगिहें ओह

www.bhojpurisahityangan.com

घरी जब ख़ास करके उ आपन एके तरह के बात करिहें आ अपना तर्क से सुननिहार के ताश के खेल 'ब्रिज' आ फ्रेंच के मशहूर लेखक मोंपासा के कहानी के बारे में आपन बात मनवावे पर मजबूर करिहें। जब कनिष्क बी. ए. में लंगलटनपुर में पढ़त रहले आ जब छुट्टी में घरे आवस ओह घरी डॉ फड़के अंग्रेजी साहित्य के बारे में उनका से बात करस। एक बार उनका के उ लुईस कैरल के उपन्यास 'थ्रू द लूकिंग ग्लास' के एक उद्धरण के बारे में बतवले जेकरा में हम्प्टी डम्प्टी आ एलिस एक दूसरा से बतियावत बा लोग। बाद में कनिष्क के भाषा आ ओकर अर्थ समझे में ई प्रसंग कभी भुलाइल ना।

"हमरा नइखे बुझात की रउआ 'महिमा' शब्द से का कहेके चाहतानी," एलिस कहली।

हम्प्टी डम्प्टी तिरस्कृत भाव से मुस्करा के कहले, " निश्चित रूप से तहरा ना बुझाई – जब तक हम तहरा के बताएब ना। हमरा कहे के मतलब ई रहल ह की 'तहरा के हरावे खातिर अच्छा तर्क बा एहिमे!' "

"लेकिन 'महिमा' के मतलब 'हरावे खातिर एक अच्छा तर्क' ना होला." एलिस आपत्ति कइली।

"जब हम एगो शब्द के प्रयोग करीले, "हम्प्टी डम्प्टी तिरस्कृत भाव से ताना मारत कहले, " ओ शब्द के उहे अर्थ होला जे अर्थ हम चाहिले – न जरिको कम ना बेसी। "

"सवाल ई उठता, " एलिस कहली, " की का रउआ शब्दन से कई तरह के अर्थ निकाल *सकीले।*"

"सवाल ई उठता. "हम्प्टी डम्प्टी कहले, " की कइसे शब्द के अर्थ के समझे में दक्षता हासिल कईल जाव...बस एतने बात बा।"

डॉ धन्वन्तरी फड़के बाबू कालिका चरण के परिवार के बहुत नजदीक रहले। उ उनकर करीबी दोस्त आ पारिवारिक डाक्टर भी रहले। महाराजा के अउरइयो अमला लोग खानी उहो उपनवेशिक शान-शौकत आ आर्थिक लाभ से आकृष्ट होके बाहर से आ के इंद्रपुर में बस गईल रहले। लेकिन बाबू कलिका चरण के ठीक उलटा, देश के आजादी मिलला के बाद, उ सरकारी नौकरी में चल गईले। उनकर दोस्त बाबू कलिका चरण अपना भीतरी द्वन्द आ महाराजा के दबाब के चलते सरकारी नौकरी करे से इनकार कर दिहले। नतीजा ई भाईल की उ महाराजा कीहाँ काम करत रह गईले आ इंद्रपुर में बस गईले। उनका ई बात के कयास ना भईल की इंद्रपुर में धीरे-धीरे बदलाव आ रहल बा; इंद्रपुर मूक दर्शक रहे उ बदलाव के जब जमींदारी के उतराव के चलते ड्योढ़ी के भव्य आ रोबदार देवार के चमक-दमक आ रोब-दाब में कमी आवे लागल आ ओकरा साथे-साथे रोल्स रोवाएस कार , हेलीकाप्टर, हाथियन, कचहरी, मन्दिरन, आम के बगीचा, फुलवारी, ऊँचा विचारशील मुद्रा में कई बरीसन से खड़ा महोगनी के पेड़, आ बारहमासी लिची के पेड़ के संख्या आ ओकरा रख-रखाव में भी कमी आवे लागल। महाराजा आ उनकर परिवार भी धीरे-धीरे इंद्रपुर से रिश्ता तोड़के कुसुमपुर शहर में जहाँ ओह लोगके विशाल राजप्रासाद रहे हमेशा खातिर रहे लागल लोग। आजादी के बाद जनता से जईसे राजनेता लोग सामंती अलगाव आ उदासीनता रखे लागल लोग आ दूर होखे लागल वइसेही जमींदारी प्रथा के ख़तम भईला के बाद महाराज इंद्रपुर के जनता से दूर होखे लगले आ कभी-कभार कुसुमपुर से अपना मोटर गाड़ी के काफिला के साथ आवस आ सीधे ड्योढ़ी में चल जास। शायद इंद्रपुर के जनता विदेसी आ स्थानीय सत्ता के दोहरा उपनिवेशीकरण से अपना नया मिलल आजादी में इतना व्यस्त रहे की ओह तेजी से जात मोटर गाड़ी के काफिला के ओइसने आश्चर्य मिश्रित भय से देखे जईसे एगो छोटा बच्चा जे तिलस्मी कहानी के गैरहकीकी कल्पना-लोक के रोमांच आ अचरज के अतिरेक से निंदुआ गईल होखे।

बाबू कालिका चरण लाल के डेरा पार्वती जी के पोखरा के उत्तर दिशा में रहे, उ ओह एलाका के सबसे बड डेरा रहे। द्वारिका प्रसाद के दोसरका बेटा के जन्म भईला से घर में काफी चहल-पहल रहे। राम सिंगारी के व्यस्तता बढ़ गईल रहे। उनकर घर में काम करे वाला नोकर इमीरती नाम के करीब पचास बरीस के एगो बिन बिआहल आदमी रहे। एक दिन सबेरे सबेरे जब बरामदा

www.bhojpurisahityangan.com

में घाम में बईठल राम सिंगारी चार्मिंग के तेल लगावत रहली ओहिबेरा इमीरती अँगना बहारत रहले, नाली के पास एगो चीज चमकत लउकल ओकरा के उ उठा के अपना मलकिनी के देहले। राम सिंगारी देखते पहचान लेहली की ई त उनका कान के झुमका ह, सोना के झुमका ! अचानक उनकर हाथ दाहिना तरफ के कान के तरफ उठ गईल। अरे जा ओहिमे त झुमका रहबे ना कईल ! उनकर मुँह अचरज, भय आ कवनो अनिष्ट के आशंका से खुलल रह गईल आ उ घबडा के चील्लईली। तुरत्ते उ आँख बंद करके काली माई के ध्यान कईली आ उनका के बहुत धन्यवाद देहली। मन में सोचली अच्छा भईल मिल गईल ह ना त सोना के भुलाईल अच्छा ना मानल जाला। ई सोचला के बा उ चार्मिंग के दुलार कईली, जईसे उनकर मुंह चार्मिंग के हाथ के नजदीक आईल उ अपना दादी के नाक पर के मस्सा के छुए के कोशिश करे लगले, जे मस्सा अईसन बुझाव जईसे राम सिंगारी नाक में लवंग पहिरले होखस। राम सिंगारी बहुत तेजी से चार्मिंग के देह में सरसों के तेल के मालिश करे लगली आ गीत गुनगुनाए लगली। सबेरे के घाम में चार्मिंग के करिया देह आबनूस अईसन चमकत रहे। आ अपना दादी के गाना सुनके उ आउर जोर-जोर से हाथ पैर चलावे लगले। भुलाईल सोना मिलला के ख़ुशी में चार्मिंग के दादी के मुंह से निकलल,

“जुग जुग जीय ललनवा हमार जुग जुग जीय ललनवा हमार....”

फेर अचानक उनका चेहरा पर एगो नटखट भाव आईल आ उ चार्मिंग के कोमल छोट-छोट हाथ पैर के अपना दूनू हाथ से मलत मुसकुरात गुनगुनाए लगली.

“चुक चुक तेलिया रगड़े बेलिया बाबू मोटईहें बेल अईसन...धोबिया के पाट अईसन, पोखरा के घाट अईसन...”

चार्मिंग लाल के उनकर महतारी, बाबा आ ईया बहुत माने लोग। बाबू द्वारिका प्रसाद भी कम ना मानस लेकिन उ अपना सामाजिक आ राजनीतिक काम के व्यस्तता के चलते उ अपना परिवार के ज्यादा समय ना दे सकस। कुछ दिन पहिले इंद्रपुर के नया नया बनल कालेज में छात्रावास के उद्घाटन जे. पी. के करके रहे। जब बाबू द्वारिका प्रसाद जे. पी. के उनका गावें से इंद्रपुर लावे खातिर गईले ओही समय आवत घरी रास्ता में जब गाड़ी ख़राब हो गईल रहे जे. पी. उनका के नोकरी छोड़ के व्यवसाय करके राय दिहले। जबसे जे. पी. उनका के नोकरी छोड़ के व्यवसाय करके राय दिहले तबसे उनका दिमाग में ई बात घुमे लागल आ मानसिक रूप से उनकर व्यस्तता आउर बढ़ गईल। जब चार्मिंग चार-पांच बरीस के हो गईल रहले तब बाबा उनका के अपना संगे ले जास जब सबेरे कालेज के फुटबाल के मैदान में टहले जास। कालेज करीब डेढ़ सौ एकड़ जमीन में फईलल रहे, सब सुविधा रहे लेकिन फुटबाल के मैदान के छोर जहाँ दक्खिन तरफ जंगल में मिल जात रहे वहीं पर देसी शराब के भट्ठी आ वेश्यालय रहे। रात के समय भट्ठी में से लौटत नशा में धुत्त पियक्कड़ लोग कालेज के हाता में घुस के उपद्रव करे लोग आ ओह भव्य शिक्षा के मंदिर के गौरव के दागदार करे लोग। तुरत्ते के नया मिलल आजादी के कुछ लोग यही मतलब समझे। ई सामाजिक कुरीति के समझल एतना सहज आ आसन ना रहे।

बाबू कालिका चरण लाल के डेरा के बहुत नजदीक बकिंघम स्कूल रहे .उनका डेरा से निकल के पश्चिम के तरफ थोड़ी दूर चलला के बाद फेर दाहिने हाथ पर मुडला के बाद एक लाइने से मास्टर साहेब लोग के डेरा रहे। ओही के सामने हरिहर घास के चौड़ा पट्टी जवना के एक छोर से दोसरा छोर तक विशालकाय महोगनी के पेड़ लगावल रहे जहाँ झुण्ड के झुण्ड लड़िका सब तिझरिया के बेरा हॉकी, फुटबाल आ ‘आईस-पाईस’ खेलs सन। रोज ओहिबेरा कांता चार्मिंग के लेके आवस जब उ दू-ढाई बरीस के रहले। कांता उनका के लेके लेक्चर पंडी जी के डेरा के बरामदा में बईठ जास आ उनका इहाँ बईठल आउर औरत लोग से बात करस आ ओह लोग के बात सुनस। पूरब में पार्वती जी के पोखरा से लेहले पश्चिम में शिव जी के मंदिर तक आ इन्द्रपुर बाजार के दक्खिन छोर से उत्तर में महारानी विक्टोरिया अस्पताल के आखिरी छोर तक के जेतना पारिवारिक आ सामाजिक ख़बर रहे उ कांता के ज्ञान के स्रोत रहे !

(क्रमशः)

www.bhojpurisahityangan.com

बतकूचन

फागुनो एगो गजबे के महीना ह । अंग्रेजी महीना के हिसाब से एकर ढेर हिस्सा फरौरी महीना में परि रहल बा आज-काल । आज-काल एह से कहत बानीं जे पुरान लोगन के इयादि होई, फागुन तीन दसक पहिले ले आधा फरौरी आ आधा मार्च में परे । होली मार्च के तीसर हफ़्ता में आवे । धरती आ सुरुज-चाँद के आपसी बेवहारे अइसन बा । एह कुल्हि में अमदी के दिमाग ना चले । जानकार लोग तिथि-घड़ी आ मौसम के अइला, आ भइला, के खलिहा गणना क सकेला । इन्हनीं के नियत ना क सके ! फरौरी में फर-फर करत मन कतना अकुताइल रहेला, एह प का अब कुछऊ कहे के बा ? लइका, जवान आ सयानन के छोड़ीं महराज, उमिरगरनो के देहि से भर-भर पउआ गुदगूदी झरेले । टेसू-पलास के टूसा भलहीं निकहा आजु नति लउको, फगुआ-फूआ के हहकारी हर साले हुलास जियौवले रहेले । फेरु-फेरु जीयेले प्रहलाद-बबुआ, आ फेरु-फेरु धुकाली फगुआ-फूआ । जेकर जइसन करम ओकर ओइसन गती !

भोजपुरिहा समाज फागुन आवते जइसे एक हाली फेर से सघन भइल सुरिया उठेला । दुनिया भर में फइलल-बसल देस-विदेसन के बाबू-बबुआ-बबुनी लोगन के जुटान से गाँव त गाँव, बजार के बजार चहक उठेला । पुआ-पूरी, गुझिया, अबीर-रंग, ठंढई आदि के एगो अलगे नीसा होला । सेनुर-टिकुली, लूगा-लत्ता लेले मोबाइल-रिचार्ज के महमही देखे लायक बा । सचकी, दुनिया अब तनि अधिका एडभईंस भ गइल बीया ! ना ?

फगुनहट के लूक, टिकोरा के चटकारी आ तरासत कण्ठ के घुरहू तान प अवध के राम, बिरज के मोहन आ कैलास के सिउजी के नाँव प टाँसी घींचत सउँसे गाँव-जवार अनमनाइल मताइल ढिलमिलाइल बहकल फिरेला.. .

सदा अनन्द रहे एही द्वारे मोहन खेलैं होरी होऽऽ..

एही फरौरी में किसिम-किसिम के तिथियो आवेली स । फलाना डे, चिलाना डे, ढिमकाना डे ! एह प अब का कहे के बा केहू से ? भलहीं पढ़त खा अंगरेजिया भाई-लोगन खातिर कुल्हि परीक्षा में मंगधोअनी अस उजाड़-पछाड़ करत होखी, बाकिर एकर धँवक दिन-दूने कपारे चढ़त जा रहल बा । कवनो बिसेस 'दिवस' आजकाल 'डे' कहाला ! एही कुल्हि तिथियन में से एगो तिथि ह मातृभासा तिथि - मातृभाषा दिवस । 21 फरौरी के मनावल जाले । मानव साधन विकास मंत्रालय का ओरा से छपाइल विज्ञापन में भारतीय माईभासन के एगो निकहा सूची जारी भइल । मन दोबर हो गइल ! वाह.. !

संस्कृत, सिन्धी, नेपाली, हिन्दी.. से लेले मैथिली, संथालियो ले एह सूची में दमकत रहली स । पूरब-पच्छिम, उत्तर-दक्खिन से किसिम-किसिम के भासा के जगहा मीलल रहे ! आहियाहि, एह सूची में भोजपुरिये ना रहे । मन दूबर हो गइल !

सौरभ पांडे

सौरभ पाण्डेय जी के पैतृक भूमि उत्तरप्रदेश के बलिया जनपद के द्वाबा क्षेत्र हऽ । पिछला बीस बरीस में राष्ट्रीय स्तर के अलग अलग कॉर्पोरेट इकाई में कार्यरत रहल बानी । आजकाल केन्द्रीय सरकार के ग्रामीण-परियोजना आ स्कीम के संचालन खातिर एगो व्यावसायिक इकाई में नेशनल-हेड के रूप में कार्यरत बानी । परों को खोलते हुए (सम्पादन), इकड़यॉं जेबी से (काव्य-संग्रह), छन्द-मञ्जरी (विधान) नाव से किताब प्रकाशित हो चुकल बाड़ी स । साहित्यिक संलिप्तता के दोसर क्षेत्र बा - सदस्य प्रबन्धन समूह ई-पत्रिका ,ओपनबुक्सऑनलाइन डॉट कॉम ; सदस्य परामर्शदात्री मण्डल त्रैमासिक पत्रिका 'विश्वगाथा'; सदस्य सम्पादक-मण्डल – ई-पत्रिका 'कविता-प्रसंग'.

फगुनहट के लूक, टिकोरा के चटकारी आ तरासत कण्ठ के घुरहू तान प अवध के राम, बिरज के मोहन आ कैलास के सिउजी के नाँव प टाँसी घींचत सउँसे गाँव-जवार अनमनाइल मताइल ढिलमिलाइल बहकल फिरेला

बताईं, बतकूचन अब का कइल जाओ ? गुंगओ गवनई करी ?

हमनी भोजपुरिहा के जीवन कर्म-प्रधान ह । ई सोच अपना जवारी भाई-लोगन के मन में अतना जब्बर तरीके अँड़िसल बा, जे माईभासा के सवाल प ई जमात एक अरसा से करमे कूटि रहल बा । ओने एही सवाल प दमगर भाई-लोग मतलब आ दलाली के चदरी प राजनीति के अदौरी पारि-पारि परधानी-परधानी खेल रहल बा ! हो गइल नू आपन समाज 'करम-परधान' ! देखत रहीं आ गीनत रहीं, के कतना परले बा, आ के कतना पारि रहल बा ! अदौरी !

भोजपुरी भासा के उत्थान खातिर जे अधिका चिन्ता करत होखे, ओकरा खातिर मुखियाजी के कहलका इयादि पारि लीहीं जा - ए भोला, लोला लेलऽ.. सुखले संख बजावऽ.. !

हमहूँ एगो 'कोनहा' संख कीन लेले बानी ।

एही फरौरी में दिल्ली 'विश्व पुस्तक मेला' देखलस । कवन देस आ भासा के किताब ना लउकलस इहँवाँ ! आ का किताब ना बेचाइल एह जगहा ! खलिहा भोजपुरी भासा के पत्रकार आ प्रकाशक सोझा ना भइले । काहें ? भोजपुरी भासा में पत्रकारन आ प्रकाशकन के कमी बा ? भा अबर बा ई लोग ? नाः ! बस, एह जाना के लिहाज आ बेवहार आन भासा के पत्रकारन आ प्रकाशकन के बेवहार से निकहा फरक बा । ई फरक का ह, कइसन ह, रउआ बूझिये लेले होखब । त, अबहियों भोजपुरी के सम्मान आ मजगर जगहा खातिर रउआ अकुताइल बानीं ? होस राखीं जी ! भोजपुरी कतहीं सज आ सहा गइल नू, त कतना जाना के दोकान बन हो जाई । दोकान के चलत-चलावत रहे के काम बा । जय भोजपुरी !

फरौरी में मनत कुल्हि 'डे' के चर्चा से एगो अउरी बात मने परल । तारीख, दस फरौरी । देस के राजधानी करेजऊ के कहला में झाड़ू उठा लिहलस । तबले फगुनहटो ना चलल रहे ! तबो.. मन त मने ह ! 'ढेर भइल कुल्हि..', सोचि के ई कहलस जे अब सफाई होइये जाओ । बसात फूल-पतई कुल्हि बिटोरा गइली स । बाकी जाने काहें, बुझाता जे करेजऊ झाड़ू उठावते हाँफे लागल बाड़े । खोंखी का मारे पहिलहीं से अबर भइल हुनकर देहि 'स्वाइन-फ्लू' का सोर में बेदम भइल बुझाता ।

जनि पूछीं जे ई 'स्वाइन-फ्लू' ह का ? पक्का लजा जाएब । तबहूँ सुनि लीहीं, 'फ्लू' माने बोखार आ 'स्वाइन' माने सूअर ! सुअरन के अमेरिका में 'स्वाइन' कहल जाला । हमनी अस जमात के विद्यार्थी अनेरिये अंगरेजन के सिखावल अंगरेजी घोंटत 'पी से पिग, पिग माने सूअर' रटते रहि गइनीं जा, आ सुअरिया जाने कब दो अचके में 'स्वाइन' भ गइली स ! माने बेमरियो 'इश्टाइली' अंगरेजी में ! जा हो ए ओबामा ! अब इहे होईऽऽ ? आ, जाने ई सुअरिओ काहें अमदी के कान्हा प बेताल भइल बाड़ी स ! अपनहूँ गाँव-जवार में अबकी रिस्ता-नाता के निकहा लोग बाहर देस-दुनिया से आ रहल बा । बुझाते नइखे जे रिस्ता बचाईं, भा खुदे बाँचीं ? ओने फगुआ अलगे हुँमचले बा । का कहल जाओ जी.. ?

फगुनहट के तेजी बुझाये लागल बा । जले रउआ हमार ई गलथेथरई सुनब, बजट के भोंपू बाजि चुकल होखी । आसा आ उमेद में मन दोबर भइल जाता । लोग-बाग छछाते दू डेग आगा बढ़ि चुकल होखिहें । तीन-चार गो चीनी मिल आ पाँच-छौ गो फैक्टरी से धनी हो चुकल होखी पूर्वांचल ! जवार के देही प उन्नति के कुरता सम्हरले ना सम्हरात होखी । गहूँ, सरसों, दलहन के टीला प टीला बोझल होखी । एह अगूत बिकास के देखनिहार के धरनिहार लागल होखिहें ! अइसना में छोट-मोंट कृषि-सम्मेलन से का होला जी ? रहे दीं ई कुल्हि सम्मेलन आ बिकास दोसर राज्यन आला संगठनन का खाता में ! एह प उन्हनिये के खूँटा गड़ाइल रहो । काहें जे अनेरिया के किसानी करत भोजपुरिहा खेतिहर आजु ले का उपार लेले बाड़े, जे आजु उपार लीहें ? जेकर कवनो काम रद ना होखे ऊ नारद हवे । नारदजी अब मानुस मात्र आ देस-जवार के खेतिहरन के फिकिर ना करसु, आजकाल 'एकतारा' बजावे में लागल बाड़े । बाजा एक्के सुरिये काहें ना बाजो, बजावल जरूरी बा ! आजु ले भोजपुरिया क्षेत्र में ईहे भइल बा ।से बाजा बाजि रहल बा । तवना प, बबुआ के तिलका नू रहे ! बिहार के भोजपुरिहा बाछी बबुआ के खूँटा से बन्हाए के बाडी । **दिनवा हरेलू हो बेटी..**

बिहार के राज-काज आ एने के दासा प कहे के ढेर बा, बाकिर ई फेर कबो । अबहीं 'हइया-हो..' करत एगो अइसना खेवनहार के नाँइ बूड़ल बिया, जेकर दावा रहे जे अइसनन के नाँइ ना बूड़े ! बाकिर, नाँइ त नाँइ ह, बूड़ि गइल । से, नीति-अनीति के बात प का कहल जाओ ? ई कुल्हि अबहीं ना । आठ-नौ महीना के फुरसत दियाओ । अबहीं नीति-नियामकन के कुर्सी चाहीं । फागुनो में सोझ प्रान प बनि आइल बा ! फगुआ बनल रहो आ बनल रहीं जा हमनी के.. नीति-अनीति करत-सुनत-देखत !

गणेश जी बागी

गणेश जी बागी भोजपुरी आ हिन्दी साहित्य के उभरत साहित्यकार हई , साहित्यिक वेबसाइट ओपन बुक्स ऑनलाइन डॉट कॉम के संस्थापक आ पथ निर्माण विभाग बिहार सरकार में सहायक अभियंताके रूप में कार्यरत गणेश जी बागी पटना (बिहार) में निवास करेनी. इहा के पैतृक जिला बलिया ह. बागी जी छंद युक्त आ छंद मुक्त कविताई करेनी, इहाँ के लघुकथा बहुते पसन कईल जाला.

1.मन्थरा

गवना के एक साल बाद गोदी मे चान नियन बेटी लेके रूपा पहिला हाली नइहर आइल बाड़ी। घर मे तेवहार जइसन माहौल बा। अँगना में घर के सभलोग बटोराइल उनुका ससुरा के हालचाल पूछत बा।

"माई हम उँहवा बहुते खुस बानी। तोहार दमादजी हीरा बाड़न, उहाँ का हमेसा हमार धेयान राखेनी। हमार सासु लेखा सासु भगवान सभ के देसु, उनुकर बेवहार एकदमे पानी अस बा। दूनो ननद-भौजाई ना, बलुक बड़ बहिन लेखा माने ली लो।"

"आ तोर जेठ-जेठानी कइसन बा लो रूपा ?" माई खुस होके पुछली।

"जेठ आ जेठानी दूनो जाना बहुते नीक बा माई। ना लागे जे हम ससुरा मे बानी। एगो छोट बहिन नियन मान देवेला ऊ लोग | दूनो भाई राम-लछुमन जइसे रहेलन। उनुकर दुगो बेटा आ दुगो बेटी बाड़ी, दिनभर चाची-चाची कइले रहेलन सन। बड़की बेटी त इंटर के एह साल परीक्षो दीही।" माई लमहर सास खीच के हूँकारी परली।

"एगो बात जानत बाडू माई ! ससुर जी के गुजरला का बाद सउँसे परिवार के ज़िम्मेवारी जेठ जी उठवले बाड़न। आपन छोटी चुकी नोकरी से केहु तरी राजन के पढ़ा-लिखा के अफ़सर बना दिहले। साँचो अइसन आदमी लाख दू लाख मे एगो होला |"

रूपा के बात सुनिके नइहर के सभे लोग गदगद हो गइल।

"रूपा ऊ सब त नीके बा, बाकिर एगो बात हमार मानु", माई धीरे से बोललली,

"तें राजन से कहि के केहु तरे अलगा हो जो |"

"ई का कहत बाडू माई ?"

"हम ठीके कहत बानी। अब तोरो एगो बेटी बीया, ओकरो बारे में तोरा सोचे के चाहीं। तनिका दिन मे तोर जेठ के बेटी के बियाह-शादी करे के पड़ी आ कुल खर्चा ....."

"छी: माई, तू अइसन सोचत बाडू ? हमार जेठ त देवता ...."

"त देवता के मन्दिरे में रहे दे बुचिया" रूपा के बात बीचे मे काटि के माई बोल परली |

2.माई-किरिया

लफुअन के संगत में परि के कमे उमिर में गुड्डुआ के जुआ के लत लाग गईल। एक महीना बाद संघतियन के निहोरा प ऊ डेरात-डेरात फेनु जुआ खेले बइठ गइल। घरे आइल त माई के धेयान से देखे लागल। माई के तबियत ठीक-ठाक देख ओकरा तनि संतोष भइल। फेनु, दोसरा, तीसरा ,चउथो दिना जुआ खेललस, आ घरे आइ के माई के धेयान से देखलस। माई एकदमे ठीक रहली, उनुका कुछऊ ना भईल रहे। गुड्डुआ अब बुझि गइल जे ऊ अनेरिये डेरात रहे। माई खलिहा डेरवावे खातिर आपन किरिया खियवले रहली। एह किरिया-उरिया से कुछऊ ना होला।

कनिया माई

अमित झा

मोतिहारी , बिहार के रहे वाला अमित झा जी , भोजपुरी आ हिन्दी सिनेमा आ धारावाहिक खाति स्क्रिप्ट लिखले बानी । भोजपुरिया परिवेश प बनल कई गो हिन्दी धारावाहिक के स्क्रिप्ट लिखले बानी । संगे संगे स्वतंत्र लेखन के रुप मे अमित जी भोजपुरी आ हिन्दी मे लगातार लिख रहल बानी । आखर प इँहा के लेख अक्सर पोस्ट होला । एह घरी इँहा

दु दिन से बंटी के बम्बई में मन ना लागत रहे । अईसन लागे जइसे केहु आपन छूट गइल बा। चलत-चलत मन घबराये लागे... करेजा धुकधुकाये लागे आ पसीना चुवे लागे । बाकि समझ में ना आवे का हो रहल बा । अईसहूँ बम्बई में चाहे छोट काम करे वाला होखे , भा बड़ काम, काम के दबाव एतना बेसी रहेला कि आदमी के कब कवन बीमारी धई ली ई कहल मुश्किल बा । एहि से, आपन मन हलुक करे खाति बंटी समुन्दर के किनारे घुमें चल गईलन ।

समुंदर के हवा पानी बंटी के नीमन लागे लागल । समुन्दर किनारे लहर के किनारा छुअत पानी में टहले लगलन । जब-जब लहर गोड़ के छुये, बंटी के लागे कि केहु अपना ओरि घींच रहल बा । आ अचानक फ़ेरु उनुकर मन बेचैन होखे लागल बाकि अबकि बेर उ अपना आप के सम्हार ना पईले आ पानी में गिर गईलन । अईसे-जईसे केहु गांछि के काटि के गिरा देले होखे । बंटी के गिरत देखि कुछ लोग उनका ओरि भागल । लगिये भुट्टा बेचत धनेसरो बंटी के गिरत देखि उनुका ओर भगले । टांगि के उनुका के लगिये चीकन जगहि देखि के बालू प सुतावल गईल । धनेसर अपना भुट्टा के दुकान से एक लोटा पानी लाके बंटी के मुह प छिरिकले । बंटी के आंख खुलल तऽ कुछ लोग के अपना अगल – बगल में खड़ा देख पहिले तऽ ऊ सकपका गईलन । फ़ेर अचानक पाकिट में पर्स आ मोबाईल टोवे लगलन आ टोवते घरी उनुका मुह से अनसोहातही भोजपुरी में निकलल - “मोबाईल ! मोबईलिया कहां गईल ?”

उनुका मूह से भोजपुरी सुनत कि कुछ लोग उहां से मुंह घुमा के चल देहलस । असल मे बंम्बई के बनावट में इ मुंह फ़ेरे वाला उ लोग हऽ जेकर अपन भाखा भोजपुरीये हऽ, बाकि, सबके सोझा बोले बतियाये में ई लो के लाज लागेला । कुछ लोग अईसन भी रहे; जेकरा भोजपुरी ना बुझात रहे ,बाकि मोबाईल समझ में आ गईल । एह से पहिले कि केहु कुछ पुछीते धनेसर कहले - “चिंता जन करीं राउर मोबाईल हमरा लगे बा | रऊआ पानी में गिर गईनी ह आ हम उठावे गईनी त रउरा पाकिट से बटुआ आ मोबाइल कहीं भीज के खराब जनि हो जाउ एहि से निकाल लेहनी हऽ... हई लीं ।" कहि के धनेसर बंटी के मोबाईल दे दिहले ।

बंटी आ धनेसर के भोजपुरी में बतियात देख... जे दु चार लोग खड़ा रहे उहो उहां से हिन्दी आ अंग्रेजी में इ बोलत निकल गईल कि " सब ठीक है। All is well " । आ एने बंटी इ कहत धनेसर से फ़ोन ले लेहलन कि इ वाटर-प्रूफ़ ह पानी में खराब ना होई । धनेसर कहलक बाकि राउर कपड़ा त खराब हो गईल बा, समुन्दर किनारे भिजला के बाद हवा के कारण बंटी के जाड़ भी लागत रहे । धनेसर के कहला पर बंटी उनुका भुट्टा के दुकान पर , आगि के जरि जा के खड़ा हो गईलन । धनेसर उनका के एकदम गरम-गरम तुरते के आगि

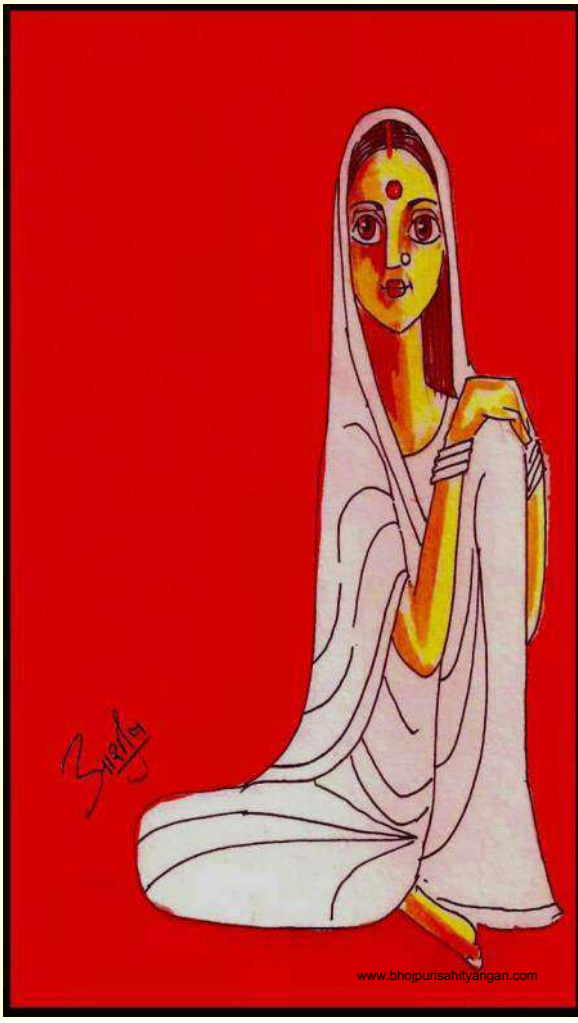

पर सेकल आ ओपर तेज मरिचा-नून-नीबू लगा के भुट्टा खाये के देहले ताकि बंटी के देंहि मे तनी गरमी आवे। तलेले बंटी के फ़ोन के घंटी बाजल , गांव से बाउजी के फ़ोन रहे।

बंटी जईसहीँ फ़ोन उठवलें बाउजी पुछिलन - का हो , ठीक बाडऽ नु ? अपना के सम्हारत बंटी कहलन, हं हम ठीक बानी का भईल रउआ अईसे काहे पुछऽ तानी ? बाउजी तनी चीढ़ल मन से कहलन कि तोहर कनिया माई दु दिन से तबाह कऽ के ध देले बाड़ी, कई दिन से कहत बाड़ी कि पुछि ना बबुआ कईसन बा, बंटी कईसन बा ? तहरा कनिया माई के आपन तबीयत दु महीना से खराब बा, बाकि पिछला दु घंटा से आ के दुआर पर बईठल बाड़ी, तोहर हाल जाने ला, ल बतिया लऽ। बंटी के कान में कांपत आवाज परल- बबुआ ! बंटी के अईसे लागल जईसे मय बेमारी फ़ुर्र हो गईल। उ अपना कनिया माई के समझावत कहलन कि हम ठीक बानी चार दिन बाद छुट्टी शुरू होई हम आवऽ तानी गांवे। रऊआ अपना तबीयत के धयान रखीं। ओने से कांपते अवाज में कनिया माई कहली " तहार हाल जान गईनी, तू नीमन से बाड़ऽ अब हमरा कुछो ना होई। तु आराम से आवऽ बाकि अबकि दुबर हो के अईलऽ त फेरु घर में घुसे ना देब"। बंटी पुछलें - किशोर आवऽ तारन कि ना ? कनिया माई टुटल आवाज में बोललीं "नाऽ उनका छुट्टी नईखे "। बंटी कनिया माई के समझा के कि चार दिन में उ आवऽ तारन फ़ोन रखि देहलन।

कनिया माई से बतिया के उनका तनी नीमन लागल। एने धनेसर के जब उ भुट्टा के पईसा देवे लगलन धनेसर मना कई देहलन । बंटी के धनेसर से अपनापन लागल। बंटी मुस्कुरा के कहलन "हमार मदद कईनी, राउर इ अहसान हमरा उपर बा ।" धनेसर मना कर दिहले- ना ना जिनगी बचाईला ए पईसा ना लेब"। धनेसर के बात सुनि के बंटी कहले कि - घोड़ा घांस से दोस्ती करी तऽ खाई का ? धनेसर भुट्टा के आगि पर सेंकत कहलन- बबुआ अगर घोड़ा के घास से दोस्ती हो जाई त उ मरि जाई बाकि घास ना खाई। चुकि धनेसर फ़ोन पर बंटी के बतियात सुनले रहलन त पुछ्लन- छोड़ऽ इ बतावऽ, तोहर माई ठीक बाड़ी नु ? बंटी कहलन - हमर माई तऽ पन्द्रह साल पहिले ही स्वर्ग सिधार गईली , इ हमार कनिया माई रहली हऽ।

कनिया माई ? धनेसर बुदबुदईलें, फ़ेर पुछलन कि तोहार उमिर केतना बाऽ? अचानक ई सवाल से बंटी चौंक के पुछिलन काहे ? धनेसर कहलन ना मने, पच्चीस के तऽ होखबे करबऽ। जब तोहर माई मरली तब तु दस से उपरे के होखबऽ, तबो तोहार बाउजी दोसर बियाह कई लेहलन ? बुढ़ऊती में अईसन का जरूरी लागल रहे ? धनेसर के एह सवाल प बंटी के खीस ना बरल, हंसी आ गईल आ बंटी जात – जात फ़ेर रूक गईलन। मुड़ले आ फेरु ओहि बालु पर बईठ गईलन। कनिया माई हमार माई जरूर हई बाकि हमार बाबुजी के मेहरारू ना, उ तऽ भागिरथ काका के मेहरारू हई। आ फ़ेर बंटी कनिया माई के बारे में धनेसर के बतावे लगलन।

कनिया माई ! उ हमार माई ना हई बाकि हम उनकरे दुध पी के पोसाईल बानी। पता ना इ संजोग रहे आ कि कवनो दोसरा जनम के रिस्ता । हम चार भाई में सबसे छोट हईं , मरे से पहिले हमरा के हमार माई बतवले रहली। हमरा जनम के ठीक दु महीना पहिले कनिया माई के आपन बेटा किशोर के जनम भईल रहे, हमार जनम भईल बाकि हमरा माई के दूध ना उतरल आ डाक्टर कह देलस कि माई बहुत कमजोर बिआ, येही से इ दिक्कत बा। बाकि जनमत लईका के इ का मालूम कि ओकरा माई के का दिक्कत बा भूख से बिलखत हमर आवाज कनिया माई के कान में परल त उ हमरा अंगना में आ गईली। डरत- सहमत ही उ इ बात हमरा माई से कहली कि जब बबुआ बेसी रोअस तऽ हमरा के कहिह दुल्हिन हम दुध पिआ देब, इ बात जईसे हमरा इया (दादी) के कान में परल उ पूरा घर माथा पर उठा लेहली । कनिया माई के बहुत उल्टा सीधा लगली बोले। तीन – तीन गो लईका पोस लेले बिआ हमार बहुरिया तोहरा अईसन पहिला ना हऽ। अरे दूधे नु नईखे उतरत, कवनो बात नाऽ, गाय-बकरी के दूध से पोसा जाई बाकि दोसरा के देह के दूध ना दियाई। अब इया के , के समझाओ कि गाय-बकरी के दूध भी तऽ दोसरे के देह से आवऽता। ओ समय तऽ माई चुप रह गईली, कनिया माई भी चार बात सुन के चुपचाप चल गईली बाकि माई तऽ माई होले। हमार बिलखल, दुनु माई लो से ना देखल गईल । फ़ेर इया से चोरा-छुपा के कनिया माई हमरा आ किशोर दुनो के दुध पियावस आ हमनी ला कबो उनकर दूध कम ना परल, इ बस दैवी कृपा ही रहे।

जब हम डेढ़ साल के रहनी तब एक दिन इया के नज़र हमरा प दूध पीयत घरि परि गईल । इया , कनिया माई के बहुत उल्टा सीधा बोले लगली , कहे लगली कि , हमार खानदान नास देहलक, लईका के जात बदल देहलस । इया, कनिया माई के उनकर औकात-जात सब देखा देहली । आ तब से चार साल, जब ले इया जिअली कनिया माई हमरा अंगना ना अईली । रउवा इहो कहि सकेनी कि इया उनकरा के हमरा अंगना ना आवे देहली ।

भागिरथ काका भले हमनी के पडोसी रहलन बाकिर उनकर जात अलग रहे । हमार घर बाभन टोली के सबसे अंत में रहे आ भागिरथ काका के ग्वारटोली के पहिलका घर । एसे हमनी के पडोसी रहलन । हम गाय – भईंस के दूध पीये लायक हो गईल रहनी ओहि से ओह घटना के बाद हम ओइसहीँ पोसईनी । बाकिर माई के दूध तऽ माई के दूध ही होला । जब बड़ भईनी तब मालूम भईल कि जात बदलला से माई के दूध आ ओकर ताकत ना बदले ।

इया चल बसली आ कनिया माई गते-गते फ़ेर हमरा घरे आवे लगली । हम आ किशोर दुनो गोड़ा छेटहर हो गईल रहनी जा, आ बाउजी गांव के मुखिया । गते-गते पता चलल कि बाउजी के गांव के मुखिया बने में कनिया माई के बढ़ हाथ रहे । बाभन टोली से तऽ उनकरा समर्थन रहबे कईल बाकि बाउजी, सगरे गांव में आपन प्रभाव जमावे ला इ कहत फ़िरले कि " हम उंच-नीच में कवनो भेद ना समझी, भागिरथ-बहु त हमरा छोटका बेटा के दूध तकले पिववले बाऽडी । उ बंटी के “कनिया माई” हऽई " । बस ओह दिन से गांव के मय लईका उनका के कनिया माई कहे लगलन स । फ़ेर कनिया माई के इ कह देला से कि उ अपना बंटी में आ हमरा किशोर में कवनो फ़रक ना समझली, बाउजी के धाक अऊर जमि गईल । आ ग्वारटोली से भी बाउजी के खूब समर्थन आ वोट मिलल, उ मुखिया हो गईलें ।

समय बीतत गईल नासिक में कुंभ लागल रहे हमार माई जिद कईली कुंभ नहाये के । बाउजी के पंचायत के चिंता रहे आ हमरा से बड़ तीनो भाई लोग के अपना पढ़ाई अपना भविष्य के । केहु के माई के चिंता ना रहे, से केहु तैयार ना भईल बाकि भागिरथ काका तैयार हो गईलन नासिक जाये ला । हम अभी एतना बड़ ना भईल रहनी की माई के संगे हमरा के जाये दिआईत बाकि हम स्कुल जाईल शुरू कई देहले रहनी, से हमहुं साथे ना जा पवनी । कुंभ नहाय के दौरान भगदड मचल आ हमार माई ओह भीड़ में का जाने केने कचरा-दबा गईल दम फुल गईल , बाकि भागिरथ काका कईसहूँ बांच गईलन । छव दिन बाद बहुत जोहला प माई के लास मिलल, गावें से बाउजी , बड़का भईया और दु - चार लोग गईल रहे । ओहिजा जवन नदी में नहा के माई मोक्ष पावे ला गईल रहली ओकरे किनारे उनकरा के आगि दिआईल । गांव में सगरो चर्चा होखे लागल कि बड़ पुनी औरत रहली हऽ धाम पर मरल बाड़ी सीधा स्वरग मिलल होई । माई तऽ स्वरग चली गईली बाकि हम उनकर अंतिम दरसन भी ना कई पवनी । जब बाउजी आ भागिरथ काका लौटल लोग तब हमरा मालूम पड़ल की अब हमार माई कबो ना लौटीहें ।

हम कहे के त बड़ हो गईल रहनी, बाकि माई बिना सुतत घरी चिहुक के उठ जाई । डर लागे जेही कारण एक हाली कस के जर (बोखार) हो गईल । डागडर दवाई भले दिहले बाकि जर तब उतरल जब कनिया माई के आंचर मिलल । फ़ेर तऽ अईसन हो गईल कि बिना कनिया माई के आंचर के ओढले नीने ना आवे । कनिया माई के भी हमरा ला अचानक दुलार बेसी बढ़ गईल रहे आ भागिरथ काका के इ हुक धऽ लेहलस कि इ लईका के हमही टुअर कई देहनी । हमार बेसी समय कनिया माई के संगे बीते लागल । एह सब के बीच ना जाने कब किशोर अपना दिमाग में इ बात के बईठा लेहलक कि ओकर माई हमरा के बेसी आ ओकरा के कम मानेली । समय के साथ ओकरा मन में इ बात घर बना लेहलस आ हम अपना सबसे अच्छा इयार के, जे हमनी के दुनो एक संगे कनिया माई के दूध पीयले रहनी जा । पिअत घरी तब ना लड़नी जा बाकि अब अपना से किशोर के दूर होत देखनी । शायद उ दुरी फ़ेर कबो ना मिटल । कनिया माई के आंचर के खूंट से हम जब चाहि पईसा खोल के ले ली, बाकि किशोर अब उनकरा हाथ से खाये के भी मना करे लागल । कनिया माई बड़ा मुस्किल से ओकरा के समझा पावस । हं हमार बाउजी जरूर कनिया माई के एहसान उतारे ला किशोर के पढ़ाई के खर्चा भी देवे लगलन । किशोर पढ़े में होशियार भी रहे, दिन बितल- साल बितल हम आपन सपना लेके बम्बई आ गईनी आ किशोर एम.बी.ए. कई के लंदन चली गईल । लंदन खाति विदा होत बेरा किशोर ना

www.bhojpurisahityangan.com

हमरा से गला मिलल ना कनिया माई के पलट के देखलक। कनिया माई के आंख में भी ओकरा के विदा करत लोर ना रहे, शायद दिन-ब-दिन किशोर के बेरूखी उ लोर सुखा देले रहे। हं, कनिया माई के उ लोर बहल जब हम बम्बई जाये के बात कईनी। आ कनिया माई के गोड़ छुवे गईनी तऽ आसिरवाद में ना जाने केतना ठोप लोर गंगाजल के रूप ले के हमरा माथा पर गिरल। शायद सांचहूँ गंगाजल से नहा के भी हम ओतना पवित्तर ना होईती जेतना कनिया माई के आसिरवाद में बहल लोर से नहा के भईनी। आज ओही आसिरवाद से फ़ल – फुल रहल बानी।

समुन्दर किनारे बईठल धनेसर के भुट्टा सेके वाला आग ठंड़ा हो गईल रहे बाकि उनका आंख में पानी रहे। उ कहलन - बबुआ ! इ दुध के कर्जा तऽ तु ना उतार पईबऽ। बाकि चार दिन के इंतजार मत करऽ ... जा के उनकरा से भेंट कऽ आवऽ। बंटी के धनेसर एकदम आपन लगले। बरबस ओकरा से कह दिहले-धनेसर भाई, भागिरथ काका इ सब ला हमारा बाउजी के एहसान आजो मानेले। उनकरा हिसाब से बाउजी के पईसा से किशोर इ लायक बनलें। बाकि हमार मन हमेसा कचोटेला कि का हमरा कारन किशोर अपना माई से अलग हो गईल ? धनेसर कहले- बबुआ, इ सब नसीब के खेल हऽ। आ तोहर कनिया माई के परताप के फ़ल जे तु आ किशोर दुनो अपना जगह पर फ़लत-फुलत बाडऽ। जा... जेतना जल्दी हो सके अपना कनिया माई से भेंट कऽ आवऽ।

बंटी धनेसर से विदा लेहलन, आ अपना घर के ओरि चल देहलन। जईसे जईसे उ अपना बम्बई वाला घर ओरि बढ़े लगलन, ओइसे उनुका के कनिया माई के याद सतावे लागल। उनकरा एह बात के एहसास भईल कि जाने इ कवन बंधन हऽ कि इहां बंटी बेहोश हो के गिरलन ओने कनिया माई बंटी के बाउजी के फ़ोन करे ला कहली। अपना घरे पहुंचत-पहुंचत उ निर्णय ले चुकल रहलन कि बिहाने घर ला निकले के बा। आफ़िस में खबर कई के उ घर ला निकल गईलन। हवाईजहाज धई के ऊ भाग के घरे पहुंचलन। बाउजी के खबर ना कईलन ना त उ कहिते कि अईसन कवन आफ़त आईल बा कि हवाईजहाज से आवऽ तारऽ। बाकि जब उ दुआर पर पहुंचलन तऽ दुआर पर भीड़ लागल रहे , बाउजी केहु से कहत रहलन कि अरे किशोर आ बंटी के खबर कई द लोग। भागिरथ काका पेटकुनिया लगवले माटी में लोटाईल रहन। बंटी के करेजा धक से रह गईल, समान हाँथ से छुट के गिर गईल, बंटी ज़ोर से चिल्लईलन, “कनिया माई ”... सभे बंटी के ओरि देखलस , उ हंकासल पिआसल भाग के कनिया माई के लगे पहुंचले, जे उनकरा से विदा ले के एह दुनिया के छोडि के चल गईल रहली। बंटी कनिया माई के पकड़ के फ़ुका पार के रोये लगलन। उ कनिया माई के केतनो आवाज देहलन बाकि माई ना उठली।

आगि देवे के बेरा भागिरथ काका आगे आ के बंटी से कहलन कि अपना कनिया माई के तु ही आगि दऽ , इ उनकर अंतिम इच्छा रहे। कनिया माई के आगि देत बंटी के लागल जईसे करेजा फ़ाट जाई। तब उनकरा बुझाईल कि काहे कुछ दिन से बम्बई में उनकर मन घबरात रहे , जईसे उनकरा मालूम रहे कि किशोर ना आई। उनकर अनुमान सही रहे, किशोर विजा के बहाना बना देहलक, उ ना आईल। पता ना ओकरा अपना माई से का लड़ाई रहे। आग के लपट बढ़त गईल , आ ओह आग में कनिया माई सब केहू के छोडत बंटी के अंगुरी के आपन एहसास करावत चल गईली ।

दु दिन बाद बम्बई लऊटत बेरा बंटी देखलन कि दु गो लईका नीम के गांछि के नीचे लड़त रहल सन। एगो कहत रहे तु हमरा माई लगे मत अईहे उ तोहार माई ना हई। दोसरका कहे कि ना हम आएम, उ हमार “कनिया माई “ हई। बंटी के आपन बचपन इयाद आ गईल, उ जा के दुनो के समझवलन, बबुआ मत लड़ऽ लोगन ना तऽ कनिया माई कहीं चल जईहन आ फेरु कबो ना अईहन। दुनो लड़ल छोड़ देहलन सऽ, आ कनिया माई-कनिया माई चिचिआत गांव ओरि भगलन सन। बंटी अपना कनिया माई के इयाद लेहले बम्बई रवाना हो गईलन।

www.bhojpurisahityangan.com

माई बीया दे गाछ उगाईब

सरोज सिंह

बलिया , युपी के रहे वाली सरोज सिंह जी , हिन्दी भोजपुरी आ बंगला साहित्य मे उभरत एगो बरिआर नाव बानी । हाले मे इँहा के लिखल हिन्दी काव्यसंग्रह " तुम तो आकाश हो " आईल ह । भोजपुरी मे सैकड़न गीत गजल कविता कहानी के रचना कई चुकल बानी । पाक कला मे दक्ष सरोज जी एह घरी गाजियाबाद मे बानी ।

आज 'अनिल बो' के अगरैनी धरईले नइखे धरात ।फन हेने फन होने कुल गिरहस्ती समेटे में अझुराईल बाड़ी । कबो आकस-बाकस कसाता कबो रसोई- बासन बन्हाता । कई बरिस के सहेजल सपना आज पूरा हो रहल बा । अनिल के मुंबई में नौकरी करत 5 साल हो गईल होली-दिवाली के छुट्टी में ही आईल हो पावत रहल । बियाह के तुरंते बाद मुंबई में नौकरी लाग गउवे । उहाँ रहे के कवनो ठौर ठिकाना रहे ना एसे अकेलहीं जाए के पड़ल। अनिल जब छुट्टी से आवस त इंदु के एकही रट लागे "ए जी जल्दी से कवनो घर देखीं ना ,बबलू बड़ हो रहल बा इस्कूल में भरती करावे के होई ना तs इहाँ के लईकन के संगे छिछियात माटी हो जाई "।

अनिल आपन जमा-पूंजी लगा के और बैंक से लोन ले के एगो फ्लैट बीसवां माला पर बुक करवा लेहले ,ओकर दखल भी मिल गईल ।

बबलू भकुअईला लेखां छन आजी के लगे छन बाबा के कोरा चढ़ के इहे बार बार पूछ रहल बा "काहें उहाँ जायेके बा इहे त आपन घर ह ? सुनके आजी के अँखियाँ लोरा जाता बाकी बाबा नीक से समुझsवले "बाबु , इहाँ नीक इस्कूल नइखे नू आ तहरा तs पढ़ लिख के बड़ आदमी बने के बा नू ?

"ए बाबा, फेर हमार चिरईयन अउर रुखियन के दाना के खियाई ? इहे त हमर संघतिया हई सन" ।

बबलू के गाछ-बिरिछ,चिरई चुरंग से बहुत मोह रहे, बाबा के संगे बगईचा घुमल अउर रात में रामायण-महाभारत के काथा सुनल खूब भावे ।

माई के आँचर खींच-खींच के रिगिर करे लागल "माई हम इहें रहब आजी-बाबा लगे" माई दुलार से मनावे लगली अरे बाबु उहाँ नया नया खेलवना मिली खेले के, बैटरी से चलेवाला । आपन घर खूब ऊपर असमान पर बा। उहाँ से नीचे समुन्दर लऊकी । साफ़ -सुथरा कवनो जगह ,मच्छर फतिंगा हैरान ना करिहेंसं ।

ओके असमान वाला बात बहुत सोहाईल सोचलस चलs जोन्ही चनरमा तs मिलिहें उहाँ संगी साथी ।

नया जगह, नया फ्लेट में अनिल के परिवार शिफ्ट हो गईल। "अनिल बो" अब इंदु बन के बहुत खुस रहली । अनिल के भी आफिस से आईला के बाद परिवार के संग और घर के खाना सज से भेटाए लागल । बबलू के दाखिला पास के इस्कूल में हो गईल मगर बबलू उहाँ के माहौल में घुल मिल ना पवलस । इस्कूल से आईला के बाद दिनभर बालकनी में लटकल रहे । सांझ होए के इंतज़ार करे काहे से कि ओके अकेले लिफ्ट में जाए के मनाही रहल सांझि खा इंदु नीचे पार्क में ले जास । बबलू के तब लागे जइसे क़ैद से आजादी मिलल जहाँ खुल के सांस ले सकत रहल ।

www.bhojpurisahityangan.com

असहीं छुट्टी के दिन बबलू बालकनी में छन हाथ ऊपर करे छन नीचे, अनिल कुछ देर से देखत रहले फेर लगे जाके बबलू से कहले-

"ई का करऽ तारऽ ?

खिसिईला लेखा बबलू जवाब देहलस- "माई काहे हमरा से झूठ कहली कि हमनी के घर आसमान में बा, देखऽ त हमार हाथ कहाँ जा पावऽता असमान के लगे ? आ ना नीचे जमीन के जरी ? "बाबा कहेले जे न असमान में रहे अउर न जमीन पऽ उ "तिरशंकू" होला " हमनि के फेर तिरशंकू भईनी जा नू ?

भकुआए के बारी अब अनिल के रहे.... फेर बबलू पुछ्लस- पापा, इहाँ चिरई भी ना लऊके-लिसं काहें ?

अनिल माथा खजुआवत कहलन -" इहाँ गाछ नईखे नू एसे उ सब आपन खोता कहाँ बनइहेंसं एहिसे चिरई इहाँ ना लउके-लिसं "।

इहाँ गाछ काहे नईखे ?

दोसरका सवाल फेर दगा गईल । अनिल कहलन काहे से कि, मकान-घर बनावे खातिर माटी के ऊपर कंकरीट सीमेंट बीछावल जाला ...अउर गाछ माटी में जामेला नू "।

एतना सुने के रहल कि बबलू के आँख में चमक उभरल कहलस अच्छा ! सच्चो ?

सांझ के जब बबलू अनिल के संगे घूम के नीचे से आईल त ओकरा दुनु हाथ में माटी भरल रहे ...बहुते उत्साह में माई के गोहरा के कह्लस

"ए माई देख माटी ले आईल बानी,अब जल्दी से बीया दे गाछ उगाईब, गाछ उगी त फेर चिरई रुखी अइहनसन "

अनिल आ इंदु के ई बात सुन के काठ मार दिहलस, बबलू के मन के ब्यथा अब जाके सायेद ठीक से बुझाईल उनका लोग के !!

फिल्म , भाषा आ कुछ बात

नितिन चंद्रा

डुमरांव , बिहार के रहे वाला युवा निर्देशक , भोजपुरी सिनेमा मे सकारात्मक चर्चा के शुरुवात करे वाला देसवा फिल्म के निर्देशक नितीन चंद्रा जी , भोजपुरी भाषा आ साहित्य खाति कलम से ही ना कैमरा से भी आपन शत प्रतिशत दे रहल बानी । एह घरी इँहा के मुम्बई मे बानी ।

साल 2010 के बात बा, हम आपन फिलिम खाति बक्सर जिला में लोकेसन जोहत रहनी । सिनेमाई भासा में एकरा के "रेकी" कहल जाला । ई सब्द मिलिटरी के शब्द हs । बरहमपुर, डुमरी, नवडेरा ई कुल्ह छोट बड़ कस्बा बा हमनी के भोजपुर इलाका में । ओकरे में डुमरी वाला रोड से पछिम, खड़न्जा रास्ता (अब बन गईल होखी) अगवा बढ़ के आवेला बलिहार, बाद में ओहिजा हम शूटिंग भी कईले रहनी । साँझ में गांव के कुछ लोग जुटल रहलन, एक ठो उमरगर आदमी कहलन के भोजपुरी फिलिम बनावे जा तारs त "नदिया के पार" नीयन बनइह, सीन - सीनरी कुल एकदम गांव के डलिह । हम कहनी के नदिया के पार त भोजपुरी ना रहे, त कुछ नवका लोग बईठल, कहलन के ना भइया भोजपुरिये रहे । हम कुछ कहनी । लेकिन कुछ बूढ़ पुरनिया लोग कहलस के हाँ भोजपुरी त ना रहे बाकिर पृष्टभूमि त भोजपुरिये नु रहे । ओकरा बाद उ लोग आज के भोजपुरी फिल्म के लेके दू चार बात भी सूना देलन, के तू लोग सिनेमा में अईसे करेल आ वईसे करेल । हम भी चुप रहनी, हम ना पूछनी के उ लोग काहे चुप बा अश्लीलता के सवाल पर ।

एगो फिल्मकार जतना अपना दरसकन से सिखेला ओतना कवनो फिल्म स्कूल में भी ना सीख सकेला । सिनेमा के गूढ़ सीखे खाति समाज के भीतर समाज के साथ रहेके पड़ेला । उ जवन २४ फ्रेम्स पर सेकंड कहल जाला, मने एक सेकण्ड में २४ गो तस्वीर जब आँख से गुजरेला तब हमनी के महसूस होला के पर्दा पर कवनो चीज़ चलल (movement) । सिनेमा प्रोजेक्टर से एक सेकण्ड में २४ फोटो के देखावल आ दर्सक के उ फोटो से जोड़ल, बस अतने में पूरा सिनेमा के व्यवसाय जुडल बा । दरसकन से रिस्ता जोड़े के कवायद सिनेमा बा । अब हम कइसन दर्सक खाड़ा करीं अपना खातिर उ सिनेमा बनावे वाला के संस्कृति आ सोच बा । आम तौर पर इहे कहल जाला के सिनेमा विजुअल मीडियम बा, मनोरंजन बा आ व्यवसाय के । लेकिन हमरा नज़र में अऊर भी बहुत कुछ बा सिनेमा । सिनेमा सेलुलॉइड के परत पर, प्रोजेक्टर के उजियार में, रौशनी में नहाईल किरदार के हाव भाव, रंग रूप, चाल चलन, खान पान, कपड़ा लत्ता, भेस भूसा, घर दुवार, परम्परा त्यौहार आ का मालूम कतना तरह तरह के दृश्य के समेट के एगो कहानी कहल जाला । अवरी अगर इहे दृश्य कुल से आत्मीय जुड़ाव हो जाए त ओकरा के मनोरंजन कहल जाला, कम से कम, हम त जुड़ाव (involvement/engagement) कहिला ।

हम पहिला हाली "नदिया के पार" 90 के दशक में देखले होखब, हमनी किहाँ एक ठो भी. सी. आर. रहे पटना में, ओकरा साथे दु चार गो हिंदी आ भोजपुरी के

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरिया लोग जवन सामाजिक ढांचा में पलल बढ़ल बा लो, उ ढांचा बहुत बढियां से परिभाषित बा आ ई कहल जाव के अस्सी के दशक तक बहुत परिभाषित रहे। लेकिन आर्थिक उदारीकरण के फायदा, हमनी के क्षेत्र में ना पहुँचल।

कैसेट हमेसा रहत रहे, हमरा इयाद पड़ता के हिंदी के ब्लफ़ मास्टर, तेज़ाब आ भोजपुरी के दंगल आ अवधी के नदिया के पार रहत रहे। हम अपने भोजपुरी क्षेत्र के बानी त हम ई पूरा प्रमान आ जिम्मेदारी के साथ कह सकेनी के "नदिया के पार" भोजपुरी फिल्म नईखे। ई खांटी अवधी आ कहीं कहीं हिंदी के मिश्रण बा, कई एक जगह पर जौनपुर मऊ वाला भोजपुरी के एक आध वाक्य मिल जाई बाकिर फिल्म भोजपुरी नईखे। जइसे जब काकी, तिवारी से पुछेली "का हो तिवारी अब तबियत कईसन हौ ?" बक्सर जिला में हौ के जगह कईसन बा, बलिया में कईसन बा/बड़ुए, आरा में कईसन बा/कईसन ह कईसन बाटे/हटे अलग अलग भोजपुरिया क्षेत्र में अलग प्रयोग होला, आ कई जगह पर अदला बदली भी होला। भोजपुरी के कई गो प्रकार बा, चंपारण के भोजपुरी में नेपाली सुर भी मिल जाला त कबो मिथिला के मिठास, त छपरा, सीवान, गोपालगंज में भोजपुरी सुगम आ आरा बक्सर बलिया के खांटी लठमार, लेकिन ओकरा में भी एक अपने धुन बा, झकझोरे वाला बात, जवन गुलाब बाई अपना गाना "**आरा के लोगवा बा कठोर**...." में गवले बाड़ी। लेकिन उ कठोरता के पीछे रोमांस आ साहस भी बहुत बा आरा के लोग में।

लेकिन "नदिया के पार" में एक प्रतिशत भी भोजपुरी भाषा नईखे, ई खांटी अवधी फिल्म बिया। बाकिर हमरा आस्चर्ज नईखे के समस्त भोजपुरी समाज एकरा के भोजपुरी फिलिम समझेला आ एकरा साथे ओतने रिस्ता बनल बा जेतना के "गंगा मइय्या तोहे पियरी चढ़इबो" चाहे "माई" आ "दंगल" से बनल।

जईसन के हम पहिलहीं कहनी के "सिनेमा सेलुलॉइड के परत पर, प्रोजेक्टर के उजियार में, रौशनी में नहाईल किरदार के हाव भाव, रंग रूप, चाल चलन, खान पान, कपड़ा लत्ता, भेस भूसा, घर दुवार, परम्परा त्यौहार आ का मालूम कतना तरह तरह के दृश्य के समेट के एक कहानी कहे के कवायद बा।" भोजपुरिया लोग के "नदिया के पार" से जुड़े के पिछे कई गो कारण बा। लेकिन उ जाने से पाहिले इहो जान लिहीं के भोजपुरी एक परिपूर्ण भाषा बीया, एकर व्याकरण शब्दकोष भी बा। 400 साल तक कैथी लिपि, जवन के भोजपुरी लिपी बिया, ओकर इस्तेमाल पूर्वांचल आ बिहार भर के कोर्ट सब में होत रहे लेकिन 1872 के बाद एकरा के खत्म क दीहल गईल। मुग़ल काल में भोजपुरी नस्तलीक़ लिपी में लिखल जात रहे, मुस्लिम शासक लोग के समझे खातिर।

भोजपुरिया लोग जवन सामाजिक ढांचा में पलल बढ़ल बा लो, उ ढांचा बहुत बढियां से परिभाषित बा आ ई कहल जाव के अस्सी के दशक तक बहुत परिभाषित रहे। लेकिन आर्थिक उदारीकरण के फायदा, हमनी के क्षेत्र में ना पहुँचल। आर्थिक सामजिक सांस्कृतिक आ वैचारिक पतन होत होत होइए गईल, आदमी पलायनवादी गईल। इंन्टरनेट युग में हमनी के एकदम कगार पर बानी जा।

"नदिया के पार" 1981 में उ दौर के सिनेमा रहे जहां पर हिंदी सिनेमा के दिग्गज चारो तरफ से सिनेमा के घेरले रहे, अमिताभ, धर्मेंदर, राजेश खन्ना, विनोद खन्ना, के दौर रहे। लेकिन तबो नदिया बनल आ उहो खांटी अवधी में आ एक कल्ट (cult) सिनेमा के स्टेटस पवलस। कारण रहे ईमानदारी से बनावल गईल, पूर्वांचल रचल बसल एक फिलिम।

नदिया के पार में एक छोट चुकी गाँव गंगा तट के सभ्यता, सूर्योदय से सुरुआत होला, एकदम जमीनी सुख

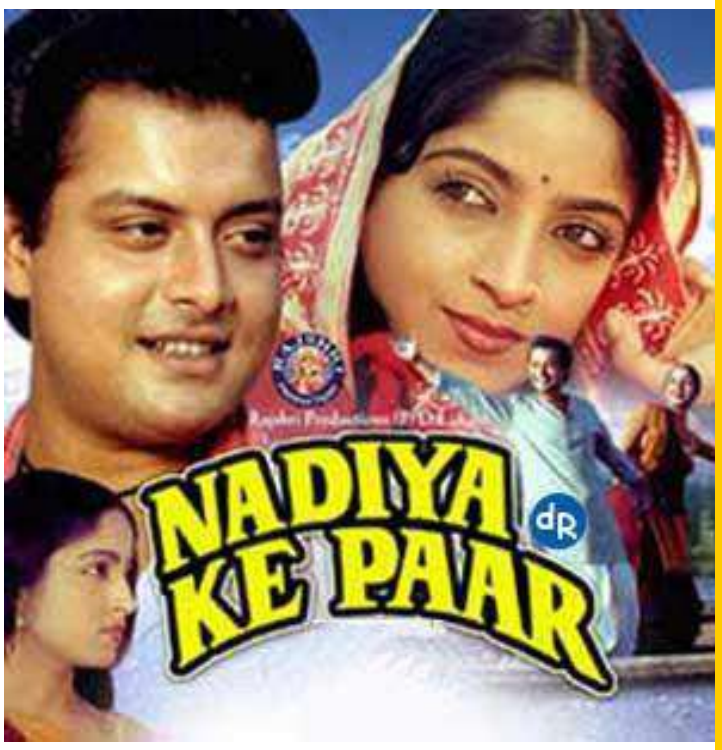

दुःख, गीत संगीत, उ जवन कहल जाला नु मिट्टी के खुसबू, उ रहे नदिया के पार में। खेत, बैलगाड़ी, किसान, मिटटी के घर, खपड़ैल के झोपड़ी, गांव के कुंआ, माटी से लीपल आँगन के जमीन आ मांटी से लीपल गांव के दिवार पर सुखत मूली के गुच्छा, आ ई कुल के बीच में नरियर के रसई से बनल खटिया पर खादी के कुर्ता अवरी धोती पहिर के फिलिम के मुख्य किरदार उंघाता । इहे उ खुसबू बा जवन अचेतन मन प असर करेला आ हमनी के जुड़ जानी। भासा नइखे लेकिन संपर्क भोजपुरिया बा, हर चीज़ के माध्यम से । हमनी के फिल्म इंडस्ट्री में कहल जाला के "God lies in detailing" मने "विस्तार में ईश्वर के वास बा।" उहे विस्तार/detailing से रउवा लोग जुड़ जातानी। भासा के छोड़ दीं त संस्कृति एक्के जईसन बा। अब जइसे एक पात्र कहता के "वैदवा बेवकूफ़ नहीं है, एक का चार वसूलेगा", बहुत अईसन डायलॉग बाड़ी सन जवना में भोजपुरिया समाज के मानस पटल साफ़ लउकेला। जवन तरीका से गूंजा आ चन्दन के प्रेम परवान चढ़ता, हमनी के भोजपुरिया समाज में भी अईसने होला। सुन्दर छेड़खानी, मर्यादित बात चीत, भाव के शुद्धता, जवन के अब कवनो सिनेमा में नईखे।

"नदिया के पार" जवन समय आईल रहे, लगभग उहे टाइम पर प्रकाश झा दामुल बनावत रहलन। नदिया के पार जईसन भाषाई ईमानदारी अगर दामुल में रहित त आज भोजपुरिया दर्सक के लगे अपना भासा में एगो मास्टर पीस हो सकत रहे। लेकिन उ ऐतिहासिक गलती हो चुकल बा।

नदिया के पार देखि के जहिया भोजपुरी दर्सक सिनेमाघर से बहरी निकलल होई त अपना साथे फाग, गांव के संस्कृति, कोहबर के प्रथा, लौंडा नाच के मस्ती, मर्तबान, रौशनदान, पेट्रोमैक्स, आ उ मय चीज़ जवन भोजपुरी परिवेश में भी मिलेला ऊ ले के निकलत होई सिनेमा हाल से। आ उ गाना कईसे भुलाइल जा सकेला, तुलसी के सेवा चनरमा के पूजा, कजरी चईता, अंगनवा में पूजा। इहे हटे भोजपुरिया समाज आ "नदिया के पार" से नाता।

रेंगनी

हौले से झिंगुर के आवाज़ चांदनी में सुगबकात हाथ आपन हथेली पे ही रगड़त ,बार-बार टिस नियन दिल में उमड़त एगो सवाल ,जवाब से पहिलही दुगो ना चारगो। अनगिनत ,जाल मकड़ी के जाला नियन बुनात ,सवाल हमरी दिमाग के उपज, अब घेर ले ले बा, मकड़ी के छटपटा के कइसे निकली, अपने बनल सवाल के जवाब कइसे ढुंढी।

कबो चाँदनी के दुधिया रौशनी में दु तल्ला पे बाँस के बनावल रेंगनी पे आपन नज़र दउरल ,मकड़ी जाल बुन रहल बीआ ।बड़ तेज़ी में ,हवा में बस एगो सहारा से आपन ज़मीन घेर के ,सुबह होखे से पहिले बुना जाइ।

आदमी केतना निष्ठुर बा। भोरे कपड़ा रेगनी पे टाँग देता, सबकुछ बड़ा साधारण सा बा ,एगो साँस पे ज़िंदा रहे वाला के मार दे ता।

सवाल उहे कि डेग-डेग चले वाला इंसान ज़मीन के कट्ठा में नाप देता , इकट्ठा करके फेरु जरुरत पे बाँट देता ।कुछ उकरी सीना के चिर के अनाज बना लेता, केहु ओकरा में खोद के किला बना लेता वर्तमान के तनी ताना-बाना देखी, राजनीत, अर्थशास्त्र, वाणिज्य, तकनीक, भुगोल, इतिहास, विज्ञान सभे एक दुसरा के बिना अधुरा बा। अलग-अलग रह के भी इकट्ठा बा। तबे त सब चल रहल बा। बाँटे के कोशिश हर क्षेत्र में पुरान बा। कुछ गहन जानकारी खातिर त कबो उकर उत्पति के आधार पर ,हर विषय के तरह तरह के सोच पे बटाइल, लउक जाइ। समाज भी बटाइल बा , बहुत अलग -अलग आधार पे। नव निर्माण के तरफ बढ़ रहल इंसान अब कुछ अउरी बाँट रहल बा। धर्म बंटा गइल ,हिन्दू ,मुसलमान ,सिख ,ईसाई। फेनु एमे बाभन , क्षत्रिय ,वैश्य,शुद्र ,सिया ,सुन्नी,रोमन ,कैथोलिक ... ना जाने का-का।

अब त वाणिज्य के पहुँच देखी। घर वापसी हो रहल बा ,एक्सचेंज ऑफर भी बा, फ्री पोर्टेबिलिटी। जइसे रउवा आपन मोबाइल के नंबर ऐ कंपनी से दोसरा कंपनी में बदल ली ढेर सुविधा के साथ वइसे हीं। राजनीती भी तनिको दूर नईखे ,केहु कह रहल बा ,फलनवा पार्टी त केहु अउरी पार्टी।

खून आ मांस ,चेहरा आ चाल ,जिये खातिर उहे साँस सब एके बा ,फेनु बंटा रहल बानी। इंसान बाँट रहल बा ,बंटा रहल बा। इ बाँटे के मिज़ाज़ से सावधान भइल जरुरी बा। लेकिन का कइल जाव ,लइका पैदा होत माई के पेट से बंटा जाला, भाई-भाई से बंटा जाला, परिवार जोड़ेल, फेर बँटला , पर एक उमर पे माई के कोरा में समाये खातिर छटपटाला। इ सब सदियों से बा।

कट्ठा -कट्ठा में नपाइल जिनगी इंसान के जिये खातिर बा। हर अंश ,इंसान के सोच के विस्तार खातिर बा। ना त रोज राती के रेंगनी पर ,चांदनी रात में सवाल मकड़ी के जाला नियन इंसान के चबा जाइ। हाथ हथेली पे हीं लरखरा जाइ। दिल -दिमाग से बंटा जाइ। इंसान के आंतरिक लोकतंत्र समाज के बिगरत ढांचा नाहिन चरमरा जाइ।

श्वेताभ रंजन

सिवान , बिहार के रहे वाला श्वेताभ रंजन जी , पिछिला कुछ सालन से भोजपुरी साहित्य के थाती मे गजब के बढोतरी कईले बानी। लगातार गद्य आ काव्य के माध्यम से भोजपुरी के साहित्यिक पछ के अउरी बरिआर करत , इँहा के भोजपुरी काव्य संग्रह " कुछ कह रहल बा " प्रकाशित भईल ह। श्वेताभ जी एह घरी दिल्ली मे बानी।

कैथी लिपि

पी. राज सिंह जी

छपरा , बिहार के रहे वाला पी राज सिंह जी आर एस कालेज सिवान मे एसोसियेट प्रोफेसर बानी , नया तकनीकी से जुड़ल अपना मातृभाषा खाति हर तरह से लागल भीड़ल , अपना विशेष कैमरा से जवार के हर पहलू के कैद करत भोजपुरी भाषा के एगो साहित्यिक कलात्मक उंचाई दे रहल बानी । एह घरी इँहा के छपरा मे बानी ।

कैथी लिपि आज विलोपित हो जाये के कगार पर बा। लिखे पढ़े में अब एह लिपि के प्रयोग नइखे होत। एकर स्थान देवनागरी ले लेले बड़ुवे। जमीन जायदाद के बहुत पुरान दस्तावेज के रूप में ई लिपि कबो कबो लऊक जाला। सब केहु एकरा के ना पढ़ पावे।

एह लेख के मूल विषय बा

(क) कैथी लिपि आ एकर इतिहास
(ख) भाषा आ लिपि में सम्बन्ध
(ग) भोजपुरी भाषा आ कैथी लिपि में सम्बन्ध

कैथी लिपि आज विलोपित हो जाये के कगार पर बा। लिखे पढ़े में अब एह लिपि के प्रयोग नइखे होत। एकर स्थान देवनागरी ले लेले बड़ुवे। जमीन जायदाद के बहुत पुरान दस्तावेज के रूप में ई लिपि कबो कबो लऊक जाला। सब केहु एकरा के ना पढ़ पावे। हमार धेयान एह लिपि पर हाल फिलहाल मे फेसबुक पर दू गो फोटो देख के गईल। सिवान के राजेश सिंह जी (ओमान , मस्कट मे बानी) अपना फेसबुक टाइमलाइन पर कवनो पुरान किताब / दस्तावेज के दू गो फोटो पोस्ट कईले रही। (फोटो : अगिला पन्ना में)

उनकर पूर्वज लोगन के एगो संत समाज लगभग 2000 पेज के दस्तावेज सउंपले रहे। आज ले केहु ओकरा के पढ़ नइखे पावल, अर्थ नइखे लगा पावल। राजेश जी फेसबुक पर उपस्थित मित्रमंडली से कहनी कि शायद केहु एह के पढे मे सहायक हो सके। हम देखनी त उहाँ के समझावे के कोशिश कईनी कि कवनो अज्ञात लोक से आईल ई लिपि आ भाषा ना ह। ई कैथी में लिखल बा , भाषा भोजपुरी भी हो सकेला। आजकल ई लिपि बेवहार में नइखे एह से पढ़े में कठिनाई त होइ बाकिर पढ़ा जाई। का जाने एही बहाने भोजपुरी साहित्य के कवनो अनमोल निधि प्रकाश में आ जाव , एह उमेद में हम पढ़े आ समझे के प्रयास क देहनी। एह प्रयास में कुछ दूर तक असित मिश्रा भी साथ दिहले।

नामकरण : कैथी शब्द संस्कृत के " कायस्थ " से बनल बा। कैथी के एगो दुगो अउर नावा बावे , जइसे , बिहारी , कैथीनागरी आदि। बाकिर प्रचलित नाम कैथी ही बा। लिखाई पढ़ाई के अनौपचारिक , अधार्मिक (Secular) संदर्भन में जईसे कि राज काज , कोट कचहरी , दस्तावेज लिखाई व्यक्तिगत संवाद आदि में कैथी के प्रयोग के चलन अधिक रहल बा। धार्मिक आ औपचारिक संदर्भन में (हिन्दी आ संस्कृत भाषा खातिर) देवनागरी लिपि प्रयोग अधिका होत रहल ह।

लिपि के संरचना के गहराई से अध्ययन कईला के बाद आ एकर प्रयोग के क्षेत्र के देखला के बाद भाषाशास्त्री लोग कैथी के नव भारतीय यूरोपीय भाषा समूह के पूरबी शाखा के रूप में रखले बा। एही शाखा में बंगाली , मैथिली आ उड़िया भी आवेला।

कैथी के उत्पत्ति के निश्चित अवधी ना बतावल जा सके काहे कि एह सम्बन्ध में कवनो प्रामाणिक साक्ष्य उपलब्ध नइखे। बाकिर अतना तय बा कि 16 वीं शताब्दी तक एगो स्वतंत्र आ विकसित लिपि के रूप में कैथी स्थापित हो चुकल रहे। शेर शाह सूरी (1486 - 1545) तक सब सरकारी दस्तावेजन में एकर प्रयोग मिलेला । 17

www.bhojpurisahityangan.com

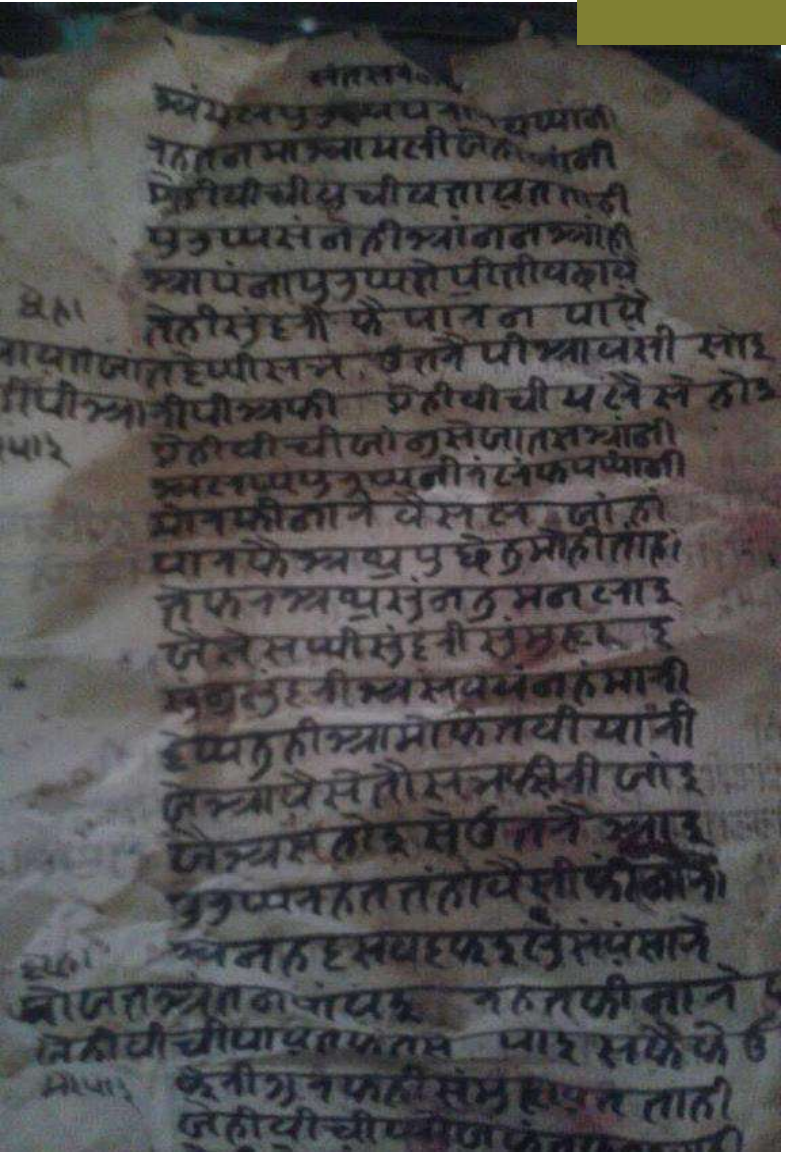

वीं शताब्दी तकले एकर प्रयोग के क्षेत्र में अउर विस्तार भईल., साहित्य के भी रचना होखे लागल। 1880 में अँगरेज़ सरकार एकरा के राज काज के भाषा के रूप में मान्यता दे देहलस। 1885 में सर जे सी नेसफील्ड एकर मानकीकरण क के छपाई के फॉण्ट विकसित कईले।

कैथी के विकास गुप्त कालीन ब्राह्मी लिपि से बिना शुद्धि अशुद्धि के ख़याल कईले एगो घसेटउवा लेखन शैली के रूप में भईल। एह लिपि के राजस्थान के महाजनी , गुजरात के मोदी आ पंजाब के लांडा के समान्तर राखल गईल बा। अर्थ के ख़याल से कैथी नागरी के विपरीत अर्थवाला ह। नागरी के माने नगर , नगर के सभ्यता से सम्बंधित बा।

भाषा आ लिपि में सम्बन्ध :

इ सिद्ध हो चुकल बा कि भाषा बेवहार पेड़ पौधा सहित सब जीव जंतु में पावल जाला। सब जीव धारी के लगे भाषा बा बाकिर लिपि खलिहा आदमी ही विकसित कई सकत बा। नोआम चोम्स्की (Noam Chomsky) के बात मानल जाव त भाषा आदमी के स्वयं प्राप्त हो जाए वाला छमता (Innate capacity) ह। भाषा आदमी के जातीय चेतना (Racial consciousness) के भाग ह। जइसे चिरई के उड़े खातिर कवनो प्रकार के ट्रेनिंग के जरूरत ना पड़े , ओइसहीं एगो छोट लईका के आपन मातृभाषा के सब रूप के सहजे आतम सात (Internalize) कर लेला।

मानव आपन ज्ञान आ अनुभव के वाचिक परंपरा से एक पीढ़ी से दोसरा पीढ़ी तक पहुंचा सकेला। बाकिर वचन से प्रसारित ज्ञान आ अनुभव के एगो सीमा बा। ई शाश्वत ना हो सके। बिला जाये के संभावना बराबर बनल रहेला . कुछ बांच भी जाव त परिवर्तित भी हो जाये के संभावना से इंकार ना कईल जा सके। भाषा (ध्वनि) में व्यक्त एह ज्ञानन के बचावे खातिर आदमी कुछ प्रतीकन के , कुछ कोड के विकास कईलख। इहे प्रतीक लिखित भाषा के अच्छर (आखर) ह। जइसे कि नाम से ही अर्थ मिल जात बा " अच्छर", जेकर क्षरण नइखे हो सकत। लिपि ,एही अछरं की मिला के विकास कईल गईल एगो पद्धति ह। अउर सुधार के कहल जाव त ध्वनि के माध्यम से व्यक्त भाषा के लिखित संकेत के रूप में व्यक्त करे के पद्धति लिपि ह।

आधुनिक सन्दर्भ में लिपि के कुछ अइसे भी समुझल जा सकेला। फेसबुक पर बहुत लोग बहुत बार भोजपुरी भाषा के रोमन लिपि में भी लिखेला। भारत में उर्दू भाषा अरबी फारसी लिपि में त लिखइबे करेला देवनागरी में भी लिखाला। गूगल अनुवाद पर जा के आज केहु रोमन में टाइप कर के दुनिया के कवनो भाषा के प्रचलित लिपि में अनुवाद ले सकेला। इहाँ देखीं हम देवनागरी में अंग्रेजी लिख रहल बानी , " इंडिया इज़ माई कंट्री। "

कैथी आ भोजपुरी : भोजपुरी आ मगही के पारम्परिक लिपि कैथी ही ह। ग्रियर्सन के अनुसार भोजपुरी क्षेत्र से ही कैंथी मगध में गईल। एक जमाना में उर्दू , अवधी आ मैथिली भी कैथी लिपि में ही लिखात रहे।

गिरमिटिया के रूप में मॉरीशस , फिजी , त्रिनिदाद , सूरीनाम आदि देशन में गईल भारतवंशी लोग अपना साथे कैथी में लिखल हनुमान चालीसा , रामायण आदि ले गईल। एह तरह से एह लिपि के प्रसार ओजा भईल।

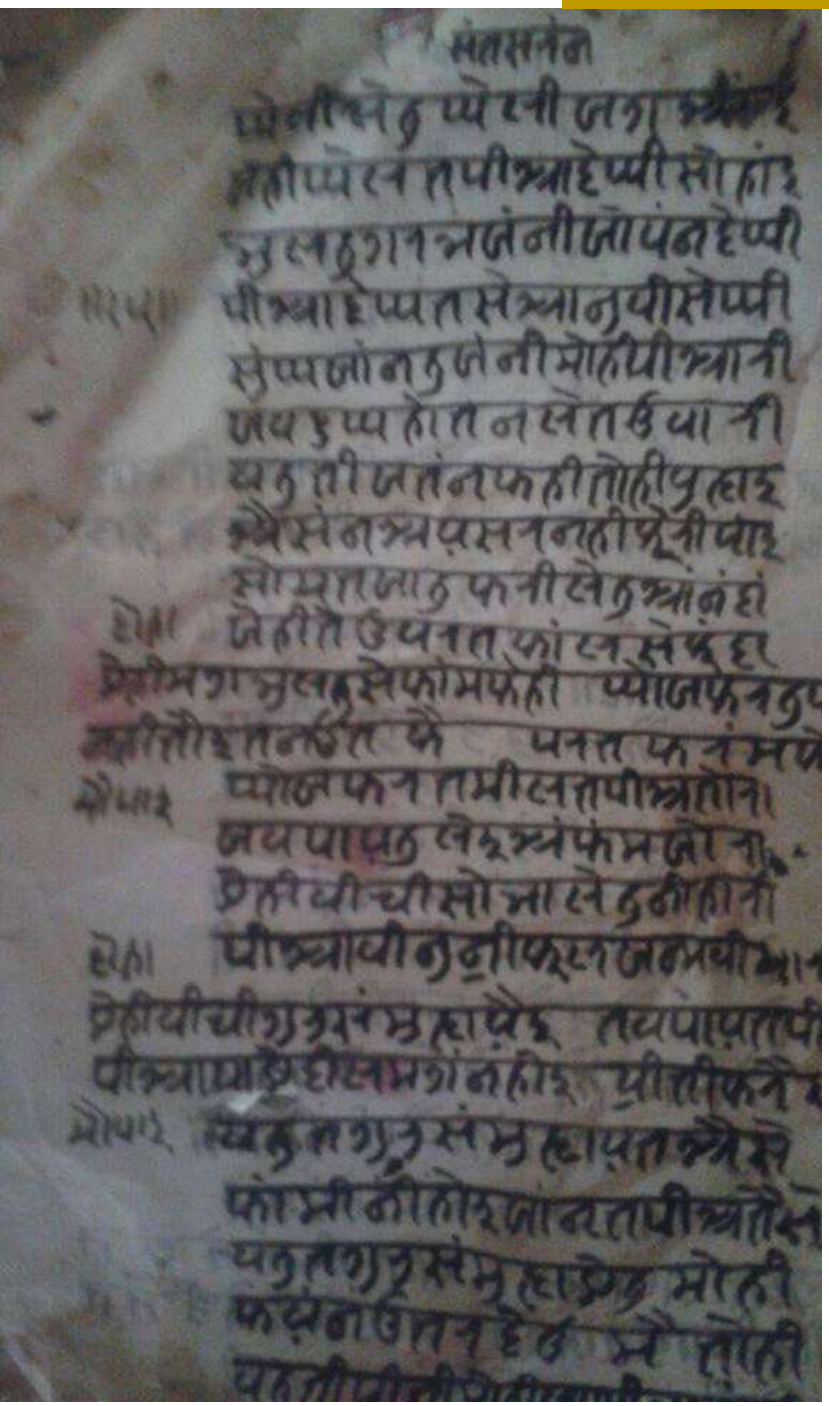

उत्थान आ पतन : 1880 में बंगाल के लेफ्टिनेंट गवर्नर सर एस्ले इडेन एगो फरमान के जरिये कैथी के राज काज के भाषा के रूप में मान्यता देहले। एकर पाहिले अरबी फारसी लिपि वाला उर्दू के प्रयोग होत रहे। 1881 में फेर कोट कचहरी कैथी के प्रयोग पर रोक लगा देहल गईल। बाकिर कैथी के लोकप्रियता के देखते हुए ई रोक एक बारिस बादे हटा लेहल गईल। सं 1885 में सर जे सी नेसफील्ड कैथी के मानकीकरण कईले आ एकर छपाई वाला फॉण्ट विकसित कईले । आज़ादी के पूर्व देश के सामाजिक राजनितिक परिस्थिति में तेज़ी से बदलाव होखे लागल। यह में कुछ कुछ बदले के , कुछ सरिहारे के भाव भी रहल हा। धीरे धीरे अरबी फारसी आ देवनागरी लिपि मने वाला लोग के दवाब सरकार पर बढे लागल। 1893 में बंगाल सरकार आपण 1880 के फरमान के बदल देहलख। कैथी अधिक लोकप्रिय लिपि रहे, एह से फेर 1894 में एकर पछ में अउर एगो फरमान जारी भईल । बाकिर आगे के बरिसन में देवनागरी के पछ में दवाब बढे लागल।

कुछ अउर भाषा तत्व सम्बन्धी कारण भी एकरा विपछ में लउके लागल , जइसे की शब्दन के अलगा अलगा ना लिख के एके साथे माथ बान्हल , कोमा , कोलन आदि के ना के बराबर प्रयोग आदि। सबसे बड़ कारण में ई भी रहे कि भाषा आ बोलियन के बीच लिपि के एकरूपता रहे के चाहीं। काशी में नागरी प्रचारिणी सभा, जइसन की एकर नाम से ही उदेश के पता चलत बा , देवनागरी के पछ में जोरदार ढंग से प्रचार आ वकालत करे लागल । कोट कचहरी में 1913 तक कैथी के प्रयोग चलल । ओकरा बाद एकर स्थान देवनागरी ले लेहलस । आज कैथी इतिहास के भाग हो गईल बा एही कारण एकर महत्व भी । .

(क्रमशः राजेश सिंह के फोटो के देवनागरी में रूपान्तर अगिला कड़ी में)

www.bhojpurisahityangan.com

कबीर, भोजपुरी एंव चंपारण

संतोष पटेल

बेतिया, पश्चिम चंपारण, बिहार के रहे वाला संतोष पटेल जी , रिसर्च स्कॉलर (भोजपुरी), हई , यूजीसी नेट क्वालिफाइड, एम ए, एम फिल के संगे संगे सिनिअर डिप्लोमा - गायन (संगीत) मे , संपादक - भोजपुरी ज़िन्दगी, सह संपादक - पुर्वान्कूर, (हिंदी - भोजपुरी), साहित्यिक संपादक - डिफेंडर (हिंदी- इंग्लिश- हिंदी), रियल वाच (हिंदी), उपासना समय (हिंदी), हई । कई गो भोजपुरी आ हिन्दी किताब लिख चुकल बानी , कुछ शोध परक भोजपुरी किताब प्रकाशन मे बडुवे । राष्ट्रीय आ अंतराष्ट्रीय मंचन से कविता पाठ भी करेनी । एह घरी इँहा के दिल्ली मे बानी ।

नवीन जागरण युग के अगुआ के रूप में हिंदी साहित्य में स्थापित “कबीर” आजू जनता के हृदय में व्यक्ति के रूप ना बलुक प्रतीक के रूप में प्रतिष्ठित बानी। भगवान् बुद्ध के बाद उत्तर भारत में सामाजिक क्षेत्र में नवचेतना आ मानववाद के स्वर फूँकेवालन में कबीर सर्वश्रेष्ठ महामानव बानी। इहां के हिंदी के आदि कवि मानल जाला। इहां के परंपरागत काव्य भाषा- संस्कृत आ पालि के तेयाग के जनभाषा अपभ्रंश-मिश्रण हिंदी में आपन बानी मुखरित कइनी। एह शोध आलेख में इ स्पष्ट करे् के प्रयास कइल गइल बा कि कबीर हिंदीये के खाली ना बलुक ‘भोजपुरी भासो’ के आदि कवि हई। उनकर बिहार प्रान्त के चंपारण क्षेत्र से का सम्बन्ध रहल आ कबीर के चंपारण के संगे संगे भोजपुरी भाषा से का संबंध बा ओकरा के परख करत इ शोध आलेख बा।

भोजपुरी भाषा के आदि कवि: कबीर

भोजपुरी साहित्य आ भाषा के इतिहास के अध्ययनोपरांत आ अलग अलग स्त्रोतन के अवलोकन के बाद इ बात के सिद्ध करल सरल हो गइल बा कि जवन कबीर के जनभाषा अपभ्रंश- मिश्रित हिंदी के कवि मानल गइल उहां के सही माने में भोजपुरी भाषा के आदि कवि हई। डा. उदय नारायण तिवारी, डा. कृष्णा देव उपाध्याय, दुर्गा शंकर प्रसाद सिंह ‘नाथ’, रासबिहारी पाण्डेय, हवालदार त्रिपाठी सहृदय, पं.गणेश चौबे, नर्मदेश्वर सहाय, डा. गदाधर सिंह, डा. तैयब हुसैन पीडित, डा. राजेन्द्र प्रसाद सिंह आ डा. गोरख प्रसाद ‘मस्ताना’ जइसन भारतीय विद्वान आपन पुस्तक, लेख, निबंध आ शोध-निबंध के माध्यम से कबीर के भासा के तय करे के काम कइले बाड़े।

"कबीर चरित्र बोध" के मोताबिक कबीर के जनम संवत 1455 वीं (वर्ष 1398) के ज्येष्ठ पूर्णिमा के भइल बा बाकिर बाबू श्याम सुन्दर दास, डा. माता प्रसाद गुप्त, डा. पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल जइसन भारतीय विद्वान में कबीर के जनम के बारे में मतभेद बा। कबीर के जनम के बारे में कएगो जनश्रुति प्रचलित बा आउर कहल जाला कि उहां के एगो विधवा ब्राह्मनी के बेटा रहनी जे कबीर के जनमते उनका लहर तारा नदी के लगे फेंक देली जहवाँ से नीरू आउर नीमा नाम के जुलाहा दम्पति उठा के ले अइलें आ उहे बचवा आगे चलके कबीर साहेब कहलइलें। मिश्रबंधु एह कथा के मनगढ़त मानेलें आ उनकर कहनाम बा कि संत कबीर वास्तव में नीरू जुलाहा के बेटा रहस। 1.

नागरी प्रचारिणी सभा से प्रकाशित कबीर ग्रंथावली में कबीर के बानी संकलित बा। कबीर के बानी के भाषा पर विचार करत, एकर संपादक लिखत बानी कि “यद्यपि उन्होंने (कबीर ने) स्वयं स्वीकार किया है कि की ‘मेरी बोली पूर्वी है’ तथापि खड़ी, ब्रज, पंजाबी, राजस्थानी, अरबी आदि अनेक भाषाओं का पुट भी उनकी उक्तियों पर चढ़ा है।’

www.bhojpurisahityangan.com

सांचो कबी र खुदे आपन एगो दोहा में आपन भासा भोजपुरी मनले बानी:-

बोली हमारी पूरब की , हमे लाखे नहीं कोच।
हमके तो सोई लखे , धुर पूरब का होए।।

आचार्य राम चन्द्र शुक्ल आपन हिंदी साहित्य के इतिहास में एह सम्बन्ध में विचार करत लिखत बानी कि "इनकी भाषा सधुक्कड़ी है अर्थात् राजस्थानी, पंजाबी, खडी बोली है, पर रमैणी और सबद में गाने के पद हैं जिनमें काव्य की ब्रजभाषा और कहीं कहीं पूर्वी बोली व्यवहार है। 2.

भोजपुरी भाषा और साहित्य के दूसरका अध्याय 'भोजपुरी साहित्य, भोजपुरी भाषा और साहित्य' में डाॅ. उदय नारायण तिवारी जी लिखले बानी कि ''यद्यपि अत्यन्त प्राचीनकाल से बनारस का सांस्कृतिक सम्बन्ध मध्यदेश से रहा है तथापि उसकी भाषा तो स्पष्ट रूप से मागधी की पुत्री है। यह बोली बनारस के पश्चिम मिर्जामुराद थाना से दो तीन मील और आगे तमन्चाबाद तक बोली जाती है वस्तुतः यही बोली कबीर की मातृभाषा थी। यह प्रसिद्ध है की कबीर पढ़े लिखे न थे अतएव अपनी मातृभाषा में रचना उनके लिए सर्वथा स्वाभाविक था। कबीर के अनेक पद आज भी बनारसी बोली अथवा भोजपुरी में है।'' 3

भोजपुरी भाषा का इतिहास में 'कबीर की भाषा भोजपुरी' अध्याय में रास बिहारी पाण्डेय डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी के उद्धृत कबीर के चार पद के वर्णन कइल बा जेकरा डाँ चटर्जी खांटी भोजपुरी में मानेनी, जइसेः-

"कनवा फराई जोगी जटवा बढवलें
दाढ़ी बढाई जोगी होई गइलें बकरा
कहत कबीर सुनो भाई साधू
जम दरवाजा बान्हल जइबे पकरा"
जंगल जाई जोगी दुनिया रमौले
काम जराय जोगी बन गइले हिजरा।'' 4

डा. उदयनारायण तिवारी भोजपुरी साहित्य के जवना उदाहरण से कबीर के भोजपुरी भासा के आदि कवि मनले बानी उ अपने में सिद्ध बा। कबीर साहेब की शब्दावली (भाग पहिला) पृष्ठ -23, सबद 5 में-

"कवन ठगवा नगरिया लूटल हो, टेक
चन्दन काठ कै बनल खटोला, तापर दुल्हिन सुतल हो
उठो री सखी मोरी मांग संवारी, दूल्हा मोसे रुसल हो
आये यमराज पलंग चढी बैठे, नैनन आंसू टूटल हो
चारी जने मिली खाट उठाइन, चहुँ दिसि धू धू उठल हो
(कबीर साहेब की शब्दावली, भाग दूसरा पृष्ठ संख्या 40, शब्द 28)

तोर हिरा हीराइल बा कीचड़े में। टेक।
कोई ढूंढे पूरब कोई ढूंढे पच्छिम, कोई ढूंढे पानी पथरे में।।
(कबीर साहेब की शब्दवाली,दूसरा भाग,पृष्ठ संख्या- 69)

सुतल रहलूँ मैं नींद भरी हो, गुरु दिहले जगाई ।टेक।
चरण कवल के अंजन हो, नैना लेलूं लगाई।
(कबीर साहेब की शब्दावाली, चैथा पृष्ठ संख्या-19)

अपने पिया की मैं होइबो सोहागनि - अहे सजनी।
भइया तजि सइयां संग लागब रे की।।

भोजपुरी के कवि और काव्य के 'महात्मा कबीरदास' अध्याय में श्री दुर्गानाथ सिंह 'नाथ' पृष्ठ संख्या 33 से 47 तक कबीरदास के लगभग 25गो भोजपुरी पद के उल्लेखित कइले बाड़े:-

1.तोर हीरा हेराइल बा कीचड़े में....
2. कउन ठगवा नगरिया लुटल हो.....
3.का ले जाइबो ससुर घर जइबो ....
4. अइली गवनवा के सारी हो, अइली गवनवा के सारी
साज समाज ले सइयां मोरे ले अइले कहारवां चारी
मन विचार दरदियो ना बुझे जोरत गठिया हमारी
सखी सब गावेली गारी।।

एह गीतन में भोजपुरी शब्द, क्रिया पद आदि के ढ़ेर प्रयोग बा खाली एतना कहल उचित ना होई वास्तव में इ कुल्ही गीत भोजपुरी के ह जेकर विशेष विवेचना के आवश्यकता नइखे बुझात।

कबीर के भोजपुरी भासा के आदि कवि के रूप में मानत भोजपुरी भाषा के प्रसिद्ध आलोचक नागेन्द्र प्रसाद सिंह आपन 'भोजपुरी साहित्य के संक्षिप्त इतिहास' में लिखत बाड़े कि ''कबीरदास के रचना का प्रसंग में बीजक के नाव आवत बा। जवना में 809 साखी, 400 पद आ 07 रमैनी बा बाकिर कबीर

www.bhojpurisahityangan.com

साहित्य के शोधकर्त्ता आ विद्वान डॉ. पारसनाथ तिवारी 200 पद, 744 साखी, आ 21 गो रमैनी मानेनी।''

आगे श्री सिंह लिखत बाड़े कि ''कबीरदास के रचना के भाषा मूल रूप से ठेठ भोजपुरी रहे. घुमंतू साधू भइला से विभिन्न क्षेत्रन के शिष्य परंपरा से स्थानीय संसोधन का कारन उहाँ का रचनन में दोसरो भाषा जइसे - राजस्थानी, पंजाबी, मगही, अवधी, आदि के शब्द आउर क्रिया पद मिलेला जवन स्वाभाविक बा।'' 5

एही तरे कबीर के भासा के विश्लेषण करत नर्मदेश्वर चतुर्वेदी भोजपुरी साहित्य के इतिहास में काल विभाजन के क्रम में संत काल की शुरुआत कबीर से मानत बानी। भोजपुरी के संत साहित्य (लेखक: नर्मदेश्वर चतुर्वेदी) में नर्मदेश्वर लिखत बाड़े कि 'भोजपुरी के संत साहित्य के शुरुआते भोजपुरिया महात्मा कबीर से भइल बा। आपन कथनी आ करनी के सच्चाई से ई आपन बात निर्भीकता से कहत रहले जवना के असर दोसरो में आत्माविश्वास जगावत रहल बा।'

डॉ. राम कुमार वर्मा 'हिंदी साहित्य के आलोचनात्मक इतिहास' ग्रन्थ में कबीर के भासा भोजपुरी बतवले बाड़े। उहें डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी आपन पुस्तक कबीर में कबीरदास के उहे कुल्ह पद के संग्रह कइले बाड़े जवना के भासा में भोजपुरी के अधिकता बा।

प्रोफेसर मैनेजर पाण्डेय मानत बानीं कि ''कबीर की भाषा मूलतः भोजपुरी है। कबीर के शिष्यों की कृपा से उसमें अन्य क्षेत्रीय भाषाएं आ गयी हैं।'' 6

कबीर आ चंपारण

''चंपारण''प्रकृति के लीला भूमि, पर्वतराज हिमालय के आंगन भूमि, चम्पक वन के सुवास भूमि, बालक ध्रुव के तपोभूमि, आदिकवि महर्षि बाल्मीकि के काव्यभूमि, भगवान बुद्ध के यात्रा भूमि, पांडव लोगन के वनवास भूमि, चाणक्य चन्द्रगुप्त के मर्मभूमि, प्रियदर्शी अशोक के धर्मभूमि, अरेराज सोमेश्वर महादेव के अनुकम्पा भूमि, सरभंग संतन के सिद्ध भूमि, महात्मा कबीर के उपदेश भूमि, राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के कर्मभूमि तथा अन्नपूर्णा के अन्नभूमि व सदानीरा गण्डकी के निवास भूमि ह। सांचो इहां के माटी आ पानी में उ गरिमा बा जवन शुन्य के समग्रता प्रदान करेला। चंपारण के धरती जेतना उपजाऊ बा ओकरो से कहीं जादे साहित्य सृजन खातिर उपजाऊ बा।

डॉ शोभाकांत झा आपन शोध पुस्तक हिंदी साहित्य को चंपारण की देन में लिखले बानी कि 'सम्पूर्ण चंपारण के भू भाग पर मूलतः भोजपुरी, मैथिली एवं बज्जिका लोकभाषा के रूप में बोली जाती है किन्तु जहाँ तक साहित्यिक योगदान का प्रश्न है भोजपुरी लोकभाषा में कई रचनाएँ यहाँ के साहित्यिक पुरोधाओं ने रची है जिसका विशेष महत्व है।' 7

चंपारण के धरती पर महात्मा कबीर एवं उनके शिष्य भक्त भगवान गोस्वामी के द्वारा स्थापित छोटे बड़े सैकडों मठ आज भी विधमान है जो सिद्धों, तांत्रिको,ं नाथ पंथियों से पूर्ण रुपेण प्रभावित हैं। कुछ सिद्धों का सम्बन्ध निश्चित रूप से चंपारण से रहा है। चंपारण से जिन सिद्धों का निश्चित सम्बन्ध माना जाता, उनमें 'चम्पकपा' हैं जिनका समय ग्यारहवीं शाताब्दी माना जाता है। डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी ने चम्पकपा को चंपारण का ही माना है और प्रो.कामेश्वर शर्मा ने भी इन्हें चंपारण का स्वीकारा है। दुसरे सिद्ध कवि 'कोकालिया' निश्चित ही चंपारण के निवासी थे। उनका सम्बन्ध किसी राज खानदान से था इसलिए इन्हें चंपारण के राजकुमार के रूप में याद किया जाता है। 8

भोजपुरी के आदि कवि महात्मा कबीर का साहचर्य चम्पारण की धरती को मिला है इसका पुष्ट प्रमाण चटिया - बडहरवा-तधवा मठ के महंत रामरूप गोस्वामी के पास सुरक्षित है। इस प्रकार संत साहित्य में कबीर पंथियों की सुदृढ परंपरा चंपारण में आज भी है उक्त मठों से प्राप्त प्रमाणों के आधार पर कहा जा सकता है की कबीर के बीजक की रचना चम्पारण में ही हुयी है। इसकी पांडुलिपि आज भी महंत रामरूप गोस्वामी के पास सुरक्षित है। अतएव चंपारण की पावन धरती युग पुरुष कबीर की साहचर्य एवं साधना स्थली अवश्य रही होगी। 9

भोजपुरी साहित्यकार आ भोजपुरी जिनिगी के मुख्य संपादक डॉ. गोरख प्रसाद मस्ताना के अनुसार 'कबीर आ भगवान गोस्वामी के चरण से पवित्र चंपारण के माटी आ भोजपुरी के बड़ा गहिर सम्बन्ध बा आ एह सम्बन्ध के बनावें में भगवान गोस्वामी के योगदान बहुते लमहर बा।

भगवान गोस्वामी द्वारा कबीर बाबा के विचारधारा पर आधारित भगताही पंथ के स्थापना करके के एगो लमहर काम भइल। जदि कबीर के साहित्य लिपिबद्ध ना होईत त साहित्य जगत कबीर के खाली किस्से कहानी में झांकित। उनकरा साहित्य से परिचित ना हो पाईत। येह हालत में निर्विवाद सत्य बा कि आज दुनिया जवन कबीर साहित्य पढ़त बा, भोजपुरी के सराहत बा ओकर श्रेय कबीर के चेला भगवन गोस्वामी के जाता। 10

डॉ शुकदेव सिंह, संत कबीर और भगताही पंथ पुस्तक में भगताही पंथः वृत्त अध्याय में लिखत बानी कि " भगवान गोस्वामी संत कबीर के साथ काशी और गंगा का तट पकड़े हुए नारायणी नदी के संगम स्थल से होते हुए नारायणी के किनारे किनारे एक ऐसे वीरान स्थल पर पहुंचे जिसे चटिया कहा जाता है। चटिया के नारायणी तटवर्ती एकान्त में उन्होंने कबीर के द्वारा निर्देशित अनाहद नाद की साधना की तार पकड़ कर सहजकार की भूमिका में अमृतपान किया। दरअसल कबीर के वचनों की श्रुति इसी चटिया में उनके आपने आत्मबोध के रूप में प्रत्यक्ष हुई .....भगवान गोस्वामी के लिए संत कबीर का मिलवाना और बीजक का संग्रह जितने महत्वपूर्ण हैं उतने ही महत्वपूर्ण चटिया में उनके आत्मसाक्षार के क्षण भी।" 11

शुकदेव सिंह आगे लिखत बानी कि 'भगवान गोस्वामी संत कबीर के साथ साथ घुमाने लगे। शिक्षित थे, विद्वान थे, शायद भगवान गोस्वामी कबीर के अनुगामियों में पहले महत्वपूर्ण व्यक्ति थें जिन्होंने कबीर के वचनों को लिपिबद्ध करने का यथा संभव प्रयास किया। रमैनी, सबदी, सखी और सबदी के विभिन्न रूपों - चांचरी, बेली, विरहुली,चैतिसा इत्यादि को उन्होंने इस ग्रन्थ गुटिका का नाम बीजक रखा। बीज अर्थात मूलमन्त्र बीजक अर्थात् कबीर के अनेक प्रकार के कथनों का तारतम्यबद्ध निश्चित प्रकार के केंद्रीय विचारों से अभिप्रेरित उक्तियों का संग्रह। भगवान गोसाई का बीजक धीर धीरे कबीर का प्रतीक बन गया।' 12

भगवान गोस्वामी के भगताही पंथ प्रवर्तक मानल जाला जे चंपारण के चटिया में कबीर वाणी के लेखन के परंपरा बीजक ग्रन्थ कर्ता के रूप में शुरू कइलें। भगताही पंथ के दोसर संत- महंत लोगन में घनश्याम गोस्वामी (बेतिया), उद्होरण गोस्वामी (दरभंगा से आकर चटिया गादी संभलले), दवन गोस्वामी, गुणाकर गोस्वामी, गणेश, कोकिल, बनवारी नयन, भीषण भूपाल, क्षत्र, राम प्रसाद, तुला, गोपाल राम लगन, राम खेलावन यदुवंशी बानी सभे आ अब राम रूप गोस्वामी एह संत परम्परा के आगे बढ़ा रहल बाड़ें।

भगताही पंथ के संतन लोगन के वाणी में भोजपुरी भासा के स्पष्ट देखल जा सकेला:-

जइसे:

1. मन्हंत घनश्याम गोस्वामी (बेतिया) ध्यानमुद्रा में जाके आपन कुटिया में पंचम सुर के गाना शुरू करसे -

करब हम कवन बहाना, गवान हमरो नगिचाना।

सब सखियाँ में मैली चुनरिया हरमो पियर घर जाना।।

2. एक डर लागे मोरे सासू ननद के

दुसरे पिया मारे ताना

बटिया चलत मोहि सद्गुरु मिलि गए, राम नाम को बखाना।।

भगताही पंथ के दोसरो संत लोगन के उपदेश में भोजपुरी आइल बा बाकिर गुणाकर गोस्वामी के उपदेश में भोजपुरी खूब निखर के आइल बा -

फुलवा भार न सही सके, कहे सखिन से रोय

ज्यों ज्यों भीजें कमरी, त्यों त्यों भारी होय।

महंत रामरूप गोस्वामी खुद भोजपुरी के एगो उद्भट विद्वान बाड़े। उनकर काव्य संग्रह चैरासी में भोजपुरी के चैरासी भक्ति धारा व प्रवचन के काव्यरूप बा। श्री रामरूप गोस्वामी के प्रभाव से खगनी गांव, मोतिहारी, पुर्वी चंपारण के प्रसिद्ध कवि श्री धनुषधारी कुशवाहा के अजगुत कबीर नामक खंड काव्य भोजपुरी भाषा में रचले महंत रामरूप गोस्वामी के कविता के एक बानगी देखीं -

निंदक निमन एह दुनिया में, जानेला सब कोई
आदमी छूई आकाश के, जबले निंदा होई। 13

www.bhojpurisahityangan.com

कबीर मठ के बारे में हिंदुस्तान टाइम्स लिखत बा कि:

"Champaran is known for the experiment with truth and non-violence of Mahatma Gandhi year back in 1914 but it is also the first preaching place of Saint Kabir-Chatia & Badaharwa the first preaching place of great saint is 10 km away from Areraj, a subivision under East champaran district which his first Math of the Firke Bhaktahi Branch of Kabir Panth was established year back in 1577-" (14)

निष्कर्ष:

अब सवाल इ बा कि कबीर के मूल भाषा का ह ?

एह कुल्ह तथ्यन के धेयान में रखल जाय त स्पष्ट होता कि कबीर चंपारण के कितना नजदीक रहले जहवाँ आजूओ 80-85 लाख लोगन के मातृभाषा भोजपुरी ह। कबीर के समय में राजस्थान में डिंगल साहित्य के भासा रहे उहें ब्रजभाषा के पिंगल कहल जात रहे बाकिर एकर प्रचार प्रसार एतना ना रहे जेतना अष्टछाप कवियन के समय में भइल। दिल्ली में हिन्दवी रहे। दक्कन क्षेत्र में हैदराबाद, दौलताबाद आ गुलबर्गा दक्कनी हिंदी कहल गइल। एकरा अलावे अवधी आ भोजपुरी के क्षेत्र रहे। भोजपुरी बिहार, उत्तर प्रदेश मध्य प्रदेश के कुछ जिलन में आ झारखण्ड के कइ गो क्षेत्र में नागपुरिया के नाम से बोलल जाला आ आजो चलन में बा। विद्यापति मिथिला के, सिद्ध लोग मगध क्षेत्र और नाथ पंथ के गोरखनाथ के गोरखपुर भोजपुरी के क्षेत्र ह। अवधी आ भोजपुरी में समानतो ढ़ेर बा। एह सब तथ्यन के देखत हमनी के मानल जा सकेला कि कबीर के भासा मूलतः भोजपुरी ह।

संदर्भः-

1.हिंदी साहित्य का इतिहास- आचार्य दुर्गा शंकर मिश्र पृष्ठ संख्या- 77

2.हिंदी साहित्य का इतिहास, पं.राम चन्द्र शुक्ल, संशोधित प्रवद्धित संस्करण पृष्ठ-98

3.डा.उदय नारायण तिवारी, भोजपुरी भाषा और साहित्य, पृष्ठ संख्या-254

4.कबीर:एक विश्लेषण रू डॉ. प्रकाश चंद गुप्त, पृष्ठ संख्या-22

5.नागेन्द्र प्रसाद सिंह 'भोजपुरी साहित्य के संक्षिप्त इतिहास, पृष्ठ संख्या- 31-32, लोक प्रकाशन, पटना

6.भोजपुरी भाषा का इतिहास, प्रो.गदाधर सिंह, नालंदा खुला विश्वविधालय, एम.ए. भोजपुरी भाषा, पहिलका-पत्र, पृष्ठ संख्या- 214

7. हिंदी साहित्य को चंपारण की देन, चंपारण की साहित्यिक विधाओं, पृष्ठ संख्या-149, ललित प्रकाशन,1994

8.उपरिवत्, पृष्ठ संख्या- 58

9.डॉ शोभा कान्त झा, महर्षि कबीर और चम्पारण, प्रकाशक-आचार्य महंत रामरूप गोस्वामी, भगताही पन्थ, तधवा मठ, पं चंपारण, पृष्ठ संख्या 21-22, प्रथम संस्करण, 2003

10. भोजपुरी जिनिगी, तिमाही भोजपुरी पत्रिका में प्रकाशित डॉ गोरख प्रसाद मस्ताना का आलेख भोजपुरी के पुरातन आ पवित्रभूमि- चंपारण, पृष्ठ संख्या-28, जनवरी-मार्च, 2009, इन्द्रप्रस्थ भोजपुरी परिषद्, नई दिल्ली

11. संत कबीर और भगताही पंथ, भगताही वृत्त लेखकः शुकदेव सिंह, प्रकाशकः विश्वविद्यालय प्रकाशन चैक, बनारसी -01, पृष्ठ संख्या-06, 1998

12.उपरिवत पृष्ठ संख्या- 05

13. चैरासी, भोजपुरी काव्य संग्रह, कवि महंत रामरूप गोस्वामी, प्रकाशनः धनुषधारी कुशवाहा, वर्ष विक्रम सम्वंत 2056, पृष्ठ संख्या-24

14. Hindustan Times, Thursday, November 27, 1997

रंग रंग के इयाद

तरुण कैलाश

आरा , बिहार के रहे वाला तरुण कैलाश जी , एह घरी अमेरिका के सैन-होसे शहर मे याहू कम्पनी मे काम करत बानी । अमेरिका मे भोजपुरी लोकगीत पारम्परिक गीत सांस्कारिक गीतन के प्रचार प्रसार मे लागल बानी । आखर पेज प इँहा के एक से बढि के एक भोजपुरी कविता आ लेख पोस्ट हो चुकल बा ।

हमरा गाँव देस के कइ गो चीझु इयाद परेला। आजु सोचनी हां कि ई मय इयाद के एक जगहा सरिहार के राख दीहीं रउवा सब के सोझा। हमरा आसा बा कि कहीं ना कहीं एह में रउवो आपन कवनो ना कवनो बात मन पर जाई।

जब छोट रहनी तब हमरा मन परेला कि दुमका में पिताजी के पोस्टिंग रहे। ओ घरी हई बिहार झारखंड के बांटा बांटी ना भईल रहे आ बिहार सरकार में कंगाली ना आईल रहे। दुआर प एगो आसमानी रंग के एम्बेस्डर कार आ एगो खाकी रंग के सरकारी जीप, आगा पाछा नौकर चाकर दऊरत रहलन स। कहे के मतलब ई कि एगो अफसर घर के जिनिगी रहे बाकी ई सब रहला के बादो, साल भर में दिवाली, दसहरा आ होली - खालिसा ईहे तीन गो परब में नाया कपड़ा कीनात रहे। अब त कई सेट रेडीमेड महंगा कपड़ा हर महीने अदमी कीनत बाड़े आ तबो ऊ खुसी ना होखे जवन ओह पुराना जबाना में कपडा सीयावे में होत रहे। होली में हमरा खेयाल से उजरका कुरुता पैजामा सीयात रहे लईकन के, आ ना त टेरीकॉट भा टेरीलीन के बूसट पाएट, आ भा ढेर भईल त चुनचुनाये आला नायलोन कपड़वा के टी-सट। दिदिया "मुकद्दर का सिकद्दर" स्टाइल पठानी सूट खातिर रुसल रहली, एक बार आ माई के गज्जी सिलिक के साड़ी कीनात रहे। अगर गाँवे जाए के होत रहे त गाँव प के सबका खाती कपडा लाता, लुगा धोती कीनात रहे। ई कुल्ह तइयारी कई महीना पाहिले से सुरु हो जाए।

गाँवे जाए खाती "जयराम चम्पियन" के भिडियो "कोच" बस चलत रहे जवना में आदमी "कोचा कोचा" के जास। रस्ता में "पिया निरमोहिया" आ "सौतन" सिनेमा धईले दू भा कबो कबो नीमन संजोग रहला प तीन गो सिनेमा झिलझिलात टीभी प रात भर देखावत रहलन स। आधा रस्ता में राति खा कुल्ह भिडियो कोच कौनो लाइन होटल, बुला औरंगाबाद, में रुकत रहली सन। हरियर ऊजर मरकरी, झालर बल्ब के रोसनी आ पान के दोकानी प बाजत कैसेट मर्दाना नीयन भारी अवाज में कौनो नाच प के गावल "सईयां धीरे धीरे घुंघुटा उठावे लगले ना" टाईप के गाना ले ऊ जगहा मनसाएन भईल रहत रहे। हमनी के परिवार के लाईन होटल प पिताजी कबो ना जाए देस। हिन्दुस्तान पेपर में लपेटल घर के बनल पूरी आ आलू-परवल के तनी ढेरे तेल में छवंकल भुजिया आ ओह प आम के अचार, माई भा चाची निकालस लो आ सभका के खाए के दियाए। अतना नीमन लागे ऊ खाए में कि ओह खाना के आगा मय बर्गर पिज्जा फेल बा। पिताजी तले ओह लाईन होटल में ले खीर ले आवस। गाढ़ दूध के तनी तनी जर्लीयाईन स्वाद आला ऊ खीर आजो मन पड़ेला।

गाँवे पहुँचला प पीतर के परात में इनार के ठंढा पानी से गोड़ धोवाये कि बबुआ बहरा से आईल बाड़े थाकल होईहे। माई अपना ननद लोग से मिलते

www.bhojpurisahityangan.com

खुसी के मारे मय जानी रोये लागि लो त छोटी चुकी बच्चा के मन में ई ना बुझात रहे कि काहे रोवता लो। सभका खाती रहरेठा आ गोइंठा जोर के आ फुँकनी ले फूंक फूंक भौजी लो खाना बनावस लो। अगर कौनो लईका भूख के मारे रोहा रोहट करे त गरम गरम माड़ भात आ एगो अचार एके कटोरा में सान के दे दियाओ। रोटी के बेरा रहे त गरम गरम रोटी में तेल नून चभोर के गोल गोल लपेट के हाथे धरा दियाओ - ओह सधारण रोटी के आगा आजके मय "ब्रेड-रोल" फेल बा। दुपहरिया में घर के जाँत के पीसल सातू के अपना अपना पसन के हिसाब से नून में के लिबरी आ भा मीठका घेंवड़ा, इया पूछ पूछ बनइहें। सांझी खा बजार से लकठो, खीरमोहन आवत रहे आ सबके बराबर बराबर बटात रहे। बाबा एक एक चीझु के सिलेट पिंसिन से हिसाब करस। उनकर गिनती "एक" से ना सुरु होत रहे, ऊ गिनिहें "राम, दू, तीन..." राति खा मय छोट लईका आ मेहरारू कोठा प सुतो आ मर्दाना दुआर प । ठंढा-ठंढा लेवा प सुतल, चम-चम चमकत तारा गीनत, भगजोगनी देखत आ झुरु-झुरु नीमिया के गांछी के भूत पिचास के खिस्सा सुनत का जाने कब ऊहाई लाग जात रहे - ओइसन ऊहाई अब एसी आ डनलपो प ना लागे।

सैन फ्रांसिस्को नीगचाईल बा, हम हजारो मील आ सातो समुन्दर पार आपन गाँव ले घूम अईनी, अभी कतने अइसन इयाद बा जवन अदमी जहाँ जाई अपना करेजा में सटले जाई.... आछा फेन कबो!

मोछी के लड़ाई

डा. उमेशजी ओझा

जमशेदपुर झारखंड के रहे वाला डा. उमेश जी ओझा , पिछिला कई साल से भोजपुरी मे लिख रहल बानी । इँहा के सैकड़न लेख कई गो अलग अलग पत्र पत्रिका अखबार मे छपि चुकल बडुवे । पत्रकारिता मे डिप्लोमा के संगे संगे एम काम भी कईले बानी आ एह घरी जमशेदपुर मे रहि के झारखंड सरकार के सेवा दे रहल बानी ।

बात ओह घरी के ह जब अंगरेजन के शासन रहे। लोग पैदल आ हाथी घोड़ा के सवारी करत रहले । जेकरा लगे हाथी-घोड़ा होत रहे ओकर समाज में बडी इजत होत रहे आ अंगरेजन के शासन में भी बढिआ पहचान रहत रहे। मोछी के लड़ाई भी जम के होत रहे। मोछी की लड़ाई के मतलब की उनकर मान मर्यादा के लड़ाई । ई कहानी ओहि मे से एगो साँच घटना प आधारित बा। कहानी के सच्चाई के देखत एह में गाव आ पात्र के नाव बदल दिहल गईल बा। ई कहानी सिरसा आ कुन्दा गाव के अईसन परिवार के ह जेकरा में सिरसा के धर्मवीर सिंह के लगे हाथी, घोड़ा, ऊँट, मोर आदि करीब दर्जन भर जानवर रहे। जबकि कुन्दा गाँव के अजीत सिंह के लगे भी धर्मवीर सिंह से कुछ कम हाथी, मोर ना रहे। उ लोग आपन गाँव के धनी-मनी माने जाये वाला में सबसे उपर रहले लो । दुनो जाना के नाव एक दुसरा गाव में काफी दुर तकले फइलल रहे।

धर्मवीर सिह के एगो बेटा रहले। ओहु में ओह जमाना में अंग्रेजन के फउज में नोकरी लगला से उनकर मान मार्यादा अउर बढ़ गईल रहें। मतलब कि धर्मवीर सिंह के मुछ अपना कद से दु ईचं बढ गईल रहे। हरदम उ अपना मुछन प हाथ चलावत रहले कि कही उ झुक न जाय । मोछि झुके ना दिहल त एगो बहाना रहे बाकी त मोछी प हाथ फेरल अपना प्रतिष्ठा के एहसास लोगन के दिलावत रहले।

दोसरा ओरी बाबू अजीत सिंह के मोछी भी उनका से तनीको कम ना रहे। ई आपन बड़ाई के पुल अपने बांधे में माहिर रहले मजाल बा कि केहु इनका आगे टीक जाउ। इनका एगो बेटी धर्मशीला बड़ी होनहार आ खुबसुरत रहली। उनका के देखला प अईसन बुझात रहे कि सरग से कवनो परी जमीन प उतर आईल बिआ। अजीत सिंह कहत रहले कि हम अपना राजकुमारी के बिआह आपना से भी धनीमनी घर में करब, ताकि हमार बेटी रानी बनी के रहें। ई सभ सोचत आ बोलत रहले तसही उनकर सुरेमन काका तपाक से बोलले ।

" का रे अजितवा काहे अतना आपन बेटी के बिआह खातिर उतावला हो रहल बाड़े , जो ना, अगर तोरा में ताकत बा तो सिरसा के धर्मवीर सिंह के बेटा जे अंग्रेजन के फउज में बहाल भईल बा ओकरा से आपन राजकुमारी के बिआह क दे, उ ओहीजा राज करी राज । चार-चार गो हाथी, छः गो ऊँट, आ अनगिनत मोर बाड़न स उनुका लगे । धन जयदाद के त हिसाबे नईखे। "

" ह काका, उहे धर्मवीर के घरे ओकरे लईका से आपन राजकुमारी के बिआह करsब, देखीह ।"

" तब देर कांहे के उठाव बालटी लोटा चल जा सिरसा आ अबही बात क के आव।"

" ह काका, जात बानी "।

अजीत सिंह अपना बेटी के बिआह के बात करे खातिर आपन गाव के पचास आदमी के लेके धर्मवीर सिंह के गांव सिरसा चल दिहले। ओह घरी बेटी के बाप आपन बेटी के बिआह ठीक करे खातिर अपना साथे कुछ आदमी के लेके जात रहे लोग आ देखत सुनत आ अनुमान लगावत रहन कि लईका वाला उनकर कतना आदर खातिर कर सकत बा। ओह घर में उनकर बेटी राज करी की ना। एही विचार से अजीत सिंह भी आपन गांव के लोग के लेके सिरसा गाॅव धर्मवीर सिंह के लगे चल दिहले। एक दम ठेठ दुपहरिया में खाना खाये के समय प अजीत सिंह आपन फउज के साथे धर्मवीर सिंह के दुआरी प पहुच गईले। दुआरी प पहुचते धर्मवीर सिंह खुश होखत.....।

"अरे अजीत सिंह हमरा दुआर प ? आजु अचानक बिना कुछु कहले आ बतवले ई फउज लेके का मन बा हमरा घर प धावा बोले के ?"

"अरे ना धर्मवीर जी ना अईसन मत कही हम त आपन बेटी धर्मशीला के बिआह रउरा बेटा से करे खातिर आईल बानी।"

"ओ हो.....हमार बेटा के बिआह, अच्छा पहीले बईठी त ओकरा बादे नु बात होई।" धर्मवीर सिह अपना नोकरन के आवाज लगवले।

"अरे ये सुगना, शुकरा, कलुआ, जलदी दउर के आवसऽ आ देखसऽ के आईल बा . हमरा बेटा के बिआह खातिर, बाबू अजीत सिंह के फउज, जासऽ जलदी से एह लोगन के बईठे आ जलपान, ओकरा बाद खाये पिये के तेयारी करस।"

अजीत सिंह के फउज चुपचाप मुकदर्शक बनी के धर्मवीर सिंह के बात सुनत रहले कि उनकर नोकर देखत देखत में पचासों आदमी के बईठे आ आराम करे के इंतजाम के साथे जलपान भी लेके आ गईलन। थोड़ही देर बाद सभ आदमी के खाना खाये के बुलावा आ गईल। धर्मवीर सिंह, अजीत सिंह के साथे बईठ के खाना खईले आ सभ लोग के खाना खिलवले। खाना खईला के बाद अजीत सिंह के साथे आईल सभ आदमी धर्मवीर सिंह के खुब बड़ाई कईल। अब बारी रहे बिआह के बात करे के। आपन बडे-बडे मोछी प ताव देत धर्मवीर सिंह, बाबू अजीत सिंह के ओरी देखनी त अजीत सिंह भी आपन मोछी प हाथ फेरत एहसास दिलावत रही कि हमहु रउरा से कम नईखी। तबही धर्मवीर सिंह।

"ह त भाई अजीत सिंह हम त आपन बेटा सुर्यदेव सिंह के बिआह आपना से भी उॅचे घर में कईल चाहत रही, बाकी राउर बेटी के हम देखत बानी आ ओकर सुनरता के भी खुब चरचा सुनले बानी। एह से रउरा कीहा अपना बेटा के बिआह करे के मन रउरा अईला के बाद बनवनी हाॅ , बाकी डर लागत बा कि हमार जे बरतिहा रउरा कीहा जईहे उनकर रउरा आदर सागत कर भी पाईब की ना। बराती में अंगरेज अफसर भी रहिहे। "

अतना सुनला प अजीत सिंह आग बबुला हो गईले आ अपना साथे आईल लोगन के ओरी देखी के सोचे लगले कि ई धर्मवीरवा त उनकर ईज्जत के धज्जी धज्जी उड़ा रहल बा।

" ये धर्मवीर सिह जी अतना मत इठलाई साफ बोली बिआह करेके बा की ना हमार ईज्जत मत उच्छाली आजु तकले केहु हमरा से अईसन बात नईखे कईले , अपना बेटी के बिआह करे आईल बानी एह से चुप बानी ना त हम का करती हमरो पता ना रहेला। "

" अरे त, का करब रउरा गांव में जब राउरे घर ही खपड़ाफोस बा त गांव के का कही, सोचत बानी कि जब बराती में हमार हाथी, घोड़ा आ उट जईहे से त कतने घर के छपर उजाड दिहे स, देखी हमार घर, कतना बढिया आ मजबुत ईटा के बा।"

" देखी धर्मवीर सिंह जी अइसन बात मत करी साफ बोली। बरात लेके हमरा गांव में त आई हम कईसन सुआगत करीब रउरा देखत रह जाईब।"

" ठीक बा अजीत सिंह जब अतने कहत बानी त हम बरात लेके आईब बस रउरा अतने करब की हमार जे भी बराती जाई उनकर मन से सुआगत करब कवनो शिकायत ना होखे चाहिए। अगर शिकायत भईल त अपना हाथी से रउरा घर के खपड़ा नोचवा देब। "

"ठीक बा सरत मजुर बा केकरो कवनो शिकायत ना होई बाकी अतना ईयाद राखब कि हमार ढेर समान बरबाद ना होखे के चाही।"

"ठीक बा त जाई आपन बेटी के बिआह के तेयारी करी आजु के आठवा दिन हम बरात लेके रउरा दुआर प आईब।"

अजीत सिह आपन फउज लेके धर्मवीर सिह के गाॅव से आपन घरे आ गईले आ आपन बेटी के बिआह के तेयारी में लाग गईले। धर्मवीर सिंह के सरत के मुताबिक अजीत सिंह डेरा गईल रहले कि बिआह में कही कवनो कसर रह

गईल त उ पागल आदमी साचो के उनुका घर के खपड़ा हाथी से नोचवा दिही। इ सब सोची के अजीत सिंह आपन गाॅव के चारो आरी बीस फुट उचा ईट्टा के दिवाल दिलवा दिहले, ताकि धर्मवीर सिंह के हाथी के सुढ उनका छपर तक ना पहुच पाओ।

ओने धर्मवीर सिंह आपन बेटा के बिआह मे बारात जाये खातिर आपन गाॅव के आ अंगरेज के अफसर के नेवता दे दिहले।

ओह घरी बिआह होखे चाहे कवनो परोजन आदमी के खाये खातिर हाथी के कान अते-अते पुडी बनावल जात रहे। ओह पुडी के भी पचीस - पचीस जोडी खाये वाला लोग भी रहले। आजुओ उ पुडी बनेला बाकी हाथी के कान के आधा आ शहर मे त एगो गिलास के मुह के अकार के पुडी रह गइल बा। उ हाथी के कान अतहत बड पुडी सुध सरसो के तेल आ घीउ में आटा गुथी के बनावल जात रहे। ओकरा के अगर चार पाॅच दिन तक राखिओ दिही त खराब होखे वाला ना रहे आ ना ओकर सवाद। ताजा आ गरम खाई त सवाद का कहे के बा। धर्मवीर सिंह अपना गाॅव के लोगन के बरात जायेके नेवता देके सभ लोग के हिदायत देले रहले कि अबहीए से भुखल रह लोग ताकि अजीत सिंह के गाॅवे जा के बरात मे बढिया-बढिया व्यंजन के खुब सवाद लेके खा सकs लो। देखत-देखत बरात जाये के समय आ गईल।

धर्मवीर सिंह के गाॅव के बाहर बरात सजे लागल। हाथी , ऊॅट आ घोड़ा सईगो ले रहले। बरात जाये वाला के संख्या एक हजार।

"अरे जलदी कर सुरज डुबे से पहीले पहुचे के बा तबहीये नु हाथी घोड़ा के मजा मिली फेरू फेरु हमरा बेटा के बिआह थोडे ही होई।"

बारात समय से निकलल आ समय से अजीत सिंह के कुन्दा गाॅव के बाहर पहुच गईल। जब धर्मवीर सिंह आपन बराती लेके पहुचले त देखले कि अजीत सिंह उनका से तनिको कम ना उनका बराबरी के उनकर सुवागत में हाथी , धोड़ा रखले बाडे दुनो ओरी हाथी धोड़ा खाड रहे देखे में अइसन लागत रहे कि दु गो राजा जुद्ध के तेयारी में खाड़ बाडन। थोड़ही देर मे दुनो के मुकाबला शुरू भईल हाथी घोड़ा आपन-आपन करतब देखावे लगले। ई सभ करीब एक घंटा चलल। एह बीच घोडदवल मे जमीन से उडत धुरी से सभ लोग के शरीर भरी गईल आ चेहरा पहचानल दिकत होखे लागल। बारात मिलन भईल। ओकरा बाद बराती जनमासा जे गाॅव के बाहर खेत मे टेन्ट (समियाना) लगाके बनावल गईल रहे उहाॅ चली गईले। वोहिजा सभ केहु के बईठते जलपान नास्ता आ गईल। हाथी घोड़ा खातिर भी समियाना के बाहर बान्हे के आ चारा के भरपुर बेवस्था रहे। केनिओ से कवनो कमी ना लउकत रहे। ओने अजीत सिंह बाराती के संख्या देखत बोरा के बोरा चिनी आपन गाॅव के इनार में डलवा के इनार के पानी के शरबत बनवा देले रहले। ताकि सभ बराती के आसानी से पानी के जगह शरबत से सुआगत कईल जा सके। अब बारी रहे दुआर पुजा के अजीत सिह बड़ बढिआ द्वारपुजा कईले। एह में भी कवनो कमी धर्मवीर सिह के ना मिलल। धर्मवीर सिंह बरात में खाली अजीत सिंह के कमिये खोजत रहले। इहाॅ तक त ठीक ठाक रहल बाकी धर्मवीर सिंह सोचत रहले कि देखत बानी कि अजीत सिंह बरातियन के भोजन कइसे पुरा करत बाडे। बाराती भोजन प बईठले, बाराती दु-दु दिन के भुखल तीस-तीस जोडी पुडी खीच दिहले। सब बढिया से सम्पन्न हो गईल। सबरे बारात बिदाई के समय आ गईल ,बारात भी बढिया से बिदाई हो गईल। बाकी धर्मवीर सिह ई सोचीके हैरान रहले कि उ लईका वाला ठहरले आ अजीत सिंह से ढेर धन सम्पत्ति भी बा एकरा बावजूद अजीत सिंह उनकर बराबरी के कईसे हो गईले। आखिर मे उनका कवनो कमी ना मिलल त अजीत सिंह के अपना लगे बोला के कहले.....

"भाई अजीत सिंह सब त ठीक -ठाक रहल बाकी तरकारी में नीमक तनि आ सा कम रहल हा।"

"समधी जी अतना त कम रहही के चाहिए ना त हम लइकी वाला होके राउर बराबरी के ना हो जाईब।" दुनो समधी हंसत गला से मिलले। धर्मवीर सिंह आपन खुबसुरत बहू के अपना साथे लेके चली गईले। आ अजीत सिंह के बेटी आजुओ धर्मवीर सिंह के घर मे रानी बनी के सभ प हुकूम चलावत बाडी।

www.bhojpurisahityangan.com

आहि रे बालम चिरई : भाग - 1

असित कुमार मिश्र

सिकंदरपुर बलिया युपी के रहे वाला असित कुमार मिश्र जी भाषा हिन्दी आ भोजपुरी प बरिआर पकड़ रखले बानी। भोजपुरी मे ठेठ आ खांटी भोजपुरी के अपना लेखनी से परोसे के क्षमता इँहा के लेख मे देखल जा सकेला। स्वतंत्र रुप से कई गो पत्र पत्रिका अखबार मे इँहा के लेख आ चुकल बा। एह घरी इँहा के बलिया मे ही बानी।

फजीरे से दरी जाजिम लाईट आ बईठला के बेवस्था हो रहल बा। नोनिया टोली के छोट छोट लईका बीछावल दरी प पटका-पटकी करतारन स। कारिन्दा गरियाके भगा देता।

गाँव के चारों पांचों टोला में बस एकही चरचा बा काल्हु साँझ से। चंपाबाई के नाच आवता ठाकुर किरपाल सिंघ कींहे। जे पहिले चंपा के नाच देखले बा ऊ बक्का बनल बा बाकी सभ सुने वाला। का नाचे ले,लागेला कि करेजा हिलता। कमर लचका दे त लाठी चलेला, लाठी। पिछला साल चइत के दुर्गापूजा में ओकर नाच आईल रहे,हमहूँ खाड़ा होके अगिला पांति में देखत रहनीं। चंपा हमरा के देखिके मुस्की मरली। मेला भर के लोग हमसे जरे लागल, बाकिर रऊवां त पचासा पार लागतानी जी- गोबरधना टोक दिहलस। सुमेसर बाबू मने में पचास गारी दिहलन- भाक ! साला बीचे में टोकल जरुरी रहल हs । अरे पिछिला साल ले हम जवान रहनी।

पहलवान काका के अखाड़ा में दुगो पहलवान लड़sतालो। दुन्नो के हाथ एक दुसरा के गरदन में बा। पहिलका धोबियापाट लगावे के फेरा में बा। तले दुसरका कहलस-अरे सुनले हs काल्हु नाच आवता चंपा के।पहिलका तनी नरम भईल। कब ? कहवाँ ? ठाकुर किरपाल सिंघ कींहे ।पहलवान काका देखलन कि ई दुन्नो खाली गरदन में हाथ डाल के अखाड़ा के चक्कर काटतरन सs त चिल्ला के कहलन- ई भरत मिलाप करतर स का रे ! मार दांव। रघुवा, दिनुआ, कमलेसवा के आंखि निनिए नइखे।आधा राति बीति गइल बा।जब आंखि बंद करतारन स त चंपा के काल्पनिक नाच सोझा आ जाता। चोली

आ घाघरा में चंपाबाई बोलावतारी। रघुवा स्टेज पर पहुंच गईल बा।चंपा मुसुकाइ के रघुवा के कमर में हाथ डाल दे तारी। रघुवा के पेट में गुदगुदी होता... बस अब बरदास ना होई। उठि के पानी पियता। फेरु सूते के कोसिस करता। फेरु चंपा के नाच...फेरु कमर में हाथ... फेरु पानी... आधा राति बीत गईल। दीनुआ त बकायदा बियाहे कs लेले रहुवे चंपा से। बाकिर कूकुर भूंक दिहवन स त सपना टूट गउवे,ना त सोहागरातो...

ठाकुर किरपाल सिंघ इलाका के बड़का जमीनदार हवन। उनकी बड़का लईका दिनेश सिंघ के लईका सतईसा में परल बा। पंडीजी के कहनाम बा कि मूल रासि के सतईसा के लच्छन नीक ना होला। एमे बियाह बरोबर खरचा होला। दिनेश सिंघ गरह टाले खातिर केतनो खरचा क दीहन। आ साचो दिल खोलि के खरचा होतो बा। चंपाबाई के नाच क दीहल आसान बात ना ह।

फजीरे से दरी जाजिम लाईट आ बईठला के बेवस्था हो रहल बा। नोनिया टोली के छोट छोट लईका बीछावल दरी प पटका-पटकी करतारन स। कारिन्दा गरियाके भगा देता। बाकिर ऊ फेरु आइए जा तरन स। जे जहां बा ऊ ओहिजा से नाच देखला के तैयारी करता। मंगला सिंघ साधू आदमी हईं। नाच-गाना से चिढ़ेलन। बाकिर का

करसु । दयादी के मामिला बा त सबकी साथे बईठहीं के परी न । हाकिम हुक्काम के कुरसी एक ओर लगा दिहल बा । सुनाता कि इलाका के एस डी एम से लेके थाना के मुंसी ले आवता । ठकुराइन लोगिन के करेजा प सांप लोटियाता... ।

सगरो इलाका रोसनी से नहा गईल बा । पण्डाल त एतना बड़ बा जेतना ठाकुरसाहेब के दुआर । एक तरफ ठाकुर साहब लोग कुरसी पर बईठल बा । दोसरी ओर गाँव के दयाद पटिदार लोग । मंच के सामने दरी आ जाजिम बीछल बा,जेपर अगल-बगल के टोला के लोग आ के बईठल बा । गोड़ रखे के जगह नइखे अब । मंच पर जगह-जगह लाईट आ माएक लागल बा । पट्टीदारन वाला लाईन में केहू खांस उठता त केहू बात बे बात ठठा देता । मने जिला के साहबन के देखावता लोग कि देखऽ हमहूँ ठाकुर साहेब के भाईए दयाद हईं । बईठल भीड़ में से रहि रहि के एगो बसना उठता । कुछु लोग नाक बन्द क लेता । केहू कहता-कवन ह रे सरवा ! सतुआ खा के आईल बाड़सऽ का रे । आ हर बेरु कवनो छोट लईका, कई थपरा पिटाता कि ईहे ह ।

परदा उठता अब गते-गते ,देखवईयन के सांस भी ओहितरे ऊठता गीरता । एगो जोकर नीयर आदिमी आईल बा पूलिस के भेष में । बिना सीसा के चसमा लगवले बा । सबके परनाम बोलता आ कलाकारन के परिचै बतावता । सभ कलाकार ईठला ईठला के हाथ जोरिके लाईन में खाड़ा हो गईल बा लोग । सबके जेकर इन्तज़ार बा ओकर नांव सबसे बाद में बोलता-हं त साहेबान कदरदान अब आ रहल बाड़ी सबकर करेजा के हलचल, मन के सकून सुघराई के खजाना चंपाबाई !

आ सब देखता कि मंच पर नीला साड़ी पहिरले चांद उतर आईल बा । एक ओर सीटी आ थपरी के हल्ला रुकते नइखे । तले कमलेसवा रघुवा के कान में कहलस कि-ई त जर्सी गाय के दूध जइसे गोर बिया हो । चंपा तनि सिर नवाके सबसे परनाम कहली ह । ठाकुर साहेब के ठीक पीछे बईठल उपधिया जी के हाथ आसीरबाद देबे खातिर अपने आप उठ गइल बा, जइसे खाली उनहीं के परनाम भईल होखे ।

हरमुनिया से टें-पें के आवाज़ आवे लागल बा । सभ कलाकार लाईन में खाड़ा बा लोग । परारथना होई पहिले सरसतीजी के । ईहे मंच के असूल ह । सिन्टुआ मने में कहता कि-ई टोटरम से का फायदा बा । जल्दी नाच-गाना सुरु होखो... । परारथना खतम हो गइल बा-'तोहार जै जैकार करीं हम ए सरसती माई' एपर खुस होके ठाकुर साहेब बीस के नोट देले बाड़न । राधिका सिंघ भी बीसे रुपिया दींहे । दयादी के मामिला बा न ! दोनाली बन्दूक ऊहो त राखेलन । केवनो नाया नचनिया नाचतिया । शाईद एके बार में चंपा के नाच पच ना पाईत लोगन से । अगिला गाना प नाच चंपा के होई,एही सोच में तीन गो गाना बीत गइल ।ठाकुर साहेब के इसारा बूझिके अलाउंसर माएक पर कहि गइल हऽ- हं त दोस्तों, करेजा काढ़ि के अँगुरी प धर लीं सभे । काहें कि अब आवतरी .....चंपाबाई !

तले थाना प बाचल दुगो सिपाही में से एकजाना हाँफत दउरत आके दरोगा जी के कान में कुछु कहलन । उनकर थुलथुल पेट में लाल पेटी सरक के नीचे आ गइल बा ।दरोगा जी चिहुँक के कहलन कि-का बकतरे रे ! सिपाही तनी नरभस भईल ,बाकिर कहलस कि हं साहेब दस बजियवा समाचार में बीबीसी कहल स । कनफरम नियूज बा ।
दरोगा जी तुरंते उठलन । आ एस डी एम साहेब के कान में जाके अदब से बतवलन । एस डी एम साहेब भी तुरंते खाड़ा हो गईलन ।आ पूछलन कि कवन कहलसऽ? कहां से पता चलल हऽ?

दरोगा जी बतवलन कि-दस बजियवा नियूज में बोललसिहऽ । एस डी एम साहेब ठाकुर किरपाल सिंघ के इसारा से उठा के कोना में बोलवलन । ठाकुर साहेब के आवेके तनिको मन ना रहे ।कांहे कि अबले चंपा मंच पर आ गईल रहली । बाकिर जाके बेमन से पूछलन-का जी ! का बाति हऽ?

एस डी एम साहेब बतवलन कि परधान मंत्री राजीव गांधी गुजर गईनीं ।अबे बीबीसी में बोलल स । ई रास्ट्रीय सोक के बाति बा । ई कारिक्रम अभिए रोकवाईं । ठाकुर साहेब त गिरत गिरत बचलन । चट्टी-चौराहा वाला एगो-दुगो कांग्रेसी नेतन से हेल-मेल उनहूँ के रहबे कईल ।छोट-मोट भासन भी देले रहलन । माईक सोझा परते देस, आजादी, गांव-गिरांव, जोस मारे लागे । कहलन कि-ई त बड़ अनरथ भईल ।आ मंच के तरफ देखलन त चंपा मीना कुमारी के तर्ज प घुघुट काढ़ि के

www.bhojpurisahityangan.com

बईठल रहली ।शाईद मुजरा वाला कोनो गाना होखे के रहे । साज-बाज से धुन निकलल सुरु हो गइल रहे ।मन में सोचलन कि 'हाय रे भाग ! 'आ मंच की ओर बढ़ि गइलन ।

एलाउन्सर देखलस कि खुदे ठाकुर साहेब मंच की ओर आवतानीं त सोचलस कि अब भारी ईनाम मिली । आ लपक के ठाकुर साहेब के लगे पहुंच गइल ।ठाकुर साहेब कहलन कि -हट ! मंच पर जाए के बा । गंभीराह बाति बिया । एनी गीत के बोल सुरु भईल, ओनि ठाकुर साहेब माएक के सोझा खाड़ा होके बोललन-साथियों ! .... मंच पर सन्नाटा छा गइल । सब भौंचक । कि ई का जे खुद ठाकुर साहेब मंच पर आ गइनीं ।

ठाकुर साहेब आगे कहलन-देस खातिर हम भा हमार पूरा परिवार कब्बो पीछे ना रहल । देस के जब बंटवारा के बाति उठल तब्बो हम गांधी जी केचिट्ठी भेजले रहनीं । हमहूं सभा कइनीं,अन्दोलन कइनीं ।कब्बो धरईनी ना,ना तSआजु हमहूं सेनानी कहईतीं.... ।

एस डी एम साहेब इसारा कईलन कि ई भासन के बेरा नइखे । ठाकुर साहेब तनी रुकलन ।फिर कहलन-अब एसे भारी देस के अभाग ना होई ।हमनी के परधान मंत्री सिरी राजू गांधी जी के स्वर्गवास हो गइल ।अबे अबे एस डी एम साहेब से मालूम भईल ह ।अब ई कारिक्रम ना होई । देस पर संकट आ गईल, आ हम नाच-गाना करीं ? हमनी के दु मिनट के मौन धारन करब जा फेरु सब अपनी अपनी घरे चलि जाई ।

औरु अगिला भाग में...

www.bhojpurisahityangan.com

चंपारण: प्रकृति के एगो सुन्दर उपहार

प्रभंजन कुमार मिश्र

नरकटियागंज , पछिमी चम्पारन , बिहार के रहे वाला प्रभंजन कुमार मिश्र जी सी-डैक नोयडा से तकनीकी क्षेत्र मे उच्च शिक्षा ले रहल बानी। इँहा के कई गो रचना पत्र पत्रिकन में छप चुकल बाड़ी सन। कुछ पुरस्कृत भी भईल बाड़ी सन। एह घरी इँहा के नोयडा मे बानी।

प्रकृति हमनी के का नइखे देले। उ प्रकृति के देन एगो अइसन जगह बा जेकर इतिहास सारगर्भित त बड़ले बा औरी ओकर वर्तमान ओकरो से ज्यादा मनमोहक बाटे। संजोग देखीं की उ बिहार के मानचित्र के सबसे ऊपर में बिहार आ नेपाल के सिवान (सीमा) पर स्थित बा भगौलिक दृष्टिकोण से देखल जाव त पश्चिमी चंपारण जिला के जिला मुख्यालय बेतिया से 102 कि.मी. दूर ई जगह बा जेकर नाम बा "वाल्मीकि नगर"। इ छोटा क़स्बा वाल्मीकि व्याघ्र परियोजना के भीतर के एगो ग्राम पंचायत बा। ओइसे त इ संसदीय क्षेत्र के नाम 2009 के लोक सभा चुनाव में बगहा से बदल के वाल्मीकिनगर कर दिहल गइल बा। इ स्थान के इतिहास बड़ी ही बढ़िया रहल बा एहिजा महर्षि वाल्मीकि के आश्रम बा जहवा भगवान राम के दूनों बेटा लव आ कुश के जनम भइल रहे। इहे ना इ स्थान के बखान महाभारत के वनपर्व में भी बा। ओमे गण्डकी नदी के सदानीरा कह के पुकारल गइल बा। पुराण में एगो औरी कथा के बखान बा की एक बार हाथी के राजा आ ग्राह (मगरमच्छ) में युद्ध छिड़ गइल त इ युद्ध इहे से आरम्भ भईल रहे जवन कि सोनपुर के हरिहर क्षेत्र ले चलल आ ओकरा बाद भगवान विष्णु के द्वारा ग्राह के सुदर्शन चक्र से उद्धार भईल। इ क्षेत्र बिहार के अकेला व्याघ्र सुरक्षित क्षेत्र बा। इ बन सम्पदा से भरल पुरल बा आ एकरा में लकड़ी के साथे साथे औषधि से भी क्षेत्र भरल बा। इ उत्तर में नेपाल के चितवन वन्य क्षेत्र से सटल बा। एकरा में बाघ, चिता, हिरन, बारहसिंगा, भालू, जंगली सूअर, बन्दर, लंगूर, भांति-भांति के चिरई, साँप (गेहुअन, अजगर) आदि के सुरक्षित निवास स्थान हा। एकर फैलाव 899.38 वर्ग कि.मी. में बा आ एकरा में भारत के सबसे बड़का घास के मैदान बाघ ला उपजावल बा।

चली जा अब हमनी के ई जगहा पर चलल जाव। इंहा जायेला सबसे एकमात्र साधन सड़क बा। हमनी के राष्ट्रिय राजमार्ग 28**B** से जाये के पड़ी। बगहा शहर से लगभग 10 कि.मी. आगे बढ़ला पर रामपुर चेक पोस्ट आवेला जहाँ कि बड़का- बड़का साइन बोर्ड लागल बा -"मुस्कुराइए आप वाल्मीकि व्याघ्र क्षेत्र में हैं"। अब इहाँ से बिहार सरकार के वन्य क्षेत्र शुरू हो गईल बा आगे 6 कि.मी. आगे गईला पर मदनपुर गाँव के बाद अब राष्ट्रिय राजमार्ग 28**B** छोड़ के उत्तर के दिशा में घूम जाये के बा। अब इहा से शुरू हो गइल असली जंगली सफ़र... अब जंगल के बीचो बीच सुनसान पक्की सड़क से अब गाड़ी एगो बढ़िया रफ़्तार सरसरात निकलल चल जायी। ना केहू के रोक बा ना केहू के कवनो टोक बा। आ ओहिमे बीच-बीच में छोट-छोट गाँव थारू (जनजाति) लोग के। एतना बढ़िया जंगल के सफ़र बहुत कम देखे के मिलेला बीच-बीच में विचित्र-विचित्र प्रकार के जीव जंतु दिखी, कबो-कबो त बाघ आ गैंडा भी

लउकेला। पूरा 28-30 कि.मी. जंगल के रोमांचकारी सफ़र के बाद अब वाल्मीकिनगर में पहुंचब । अब इहाँ छोट-छोट होटल बा जेमे नाश्ता-खाना के खूब बढ़िया व्यवस्था बा । नाश्ता त हो गइल अब आगे चलल जाव, आगे 3RD चौक से उत्तर दिशा में त्रिवेणी नहर के पश्चिम वाला बांध पकड़ के 500 मी । बढ़ला पर आ जाई गंडक नदी पर भारत-नेपाल सरकार के सहयोग से 1965 में बनल 36 फाटक वाला बैराज, जेमे कि 18 गो फाटक भारत में आ बाकि 18 गो फाटक नेपाल में बा । इतना सुन्दर दृश्य, दूर- दूर ले खाली पानीये लउकता । उत्तर में हिमालय के गोदी में बसल शिवालिक (मदरिया) पहाड़, पूरुब में पहाड़ के सीना के चिरत गंडक नदी के धार आ ओकरा ऊपरे जंगल के हरियाली एतना मनसायन दृश्य देखे के कमे मिलेला । एहिजा पानी के ज्यादा दबाव के कारण गडगडाहट के आवाज़ आ ओकरा में से देह पर पडत पानी के हल्का हल्का फुहार मन के हिला के रख देला । रुकल पानी में बनत बड़का बड़का भंवर तनियक मन में डर त जरुर उठावेला लेकिन चारो ओरी पानी के आसमानी रंग मन के विल्कुल ही आसमानी बना देला । बैराज के दूनों ओरी से सिचाई ला नहर निकालल बा। ई नहरन पर छोटा-छोटा पनविजली केंद्र सरकार के द्वारा बैठावल बा जवन बगहा से आवे के क्रम में दिखाई देला। इ नहर त्रिवेणी नहर के नाम से जानल जाला। इ नहर आगे किशनगंज तक ले पानी ढो के ले जाला । आगे इ नाहर बहुत सारा भाग में बट गइल बा। एहिजा सिचाई विभाग द्वारा फुल के सुन्दर वाटिका आ वैराज के सञ्चालन गृह बा। बैराज के सञ्चालन तीन प्रकार से होला । पहिला कंप्यूटर से, दूसरा इलेक्ट्रिकल बटन से आ तीसरा हाथ से मजदुर द्वारा, इहे ना इ पानी के दबाव, बहत पानी के मात्रा(क्यूसेक) में सब के सब बतावेला । इ सीधे पटना से जोड़ल गइल बा आ एकर सञ्चालन पटना से भी कइल जा सकता ।

खैर, अब हमनी के आगे बढ़ल जाव । आगे बैराज के दक्खिन बांध के सहारे आगे बढ़ला पर बिहार सरकार के रेस्ट हॉउस आ गेस्ट हॉउस मिली, ओहिजा से पश्चिम में देखला पर बैराज के सुन्दरता सामने दूर दूर तक पानी ही पानी आ पूर्व में पहाड़ के करेज चिरत गंडक नदी । अगर कुछ दिन गुजारे के होखे त रेस्ट हॉउस में बुकिंग हो जाला । अब औरी आगे बढ़ल जाव, आगे बन-विभाग से आदेश लेला के बाद फेनु एक बेर जंगल में कच्ची सड़क से होत आगे लगभग 3 कि.मी. बढ़ला पर बेतिया महाराज के द्वारा बनवावल जटाशंकर शिव मंदिर मिली । इ शिव मंदिर गंडक, तमसा आ सोनभद्र नदी के संगम स्थान से मात्र 500 मी. दूर बा । इंहा माघ के नहान के दिने बड़ा भयंकर मेला लागेला, दूर- दूर से श्रद्धालु संगम पर नहाये आवेले आ एहिजा से जल भर के ले जायेले । भगवान के दर्शन के बाद अब जंगल में करीब 5 कि.मी. आगे बढ़ला पर वाल्मीकि आश्रम आई । ओइसे वाल्मीकि आश्रम त नेपाल में बा लेकिन ओहिजा जाये के एगो रास्ता भारत होके ही गुजरेला । बीच में हल्का- हल्का छिप- छिप पानी वाला दू गो नदी मिली । पहिले त तमसा आ ओकरा बाद सोनभद्र नदी । सोनभद्र नदी भारत आ नेपाल के कथित सीमा ह । पूरा के पूरा जंगल, ओकरा में भयंकर जंगली जानवर आ कच्चा रास्ता, डर के साथे रोमांच । जंगली लकड़ी में सखुआ के प्रमुखता बा । आ इ सखुआनी में निचे घना झाड़ीदार झाड़ी-झंखाड़ जामल बा ओमे नरकट प्रमुख बा । झाड़ी अतना झंखाड़ बा की ओमे आदमी खड़े-खड़े लुका जाई त बाहर से ना बुझाई । ओइसे डरे के बात नइखे जंगल में सस्त्र सीमा बल के बटालियन हमेशा गश्ती में मिली । जंगली उच्च नीच रास्ता से होके अब हमनी के वाल्मीकि आश्रम पहुँच गइल बानी जा ।

वाल्मीकि आश्रम के सम्बन्ध महर्षि वाल्मीकि से बा । वाल्मीकि आश्रम में लवकुश जन्मस्थान, खम्भा जवना में उ

www.bhojpurisahityangan.com

लोग घोडा के बनहले रहे, सीता जी के भूमि में प्रवेश के स्थान, अमर बेल, वाल्मीकि जी के हवन कुंड के स्थान सब के सब देखे के मिली। आज से 25 साल पहिले सीता जी के भूमि प्रवेश वाला जगह पर कुंड रहे जहाँ बाद में मंदिर बनवा दिहल गइल। अमर बेल 14-20 इंची के परिधि के मोट मोट बेल(लता) एगो गाछ से दूसरा गाछ पर पसरल बा एकरा बारे में कहल जाला कि इ अमर बा आ इ आज तक ले नइखे ख़राब भईल। इ जगह के प्रकृति सुन्दरता आ शोभा के शब्द में नइखे लिखल जा सकत। अब एहिजा कुटी बना के तपस्या नइखे करके, हमनी के इंहा से वापिस आवे के भी पड़ी। वापस ओही रास्ता से जवना से हमनी गइल रहनी। उहाँ से वन्य विभाग के मुख्य द्वार तक वापिस आईला के बाद मुख्य द्वार के बाये तरफ से निकलेला एगो पातर गोडीयारी रास्ता मिली। ओइसे इ रास्ता से आराम से गाड़ी चल जाई। एह रास्ता से लगभग 2 कि.मी. भीतर गईला के बाद से थारू जनजाति के कुलदेवी माँ नरदेवी में बड़ा जगता मंदिर मिली। ऊंहा के मूल निवासी के अनुसार एहिजा अन्हरिया के बाद बाघ माता के रखवारी करेल सन ओहिसे वन्य विभाग द्वारा रात में रुके के अनुमति नइखे। आश्चर्य के बात त इ बा की एह जंगल में पुरान सुखल इनार आ ढहल भीत के घर दुनु भीतरी के जंगल में मिलेला। इहा के लोग एहो बतावेला की अल्लाह-रुदल के जन्म-कर्म रहे एही वन में भइल रहे। इ जगह नरदेवी स्थान से 2 कि.मी. भीतरी जंगल में बा जहाँ पहिले एगो सुन्दर बस्ती होखत रहे। आज ओहिजा वन्य विभाग द्वारा जाये से मना बा। अब माता के दर्शन करीं आ वापिस फेनु गोल चौक होते हुए बैराज पर पहुँच जा ई। अब एकरा बाद हमनी के नेपाल जाइल जाई आ ओहिजा एगो पौराणिक कथा के प्रमाण देखल जाई। घबराई मत ज्यादा दूर नइखे जाएके मात्र 3 कि.मी.।

बैराज पर भारतीय ससस्त्र सीमा बल के द्वारा गाड़ी जाँच करवावला के बाद अब हमनी के बैराज में भरल पानी के आनंद उठावत बैराज के पुल से नेपाल में प्रवेश कर लिहल जाई। ध्यान रहे की अगर आपन गाड़ी बा त ओकर सारा कागज वास्तविक होखे के चाही छाया चित्र से काम ना चली साथे में ड्राइवरी लाइसेंस भी वास्तविक होखे के चाही। नेपाल में घुसला के बाद फेनु से नेपाल के सुरक्षा बल द्वारा जाच के प्रक्रिया होला अब हमनी के पूर्व के दिशा में बैराज के बांध पकड़ के 2 कि.मी. गईला पर एगो छोटे क़स्बा मिली जेकर नाम त्रिवेणी ह। इ क़स्बा पार करते ही हमनी एगो एइसन जगह पर पहुँचेम की हमनी अपना आँख पर विश्वास न होई। पहाड़ी के चिरत गंडक नदी आहाहा... आ ओकर एकदम साफ निर्मल पानी। एही जगह से गज-ग्राह के लड़ाई आरम्भ भइल रहे। इहा पत्थर पर हाथी के गोड जे तरे जे तरे धसल रहे ओह तरे के निशान आज भी मिल जाई। चईत -बैसाख के महिना में जब गंडक नदी के पानी कम होला तब बढ़िया से दिखाई देला। एहिजा सुन्दर सुन्दर मंदिर बा, बढ़िया फुल के बगईचा बा। एहिजा गंडक नदी के स्वरुप तनी पातर दिखी बाकि नदी के गहराई आ पानी के बहाव मन में डर जरुर ला दी। अब अगर हमनी कुछ मसाला भा चाइनीज सामान कीने के होखे त त्रिवेणी में किन सकतानी। बाजार त छोटे बा लेकिन जेतने में बा ठोस बा। अब एहिजे नइखे रहेके अब वापिस भी आवे के बा। त अब वापिस भारत में हमनी आईब जा आ 3RD चौक पर जलपान करी फेर वापिस आ जाई बेतिया।

उन्हा जायेला नजदीकी स्टेशन बगहा बा। एहिजा से हर 30 मिनिट पर वाल्मीकि नगर खातिर बस खुलेला। ओइसे बस के सुविधा बेतिया से भी बा। लेकिन सबसे बढ़िया साधन त आपन गाड़ी बा जवन भाडा पर बेतिया, बगहा आ वाल्मीकिनगर कही से भी आराम से मिल जाई। एहिजा बिहार सरकार के छोट हवाई पट्टी भी बा जवना पर छोटाका चार्टर प्लेन उतरेला। लेकिन इ सेवा खाली नेता आ मंत्री लोग ला हीं उपलब्ध बा। आशा कर तानी की रउआ सभे के हमार इ यात्रा वृतांत पसंद आइल होई।

दिल,
जब बच्चा था जी (भाग-2)

बृजकिशोर तिवारी

पलामू झारखंड के रहे वाला बृजकिशोर तिवारी जी एह समय शक्तिनगर सोनभद्र मे कार्यरत बानी। भोजपुरी मे हास्य व्यंग्य के रचना इँहा के एगो अलग आ उंच पहचान बनावेला। आखर पेज से जुड़ल बृजकिशोर जी भोजपुरी मे लगातार रचना कई रहल बानी भोजपुरी मे लिख रहल बानी।

अब ले रउरा पढ़नी - आपन सहपाठी के छत पे खेलत खेलत कथाकार के लघुशंका बुझाईल आ उ बारिस के पानी के निकास के पाइप में फारिग भयिलें। बाकी जेकरा उ बारिस के पानी के निकार के पाइप बुझ्लें असल में उ चुल्हा के चिमनी रहे आ चुल्हा पे दूध चढल रहे। कथाकार के जैम के कूटम्मस भईल। अब आगे :

भईल समस्या ! अब उ दूध के का होखो ? उ दूध त पहिले रखाइल अंगना मे, लुलुवा के घरे के लोग उ दुधवा के खूब निहार निहार के देखे जईसे उ दुधवा में कौनो गोजर चलत होखे। बड़ा देर ले लोग मसौदा बनवलस, लेकिन उ त उहे होखे के रहे, जवन नियत रहे ! मन में बहुत बड़ बोझ लेके आखिर उ बिशुद्ध समुंद्री दूध, समुनदर के रस्ता तय करे के पहिला सफ़र अंगना के नाली में समाहित भईली। लमहर खिस्सा तs अब नु भईल !

दिन के समय,पानी ओह घरी आवे ना। पांच किलो दूध लुलुवा के घरे ले किलोमीटर तक नाली के सफ़ेद कs दिहलस।अब लागल ताँता, लुलुवा के घरे। का बात बा, दूध नाली में काहें बहावल जाता ? अब का बतावल जा ये भाई लोग ! अब त, घर के बात,चट्टी-बाज़ार में आ गईल !

अब त हम जवन ना फेमस भईनी कि रउवा सभे अंदाजा ना लगा सकेनी ! जे भी अपना परिवार आ केहू संघे घुम, हमरा देन अँगुरी उठा देओ आ कहे - इहे ह, इहे ह ! इहे रहल ह आ जाने का का ? लेकिन ओकर नतीजा बड़ा शानदार रहल। सभे आपन घर के धुंवा दान चेक कईलस। जेकरा इन्हा गुन्जाईस रहे, तुरत फुरत में धुंआदान ऊँचा करावल गईल। कम से कम चार फुट ऊँचा त करायी दिहल लोग ! आ मने मन थाह भी लेत रहे कि हेतना ऊँच रही त दुर्घटना के संभावना कम बा, आ अब केहु सीढ़ी लेके त आई ना। पाईप के दुकान वाला हमरा देख के मुस्की काटे। मने मन कहे-वाह रे ! पंडी जी, तू त हमार बिक्रिया चमका देला। हमरा ऊपर अघोषित करफू लाग गईल। केहू अपना घरे में घुसे ना देओ,मत पूछी... एकदम अछूत हो गईनी।

आ अब बड़ भईनी त कबो-कबो लागेला कि इहे हमार करतूत के वजह से कुछ चीजन के अविष्कार भी भईल होखी। हो सकेला इ कुल सुनला के बाद वैज्ञानिक लोग धुँआ रहित चूल्हा खातिर सोचले होखिहे ! ना रही धुँआ ,आ ना अईसन इतिहास फेरु से दोहरावल जाई , आ ओही के बाद "हीटर" ,"मट्टी तेल वाला स्टोप", आ फिर बाद में "गैस चूल्हा" खातिर दिमाग में बात आईल होखी।आ ई कुल्ही के खोज हो गईल | हो भी सकेला (आखिर सब अविष्कार के पीछे कौनो ना कौनो घटना जुडल रहेला)

कह , कवन पुरूख संग यारी

निलय उपाध्याय

आरा , बिहार के रहे वाला निलय जी , हिन्दी आ भोजपुरी साहित्य मे उत्कृष्ट रचना कईले बानी । इँहा के लिखल हिन्दी नाटकन के मंचन भी होला । कई गो भोजपुरी सिनेमा आ हिन्दी धारावाहिक के स्क्रिप्ट भी लिखले बानी । हाले फिलहाल इँहा के गंगा यात्रा (गंगोत्री से गंगासागर तक) भी कईनी ह । भोजपुरी भाषा आ साहित्य मे बहुते गुढ़ आ पोढ़ जानकारी इँहा के जरी बा । सम्प्रति मुम्बई में बानी ।

जब परब के विभाजन भईल त रक्षा बन्धन पंडिजी लोग के मिलल । दशहरा क्षत्रिय लोग के दीपावली वैश्य के होली शूद्र लोगन के मिलल। बाकि इ परब अतना रंगदार निकलल कि मय विभाजन के तुरि तारि के छिन्न-भिन्न कई के दबंग बन गइल।

एह दबंगई में सबसे बड़हन योगदान गीतन के बा ।

एगो गीत देखी। बन ठन के रामजी आ लछुमन जी साथे अपना ससुराल गईल बाड़े। साली भोभ-नाके ध लेली स।

हंसि हंसि पूछे जनक पुर नारी
एक बात ऐसी सुनी , लागत अचरज भारी
मातु कौशल्या खीर खाई के जनमाए सुत चारो

अब का कहब ए रामजी ! का कवनो गलत बात बा कि नकार देब। के नईखे जानत कि दसरथ के बुढापा में कईसे चार जना जनमले। सीताजी बोलले रहिती त राम जी जबाब देते बाकि इ त साली लोग पूछले बा। कायदा से जबाब लक्षमन के देबे के बा। दिमाग काम नईखे करत। बेईज्जती हो रहल बा, आ खिसिआए के नईखे, महतारी कह के भेजले बाड़ी । राम जी नोह से माटी कोड के बताव-तारे आ लछुमन जी के बुझाईल कि कुर्सी पर से कूद जईहे। देख हंस लोग। हम ठहाका लगाईला।सूपवा हंसे त हंसे चलनिया मत हंसे जेकरा मे 734 गो छेद बा । साली लोग कहल कि एह तरे ना।लक्ष्मण के जबाब सुनी।

यह सुन बिहसि लखन बोले बतिया,सुनहु सखि सुकुमारी
बल ते बने नहीं राजा जनक को, हर से निकारे कुमारी

एकरे के कहल जाला, अब ना बनल अउरी बनल। आपन घाव ना लउकऽल आ दोसरा के फुसरी लउकऽता। अब सहेली लोग सोचे लागल। सोच ना रे, इ त बडा कुकाठ जबाब दे देलस लछुमानवा। तहरा का पता बा, उ करियाठा राम इशारा कईले रहे। नया सवाल मिल गईल सखी लोग के। सांवर होखे में रहस्य बा। सखी मरली उ बम जेकरा से बाचल नामुमकिन बा -

गोरे अवधपति नृप दशरथ जू गोरी कौशिल्या नारी
कारे भए कईसे राम लला, कह कवन पुरूख संग यारी

अब त ममिला गंभिरा गईल। हईसे भला लईकी के बोले के चाहि। कह कवन पुरूख संग यारी। आ बात सांच । इ त शक्ति वान बा। लाग गईल । शेष नाग भगवान भीतरे फुफुकारे लगले। इ त सीधा महतारी पर कलंक लाग गईल... राम जी भी ...पितपिता गईले । रामजी कुछ कहस ओकरा पहिले लछुमन के खीस तरकुल पर रहे।

छोटी छबीली रसीली बडी हो, तुम सब अबहि कुमारी
जानति ही रस बातन कईसे,कह कवन पुरूख संग यारी

गीत में राम आपन मर्यादा नईखन छोडत ऐह से लागता कि इ तुलसी दास के गीत ह ।

www.bhojpurisahityangan.com

का कहीं अब त कहलो ना जाये

डा. एस के सिंह

बलिया, युपी के रहे वाला डा. एस के सिंह जी एह घरी बनारस मे असिस्टेंट कमिश्नर बानी ।भोजपुरी आ हिंदी साहित्य में समान दखल राखेनी । भोजपुरी भाषा प लगातार लिख रहल बानी ।आखर पेज प इँहा के लिखल कई गो विवेचनात्मक लेख , भोजपुरी कविता आ चुकल बा ।

कविता गजल लिखेनी , एह समय इँहा के कलकत्ता मे कार्यरत बानी ।

का कहीं अब त कहलो ना जाये,
कहला बिनु रहलो ना जाये।
बांह गहे के आतुर हउवें,
बांहवां उनकर गहलो ना जाये।

सुखवा-दुखवा छटकत बाटे,
देखि हा सुबिधा बिछहलो ना जाये।
पईसा पाके दऊरत बारन,
हमरा से अबहीं टहलो ना जाये।

इनरा के पानी गंदा कईके,
कुइयां उनसे उरहलो ना जाये।
हाथी डूबलन घोरा डूबलन,
आज के पानी थहलो ना जाये।

खत्तम उनकर अँखिया के पानी,
लाज के मारे दहलो ना जाये।
मुट्ठी उनकर अइसन चिक्कन,
रूपिया पईसा रूपहलो ना जाये।

रास्ता ताकत अँखिया पाथर,
उनकर बाट अब जोहलो ना जाये।
खेतवा के घसवा जंगल भईलस,
झंखर ई सब सोहलो ना जाये।

चाम के देहवा बज्जर भइलस,
अंगुरी से अब खोबहलो ना जाये।
कब्जा उनकर कागज उनकर,
महला अटारी दुमहलो ना जाये।

मऊगत बाटे जिनगी के आछा,
सांसवा के बोझा सहलो ना जाये।

www.bhojpurisahityangan.com

आ गइल बसंत

सरदी, ठिठुरन, शीतलहरी के जइसहीं भईल अंत।
झुमत, गावत, हंसत - हँसावत आ गइल बसंत।

मोजर धइलस आम पर,गमके लागल फुलवारी।
खेत सजल सरसों के,जईसे कवनो राजकुमारी।

झरे लागल पतई पुरनका, फूटे लागल नया कपोल।
साँझ सबेरे सुने के मिले, कोइलर के मीठे बोल।

जब बहे बयरिया पुरवईया, फसल खेत लहराय।
देख के सफल मेहनत आपन,खेतिहर खूब अगराय।

जईसे साधना सफल भइला पर खुश होखस संत।
झुमत, गावत, हंसत हँसावत आ गइल बसंत॥

चूमे माथा धरती के उगते किरिनिया भोर में।
चादर हरियाली के पसरल गँउआ के चारू ओर में।

रतिया त लागे सुहावन, निमन लागे धुप भी।
हल्का ठंडी, हल्के गर्मी, बदलल मौसम के रूप भी।

खटिया में गुटीयाइल बुढ़ऊ, खड़ा भईलन तन के।
एह रंग-गुलाल के मौसम में, चिरई चहकेले मन के।

पंख लगा के ईच्छा सबकर, उड़े चलल अनंत।
झुमत, गावत, हंसत हँसावत आ गइल बसंत॥

नुरैन अंसारी

गोपालगंज , बिहार के रहे वाला नुरैन अंसारी जी , भोजपुरी आ हिन्दी मे लगातार गजल आ कविता के सिरजना कई रहल बानी। आखर प शुरु से ही नुरैन जी के लिखल भोजपुरी कविता आ गजल पोस्ट हो रहल बा। इँहा के एह घरी दिल्ली मे बानी।

इयार हो

तहार एक-एक बात हमरा इयाद बा इयार हो-

तब, दिन हमार पातर रहे,

कवनो खुसी हमरा खातिर बाँतर रहे

हँसल रहे पाप, मुसकाईल गुनाह

आ बे खदी बदी के

सब के रहे हमरा से डाह

त लोग जरे, तुहूँ करs वार हो

तहार एक-एक घात हमरा इयाद बा इयार हो

तहार एक-एक बात हमरा इयाद बा इयार हो।

तब, ना जाने काहे रह-रह के मन घबड़ा जाय,

जिया डेरा जाय।

रहल ना गईल,

तहरा से कहनीं आपन बात आ तू उडवलs

हमार खिल्ली

हमरा पीआसल करेज पर राख देले रहs तू अंगार हो

तहार एक-एक सौगात हमरा इयाद बा इयार हो।

तहार एक-एक बात हमरा इयाद बा इयार हो।

तब, एक दिन तहार एगो सूई भूला गईल रहे हमरा से

हमरा लागल रहे बड़ा शरम

बाकिर तू छोडल ना

कईए देले रह बेभरम

आ ले लेले रह ओह सूई के डाँड़ हो,

तहार एक-एक काँत हमरा इयाद बा इयार हो

तहार एक-एक बात हमरा इयाद बा इयार हो।

अब, भगवान मत करस तहरो पर अईसन दिन आ जाव,

बरसात में आफत लाग जाव,

रात भर देवाल के ठीक टीक पर पानी भभको

आ भँस जाव तहार देवाल भिनसार के पहिले,

थऊस जाव तहार घर त घबड़ईह मत,

हमार घर बा नूँ!

ई ना होई हमार तहरा पर कवनो उपकार हो

एसे कि इयार हो

आपन एक-एक बरसात हमरा इयाद बा इयार हो,

बरसात के एक-एक कँपसल रात हमरा इयाद बा इयार हो

आ ओह पर तहार एक-एक बात हमरा इयाद बा इयार हो।

तहार एक-एक बात हमरा इयाद बा इयार हो

अशोक शेरपुरी

छपरा, बिहार के अशोक कुमार सिंह जी , साहित्य जगत मे अशोक शिवपुरी के नाव से जानल जानी । भोजपुरी फिल्म बिहुला के गीतकार , भोजपुरी गीतन मे यथार्थवाद के बेजोड़ आ बरिआर रुप देखवले बानी । इँहा के लिखल कई गो कविता , विश्वविद्यालयन के पाठ्यक्रम मे

आजी

(सरनामी भोजपुरी मे लिखाईल गीत)

अंटावल बा एगो देंहि
कुरसी के नरम तकिया प
लागे है तू बइठल
बाकी रोके बा तोहके लकड़ी
दूनों बगल, पीठी सम्हारे गीरे त
खाली आगे

बाटे तो हार आजी रे आजी
इ हालत में तोहके
पहचान ना पाइला
अउर जानिला
हमे तू भी ना

परलोक सिधारे
बरिसन तो होइगे
पूछे है तब्बो के
आजा ना आइल
बोली - ना आजी
उ थक्कल सुस्ता है
आज पहुँच ना परल
पातर झूर होंठ से
मुसकईले तू जबरन
सुन के जईसे दुख ना भईल
लास होइगे फिनो मन तोहार
जाने कईसन लोक मे
कउंची के लालच रोके बा तोंहके
छोरे खात सांस काहे रुकल बा
जिनगी
फंसल ह मौत के जाल में आसा
रह गईले बन के तू कईसन तमासा

मूंह से चुवत थूक के सनेसा
देखत ना बने आउर इ दुर्दसा
कुरसी के लांकी से घस्कल जब
हाथ
त घंटन तू तहरा से सोझा ना होवे
हई

छूटगे है देंही से हाथ के नाता
रहे करत अब दुसरे क सहारा

कबले जियाये तू अपन बेईज्जती
केकर आसा सहे इ दुःख
आये के कई दफे लौट के चलगे
अंस चुवाई के सरनाम (सूरीनाम)
के पहुना
सुहाई के मूडी जोर के हाथ

देखे तू सब के ताके ना कौनो के
बिच्चे में रह के तू साथे ना बाटे
अब ना जुटे हर हफ्ता पलवार
नेवता दुआरी ना देखे तोहार
तब्बो तोर ऐसन सप्राय के आजी
के कोई न बोली तू कहूं ना जा हई
नजर कंवारी पे ऐसन टिकैले
के ली के बारात अब्बे आजा पधारी

राज मोहन

उत्रेच , नीदरलैंड के रहे वाला राज मोहन जी सरीनामी भोजपुरी के वर्तमान समय के बहुत बड़हन प्रभावशाली आ ख्यातिप्रसिद्ध गायक हई , नया धुन तकनीकी आ अंदाज मे 200 बरिस पहिले पलायन के दर्द के इँहा के अपना गीतन के माध्यम से आवाज दे के एगो बहुत उंच स्थान प भोजपुरी के ले के गईल बानी। कनाडा अमेरिका भारत आ अउरी कई गो देसन मे आपन प्रस्तुति दे चुकल बानी , एह घरी नीदरलैंड (हालैंड) मे बानी

www.bhojpurisahityangan.com

भिखारी

तारकेश्वर राय (लेखक)

मुन्ना पांडे (प्रेषक)

गोपालगंज बिहार के रहे वाला मुन्ना कुमार पांडे जी , भोजपुरी भाषा खास कई के भिखारी ठाकुर प बरिआर शोध कईले बानी , इँहा के रिसर्च के विषय ही भिखारी ठाकुर जी रहनी । भोजपुरी नाटक आ भिखारी ठाकुर के नाटकन प गहिराह लेख लिखले बानी । हिन्दी आ भोजपुरी मे इँहा के लगातार लिख रहल बानी । एह घरी असिटेंट प्रोफेसर के रुप मे दिल्ली मे कार्यरत बानी ।

तारकेश्वर राय जी अंजोर पत्रिका के अप्रैल जुलाई 1976 के अंक के पृष्ठ 17 पर एगो कविता भिखारी ठाकुर जी के ऊपर लिखले रहलीं । इ ऐतिहासिक महत्व के कविता के हमनी सभन के आँखि के सोझा राखल जरुरी बा। इ दरअसल भिखारी ठाकुर के मउवत से पांच बरिस बाद ' भिखारी' शीर्षक से लिखल गईल रहे।

गौरी गणेश पद, बोली में भरल मद
गावत बानी गीत में बनाई के भिखारी के।
गाँव के कगरिया में,सड़क बघरिया में
चलत डगरिया में गीत बा भिखारी के।
चमकत चमचम,गमकत गमगम
मह मह महकत सगरो भिखारी के।
खेतवा किसनवा में,जंतवा पिसनवा में
बंसुरी के तानवाँ में सुनी ने भिखारी के।
गंगा के लहरिया में,गाँव आ सहरिया में
घर घर हर हर बहत बा भिखारी के ।
बिदेसी निरमोहिया के, बनी के बटोहिया जे
पथल$पर लोहिया घुमल बा भिखारी के।
बेटिया बियोगवा के,रोगवा समुझिकर
छतिया जरत बा भिखारी के।
बिधवा बिलाप,उदबास के आलाप सुनी
दुखवा से मुखवा मलिन बा भिखारी के।
गंगा असनान आ दहार के बहार लिखी
गोरवा के तोरवा खींचत बा भिखारी के।

ननदी भउजिया के खोज बाटे कुंजिया से,
गलवा में तुलसी के मलवा भिखारी के।
गोखुला नगरिया में,नन्द कचहरिया में
ओरहन रगरिया मचल बा भिखारी के।
भाई के बिरोध के करत अनुरोध रोज,
लाश न मिलत बा तलाश से भिखारी के।
गबर-घिचोर के अंजोर,पुत्र बध बाटे
बिरहा बहार में अलाप बा भिखारी के।
कीरतन के भालावा भालावा समान देखीं,
नशवा के दशवा उतारल बा भिखारी के।
दोहा चौपाई छंद,पल ना परत मंद,
बोल-चौबोला के बोललबा भिखारी के।
गीत वो कवित नित,लोग के करत हित
पूरबी के खुरपी बनावल बा भिखारी के।
हरवा से रसवा चुअत नवो दसवा में,

अजित कुमार तिवारी

महाराजगंज बिहार के रहे वाला अजीत कुमार तिवारी जी , शुरु से ही आखर से जुड़ल बानी आ लगातार भोजपुरी मे गहिराह आ भावात्मक रचना लेख लिख रहल बानी। एह घरी अजीत जी दिल्ली मे रहत बानी।

जिनगी

मुड़ी पर लदले सउंसे खईचा

दिनभर घूमे बाग-बगईचा,

सुखल-पाकल पतई बटोरे

तन पर लुगरी फाटल अंगौछा।

अमवारी के आम ललचावे ,

भूख, दुख मे आऊर सतावे

पेट मरोरे देख के सिरफल

काम ना डगरे कुंडी बतावे।

रात के भुखल, भोरहु सुखल

देह से लक़लक़, करेज के टुटल,

भार से भरीत जे पेट छछाईल

बुतल गोसार के खपड़ी फुटल।

बिधना के बिधान अलबेला,

खूंट मे बा ना एकहू धेला,

बाज़ार के बनिया बाजरा जोखत,

लिखत उधारी तन तिकवेला।

www.bhojpurisahityangan.com

राउर बात

एतना बढ़िया कलेवर त हिंदी भा अंग्रेजी के कवनो साहित्यिक पत्रिका के नईखे। मटेरिअलो एकदम धांसू बा। बहुत बढ़िया काम। जे भी मेहनत कईले बा प्रशंसा के पात्र बा। कोशिश होखे जे रेलवे प्लेटफार्म पर ई मिल जाऊ। गोरखपुर से लेके समस्तीपुर तक में कवनो प्लेटफार्म पर भोजपुरी पत्रिका ना भेंटालिसन। एही तरे लिखात आ छपात रहो। बधाई।

● विंध्य मिश्रा, तेजपुर असम

बहुत निक बा... पढनी हा, भोजपुरी के विकास खातिर बहुत जरूरी रहे के एगो आपन पत्रिका होखे। कोटि कोटि धन्यवाद रही संपादक मंडल के।

● विनोद मिश्र

हम भोजपुरी भाषी नही है लेकिन आप लोगो का प्रयास पत्रिका कि डिजाईन और रंग मनमोहक है खुबसुरत है , उम्मीद करते है कंटेंट भी बेहतरीन होगा

● सेंथिल, दुबई

एगो निम्मन आ क्रांतिकारी सुरुवात आ भोजपुरी के सम्मानित विस्तार खाति एगो अगिला डेग.....!

● आदित्य दुबे, गोरखपुर,उ.प्र.

आखर प्रस्तुत करे वाला संपादक जी से निवेदन बा कि एहमें अईसन शब्द या कवनो अईसन फोटो ना डालब जेह से आपन भोजपुरीया समाज बदनाम होखे। धन्यवाद !

● नरेंदर पांडे, फरीदाबाद, हरियाणा

संपादक जी आखर भर ठेहुन बधाई !
सांच के आंच का। बड़ निमन काम भईल भाई लोग । शशि बबुआ बड़े बढियां समाचार देलs। आखर के सभी भाई बंधू के यथायोग प्रणाम आशिर्बाद। भोजपुरी मैं लिखे हमार मन बहुत करत रहेला, कुछ लिखले भी बानी आउर लिखब भी। आभार बा रवा सभी के

● अरविन्द कुमार पाठक, नागदा, उज्जैन

आज मातृभासा दिवस पर आपन मातृभासा भोजपुरी के बढियां पत्रिका के लिंक www.aakhar.com शेअर कर रहल बानी। भोजपुरी पढ़ीं। भोजपुरी बोलीं।

● नीतू चंद्रा , फिल्म अभिनेत्री , पटना , बिहार

जुग जुग ले जीयत रहो "आखर "। इ सब ईश्वरीय प्रेरणा से हो रहल बा, "आखर" के द्वारा परमात्मा के एह पुनित काम खातिर पुरा टीम के हमार बधाई आ शुभकामना बा। जय भोजपुरी, जय माई भाखा... जय जय हो।

● बिपीन बहार , मुम्बई

भगवान से इहे प्रार्थना बा की एह पत्रिका के विस्तार दिन दून रात चौगुना होखे। जय हो पूरा भोजपुरिया समाज के

● अतुल मिश्रा , छपरा , बिहार

सुस्वागतम्....पूरा टीम के अनघा बधाई आ आभार। जे हतना सुघ्घर परिकल्पना के भरपूर मेहनत आ प्रयास से सार्थक रुप में परोसल लोग । "जय भोजपुरी- जिहीं भोजपुरी"

● मनोज दुबे , दिल्ली

गजब , एकदम गरदा लागत बा जी। माने हमरा त अंदाजो ना रहल ह कि फेसबुक प रावा सब जुटि के हतना हड़ाह काम कई देब। गजब ! बेजोड़ लागत बा। हम गांवे कई लोगन के देखवनी ह। गजब उत्साहित बा लोग। प्रिंट वाला पत्रिका के इंतेजार बा।

● अशोक कुमार, बलिया

नीमन ! आखर भोजपुरी के बेहतरीन पत्रिका बनो एकर शुभकामना बा। हर भोजपुरिया साहित्य के अतृप्त मन के तृप्ति प्रदान करता इ पत्रिका।

● शब्द प्रकाश, जर्सी सिटी, अमेरिका

निहोरा

भोजपुरी साहित्य खाति एगो डेग हमनी के बढ़ल, अब एगो डेग रउआ भी हमनी के साथे बढ़ायीं इहे निहोरा बा | कविता, गीत, कहानी, व्यंग्य, इतिहास, विज्ञान जईसन विषय पे भोजपुरी में लिखीं | आखर नवका साहित्यकार लोगन के एक मंच दे रहल बा | आपन रचना के हमनी तक पहुँचायीं, राउर बात सुने आ पढ़े खातिर भोजपुरिया समाज आँख बिछवले बा |

अगिला अंक (अप्रैल) में महेंदर मिसिर जी, बाबू कुंअर सिंह (पुण्यतिथि-२३ अप्रैल) , सतुआन (१४ अप्रैल), बिहार दिवस, वैशाख के महीना जईसन विषय पे रउरा सभे आपन रचना (कविता,गीत, कहानी, व्यंग्य, लेख) जरुर भेजीं |

रचना भेजे के कुछ जरुरी नियम -

- आपन मौलिक रचना युनिकोड फॉन्ट/कृतिदेव फॉन्ट में टाइप करके भेजीं |
- रचना भेजे से पहिले कम से कम एक बार अपने से प्रूफ रीडिंग जरुर कर लीं | कौमा, हलंत, पूर्णविराम पे विशेष ध्यान दीं | रचना में डॉट के जगहा सिर्फ पूर्णविराम राखीं |
- ध्यान रहे राउर रचना में कवनो असंसदीय आ अश्लील भाषा भा उदाहरण ना होखे |
- राउर रचना के स्वीकृति के सूचना मेल भा मैसेज से दियाई |
- रचना के साथे आपन पासपोर्ट साइज के फोटो आ आपन परिचय (नाम, पता, कार्य आ आपन प्रकाशित किताबन के बारे में यदि होखे त) जरुर भेजीं |
- रचना भेजे के पता बा-

  aakharbhojpuri@gmail.com
- पत्रिका खातिर राउर हाथ के खींचल फोटोग्राफ, राउर बनावल रेखाचित्र, कार्टून जे विभिन्न विषय के अनुरूप होखे, उहो भेजीं |
- छोट-छोट लईकन के कलाकारी के भी प्रोत्साहित करे खातिर स्थान दियाई | ओहनी के लिखल रचना भा चित्र भेजीं |

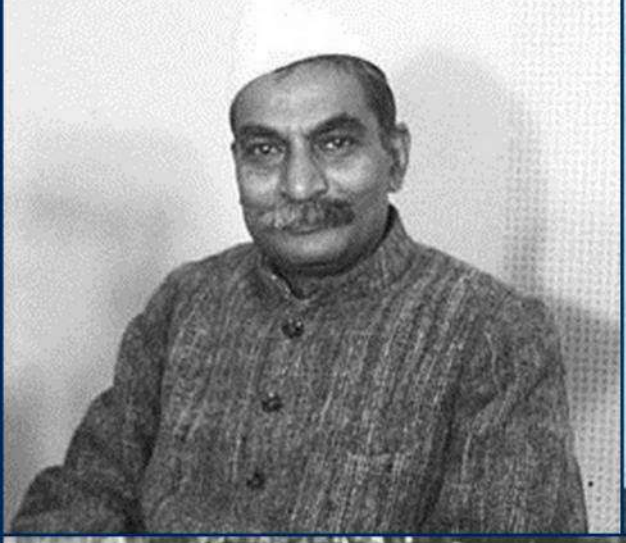
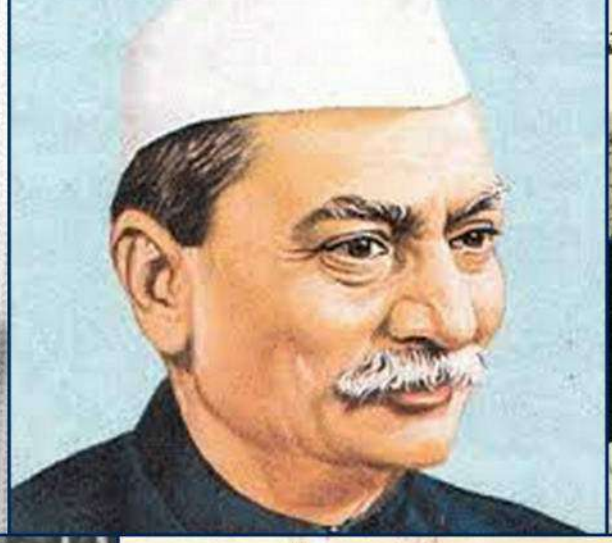
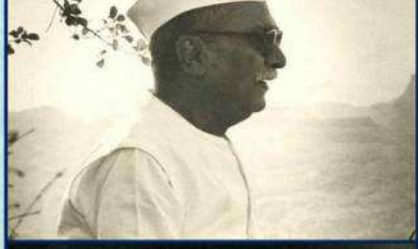

आखर